शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

सत्र–1

प्रयोजनमूलक हिंदी और कविताएँ

सत्र–2

प्रयोजनमूलक हिंदी और कहानियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2024-25 से)

बी. ए. भाग–1 हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
बी. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ :

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-48427-00-7

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी–
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. (डॉ.) श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परसराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–1 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 1 के छात्र प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 1 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

	सत्र 1	**सत्र** 2
★ **डॉ. प्रकाश मुंज** हिंदी अधिविभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर	**1**	**1**
★ **डॉ. प्रवीणकुमार चौगुले** श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्टस अॅण्ड सायन्स, वुड हाऊस रोड, राजनेमी कॅम्पस, सांगली	**2**	**-**
★ **प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी सहदेव** श्री विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठवडगाव, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	**-**	**2**

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी सहदेव
श्री विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठवडगाव,
ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) सातापा सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली,
जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र–1 प्रयोजनमूलक हिंदी और कविताएँ	
1.	विज्ञापन लेखन	1
2.	कविताएँ	14
	सत्र–2 प्रयोजनमूलक हिंदी और कहानियाँ	
1.	साक्षात्कार लेखन	59
2.	कहानियाँ	71

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई –1
विज्ञापन लेखन

अनुक्रम –

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने पर आप –

1. विज्ञापन का स्वरूप एवं महत्त्व से परिचित होंगे।
2. विज्ञापन के प्रकार एवं उद्देश्य से अवगत होंगे।
3. विज्ञापन लेखन की कला का ज्ञान होगा।
4. विज्ञापन लेखन के माध्यम से सृजनशीलता विकसित होगी।
5. विज्ञापन के विविध क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान की अनुसूची में 22 भाषाएँ सम्मिलित हैं। इन भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली तथा समझने वाली भाषा हिन्दी है। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, कानून और न्यायालय, उच्चस्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियों के लिए भी हिन्दी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं। व्यावहारिक क्षेत्रों में अलग–अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। ऐसे में यदि महाविद्यालयों से हिंदी पढ़कर निकलने वाली एक ऐसी पीढी हो, जिसमें प्रयोजनमूलक हिंदी के जरिए रोजगार के अवसर पा सकेंगे।

अतः इस इकाई में हम विज्ञापन के स्वरूप एवं महत्त्व, उद्देश्य के बारे में जानकारी देंगे। विज्ञापन तैयार करने की प्रक्रिया, उसके प्रचार–प्रसार की विधियों से रू–ब–रू कराएंगे। साथ ही विज्ञापन के महत्त्व एवं रोजगारों के अवसरों की जानकारी दी जाएगी।

1.3 विषय विवेचन

प्रयोजनमूलक शब्द हिंदी की उन विशेषताओं से जुडा है, जो हिंदी में किसी विशिष्ट प्रयोजन, उद्देश्य या पूर्ति के लिए उपयोगी साबित होता है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी प्रयोजनमूलक हिंदी है। प्रयोजनमूलक हिंदी के जनक आन्ध्र प्रदेश के भाषाविशेषज्ञ मोटूरि

सत्यनारायण हैं। उन्होंने प्रयोजनमूलक हिंदी का समर्थन किय़ा। प्रयोजनमूलक हिंदी को अन्य विद्वानों द्वारा निम्नलिखित नाम दिए गए हैं- कामकाजी हिंदी, व्यावहारिक हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, हिंदी कार्मिकी, फंक्शनल हिंदी। प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप हैं- वाणिज्य व्यापार संबंधी हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, तकनीकी हिंदी, समाजशास्त्रीय हिंदी, साहित्यिक हिंदी, प्रशासनिक हिंदी और जनसंचार माध्यम के लिए प्रयुक्त हिंदी आदि।

प्रयोजनमूलक हिंदी में विज्ञापन लेखन का महत्त्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। विज्ञापन का क्षेत्र पूरी तरह से व्यावसायिक है। उसका कार्य तथा उपयोगिता व्यावसायिक लाभ से ही संबंधित है। विज्ञापन के विषय अथवा उत्पादित वस्तुओं के गुण तथा उसकी प्रस्तुति के आधार पर उसकी आन्तरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं के अनुरूप भाषा की जरुरत होती है। भारत में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हिंदी है। इस अर्थ में विज्ञापन के माध्यम के रूप में देश में सबसे महत्त्वपूर्ण भाषा हिन्दी है। आज हिन्दी विज्ञापन की आवश्यकता के अनुरूप ग्रहण कर रही है। विज्ञापन के अनुसार हिन्दी भाषा में नित-नये प्रयोग हो रहे है। इस कारण हिंदी का अच्छा ज्ञान और आकर्षक विज्ञापन तैयार करने वालों कर्मियों की मांग विज्ञापन एजेंसियाँ, जनसंचार माध्यमों और निजी संस्थाओं में बढ़ती जा रही है।

1.3.1 विज्ञापन का स्वरूप एवं महत्त्व

विज्ञापन लेखन एक ऐसी कला है जिसमें आप विभिन्न माध्यमों के माध्यम से विज्ञापन बनाने का काम करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य आपके उत्पाद या सेवाओं का प्रचार करना है ताकि आप अधिक ग्राहकों को प्राप्त कर सकें और अपने व्यापार को बढ़ावा दे सकें।

1.3.1.1 विज्ञापन का स्वरूप :

विज्ञापन का इतिहास प्राचीन रोम और ग्रीस से आता है। विज्ञापन का प्रयोग वस्तुओं और सेवा के लिए किया जाता था। ये संकेत उन वस्तुओं के प्रतीक चित्रण करते थे, जिन्हें विज्ञापित किया जाता था। शुरू शुरू में घंटियाँ बजाते हुए टोपियाँ पहनकर या रंग-बिरंगे कपडे पहनकर कई लोगों द्वारा गलियों-गलियों में चिल्लाकर विज्ञापन किए जाते थे। इन लोगों द्वारा निर्माता कंपनियों को अपनी वस्तुओं के बिक्री में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिला। समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन का आविष्कार हुआ। इसी के विज्ञापन ने अपना साम्राज्य फैलाना शुरू कर दिया। नगरों, सडकों के किनारे, चौराहों और गलियों के सिरों पर विज्ञापन लटकने लगे। समय के साथ बदलते हुए सिनेमा के पट और अब इंटरनेट और सोशल मीडिया भी विज्ञापन के माध्यम बन गए हैं। लोगों पर इसका सीधा प्रभाव पडने लगा है।

'विज्ञापन' का शाब्दिक अर्थ सार्वजनिक सूचना या ध्यानाकर्षण से है। अंग्रेजी में इसे 'Advertising' (एडवर्टाइजिंग) कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Advertere शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है ''ध्यान या मन को (एक ओर) मोड़ना''। हिंदी में 'विज्ञापन' शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' से मिलकर बना है। 'वि' का आभिप्राय 'विशिष्ट' तथा 'ज्ञापन' का आभिप्राय सूचना से है। अर्थात् विज्ञापन का अर्थ 'विशिष्ट

सूचना' से है। आज विज्ञापन ने बहुआयामी और बहुपक्षीय स्वरूप प्राप्त कर लिया है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने अपने तरीके से विज्ञापन को पारिभाषित करने का प्रयास किया है।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार- किसी वस्तु के विक्रय अथवा किसी सेवा के प्रसार हेतु मूल्य चुकाकर की गई घोषणा ही विज्ञापन है।

बृहत हिन्दी कोशः 'विज्ञापन' के पर्यायवाची के रूप में समझना, सूचना देना, इश्तहार, निवेदन करना आदि शब्द दिए गए है।

विलियम वेलबेकर : विज्ञापन सूचनाएँ प्रचारित करने का वह साधन है जो कि किसी व्यापारिक केन्द्र अथवा संस्था द्वारा भुगतान प्राप्त तथा हस्ताक्षरित होता है और इस संभावना को विकसित करने की इच्छा रखता है कि जिनके पास यह सूचना पहुँचेगी वे विज्ञापनदाता की इच्छानुसार सोचेंगे अथवा व्यवहार करेंगे।

अमेरिकन मार्केटिंग एसोसिएशन द्वारा दी गई विज्ञापन की परिभाषा इस प्रकार है: ''किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा विचारों, वस्तुओं अथवा सेवाओं की अभिव्यक्त प्रस्तुति जिसको लिए शुल्क दिया गया है विज्ञापन कहलाता है।'' इसी को हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं - ''विज्ञापन, एक प्रायोजक द्वारा उपभोक्ता अथवा श्रोताओं को शुल्क देकर प्रभावित करने के लिए प्रसार माध्यमों के उपयोग को कहते हैं।''

इन सभी परिभाषाओं के निचोड़ के रूप में निष्कर्ष स्वरूप विज्ञापन को इस तरह व्याख्यायित किया जा सकता है कि विज्ञापन एक कला है। विज्ञापन व्यापार की आत्मा है। विज्ञापन विक्रय कला का एक भुगतानपरक, नियंत्रित और निर्धारित अवैयक्तिक संचार है जिसमें उपभोक्ता या लक्षित जनसमूह को दृष्टि में रखकर मौखिक, लिखित तथा दृश्यात्मक सूचनाओं द्वारा विज्ञापनदाताओं के पक्ष में जन सहमति और जनस्वीकृति का आधार तैयार किया जाता है।

इस तरह विज्ञापन की शुरूआत इसलिए हुई क्योंकि किसी के पास बेचने को कुछ था और कोई उस खास सामान को खरीदना चाहता था। सामान को बेचने और सौदा पक्का करने के लिए दुकानदार और खरीददार को एक मंच पर लाने का कोई तरीका खोजना जरूरी है। इसके लिए दोनों के बीच किसी तरह का संवाद होना आवश्यक है और इसी संवाद को बढ़ावा देने की प्रक्रिया को विज्ञापन कहा जाता है।

1.3.1.2 विज्ञापन का महत्त्व

आज तकनीकी विकास ने पूरे विश्व के लोगों को एक-दूसरे के नजदीक ला दिया है। दूरियों का कोई मतलब नहीं रह गया है। इन सब कारणों ने मनुष्य को और अधिक महत्वाकांक्षी बना दिया है। वर्तमान समय के बाजार प्रधान समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति का बोलबाला बढ़ रहा है। ऐसे में उपभोक्ता, समाज और उत्पादन के बीच संबंध स्थापित करने का कार्य विज्ञापन कर रहा है। उत्पादक के लाभ से उपभोक्ता की इच्छाओं की पूर्ति तथा उत्पादित वस्तु के उपयोग का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य विज्ञापन को पहचान प्रदान करता है। ऐसे में विज्ञापन का महत्त्व सर्वसिद्ध है। विज्ञापन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए ब्रिटेन के पूर्व

प्रधानमंत्री विलियम ग्लेडस्टोन ने कभी कहा था – व्यवसाय में विज्ञापन का वही महत्त्व है जो उद्योगक्षेत्र में बाष्पशक्ति के आविष्कार का। विस्टन चर्चिल ने इसकी आर्थिक उपयोगिता के महत्त्व को प्रतिपालित करते हुए कहा था – टकसाल के अतिरिक्त कोई भी बिना विज्ञापन के मुद्रा का उत्पादन नहीं कर सकता।

अ) वस्तु या सेवा की जानकारी

विज्ञापन के माध्यम से बहुसंख्य लोगों तक वस्तु या सेवा का नाम एवं उपयोगिता को पहुंचाने का काम किया जाता है। विज्ञापन वास्तव में सेल्समैन का स्थान तो नहीं लेता, हाँ उसकी इस काम में मदद करता है। विज्ञापन से ग्राहक को वस्तु की उपयोगिता तथा लाभ के विषय में पहले ही जानकारी हो जाती है।

ब) उत्पादक–विक्रेता–उपभोक्ता को लाभ

विज्ञापन से केवल उत्पादक और उपभोक्ता को ही लाभ नहीं होता बल्कि उसे बेचने वाले दुकानदार अर्थात विक्रेता को भी लाभ प्राप्त होता है। विज्ञापन विक्रेता का काम इतना आसान कर देता है कि उसे नयी वस्तु के बारे में उपभोक्ताओं को बार–बार बताने को कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। सच्चाई तो यह है कि विज्ञापन वस्तु के साथ ही साथ वह कहाँ–कहाँ उपलब्ध है, इसकी जानकारी मुहैया कराता है। अतः विज्ञापन से उत्पादक, उपभोक्ता तथा विक्रेता को भी लाभ मिलता है।

क) जीवनस्तर को ऊँचा करने में सहायक

समाज कल्याण संबंधी प्रतिष्ठानों के विज्ञापनों का एक मात्र ध्येय जनता में विवेकशीलता उत्पन्न करना, उनके जीवनस्तर को ऊँचा करना, बौद्धिक तथा अध्यात्मिक विकास करना आदि रहा है। मुख्यतः विज्ञापन एक मार्ग लक्ष्य उत्पाद के संदर्भ में विश्वास पैदा करना, उन्हें लेने के लिए मजबूर करना, उपभोक्ताओं के दिलों दिमाग पर छाप छोड़ना आदि से उपभोक्ता वस्तुओं की खरीदी कर सके। सर्व शिक्षा आभियान, नारी सशक्तिकरण आदि विज्ञापनों द्वारा लोग शिक्षा एवं नारी के विकास को अच्छे ढंग से समझ सकें हैं।

ड) मनोरंजन

विज्ञापन की रंग योजना, महिलाओं के भड़कीले चित्र, शब्द योजना, अश्लील चित्रों का प्रयोग, आकर्षक शैली इससे उपभोक्ताओं का मनोरंजन भी होता है। फिल्मों के प्रचार–प्रसार में विज्ञापन का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

इ) राष्ट्रहित

उत्पादन के प्रति लोगों को जागरूक बनाकर विज्ञापन देश की अर्थ व्यवस्था के विकास में विशेष सहयोग प्रदान करता है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों, अन्तरराष्ट्रीय समझौतों आदि को पारदर्शी रूप में प्रस्तुत कर विज्ञापनों ने पूरे वैश्विक परिदृश्य के हित का कार्य किया है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक मुद्दों के विज्ञापनों के द्वारा किसी भी देश के विचारों उसकी संस्कृति तथा विकासात्मक स्थिति को प्रस्तुत कर उनके कल्याणकारी कार्यो को जनता के बीच ले जाने का काम विज्ञापन ही करता है। अतः दिनों दिन हर क्षेत्रों में विज्ञापन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है।

1.3.2 विज्ञापन के अंग

विज्ञापन एवं प्रचार, दृश्य अथवा मौखिक संदेश के माध्यम से उत्पाद या सेवाएं खरीदने के लिए आम व्यक्ति को सूचना देने अथवा प्रभावित करने के साधन हैं। किसी उत्पाद अथवा सेवा का विज्ञापन, संभावित विक्रेता या ग्राहकों के मस्तिष्क में जागरूकता लाने के लिए किया जाता है। ग्राहकों की मांगों और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए विज्ञापन तैयार किए जाते हैं। लक्षित दर्शकों और बाजारों का ध्यान खींचने के लिए विज्ञापन उपयुक्त पात्रों, विषयों, उपकरणों, नारों, चुने हुए भूखंडों और अन्य तत्त्वों का उपयोग करते हैं। विज्ञापन के संदेश का स्वरूप कैसा भी हो, अर्थात् दृश्य, श्रव्य अथवा लिखित, वे सभी जनसमूह को लक्षित होते हैं। वे व्यक्तिगत विक्री के ठीक विपरीत होते हैं, जिसमें विक्रेता आमने-सामने होकर अपने ग्राहक/उपभोक्ता से बात करता है। विज्ञापन के प्रमुख अंग निम्नांकित हैं-

अ) संदेश : विज्ञापन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग संदेश हैं- स्पष्ट, संक्षिप्त और आकर्षक। इसमें कॉल टू एक्शन होना चाहिए ताकि यह ग्राहकों को वस्तु खरीदने का कारण दे सके। विज्ञापन के संदेश को विकसित करने के लिए चार चरणीय मार्केटिंग प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है। इसमें दर्शकों का ध्यान आकर्षण, उनकी रूचि को विकसित करना, उनकी इच्छाओं को प्रबल करना जिससे वे वस्तुओं को खरीदें व आखिर में क्रियान्वयन कर सके। अंग्रेजी में इसे एआईडीए (अटेन्शन, इंटरेस्ट, डिजायर, एक्शन) कहा जाता है। विज्ञापन निर्माण की प्रविधि में वस्तु का चित्र, उसकी जानकारी देकर दिल को छुनेवाले शब्द और आकर्षक डिजाइन सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है।

ब) चित्र : चित्र एक कला है जिसके अन्तर्गत पेंटिंग, स्केच और किसी भी कला का चित्रण आता हैं। चित्र बहुत कुछ बोलता है। लिखित भाषा की अपेक्षा वास्तविकता के निकट होता है। इसी कारण विज्ञापन में चित्र का होना अनिवार्य है। एक चित्र प्रभावशाली कारक है, जो किसी विज्ञापन को अधिक प्रभावी बनाता है। चित्र विज्ञापन को अधिक विश्वसनीय बनाने में मदद् करते हैं। यह चित्र उत्पाद वस्तु का या उत्पाद करनेवाले कंपनी का हो सकता है।

क) प्रभाची शीर्षक : शब्दों का ऐसा समूह जो ग्राहकों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए प्रयोग किया जाता है। एक प्रभावी शीर्षक विज्ञापन चित्र के लिए बेहद जरूरी होता है, ताकि ग्राहक तुरंत विज्ञापन की ओर आकर्षित हो सके। शीर्षक में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख होना चाहिए। शीर्षक विशिष्ट एवं संगत होना चाहिए। इसका विज्ञापन के अन्य तत्त्वों के साथ समन्वय होना चाहिए। शीर्षक का पाठकों पर तत्काल प्रभाव पडता है।

ड) शब्द-रचना : विज्ञापन लिखते समय उत्पाद तथा उपभोक्ता दोनों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। विज्ञापन किस वर्ग के लिए बनाया जा रहा है, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है। विज्ञापन लिखते समय कम शब्दों में अधिक बात कहनी चाहिए। विज्ञापन की भाषा सरल, संक्षिप्त और बोधगम्य होनी चाहिए। बात को सीधे-सीधे इस रूप में कहा जाए कि सुनने या पढ़ने वाले की समझ में आसानी से आ जाए। प्रिंट

और इलैक्ट्रॉनिक – सभी माध्यमों में अधिक विस्तार का अवकाश नहीं होता। कहीं स्थान की सीमा होती है तो कहीं समय की। विज्ञापन की भाषा शैली और विषय वस्तु एकदम सरल होनी चाहिए। जो कि सरल व सहज रूप से उपभोक्ता को समझ में आ सके। सेल धमाका, खुशखबरी, खुल गया जैसे लुभावने शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

इ) डिजाइन (प्रारूप) : विज्ञापन में रचनात्मकता आवश्यक है, जिसमें एक उत्पाद को एक सुंदर, मोहक और आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करना शामिल है। इसमें वस्तु का चित्र या प्रतिकात्मक चित्र, शीर्षक, उपशीर्षक, चार्ट, मानचित्र, बॉर्डर और अन्य तत्त्वों को एक अच्छी तरह से डिज़ाइन होनी चाहिए। इसमें आकार, टैगलाइन भी शामिल हैं। सुनिश्चित करें कि आपके पास अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए विज्ञापन हैं जो अलग दिखते हैं, और उनमें आपका पता या संपर्क विवरण, आपका लोगो और कोई भी महत्त्वपूर्ण प्रेरक संदेश शामिल है। उनके पास कॉल टू एक्शन भी होना चाहिए जिससे यह स्पष्ट हो कि लोगों को आगे क्या करना चाहिए ('अभी कॉल करें', 'ड्रॉप इन' आदि)।

1.3.3 विज्ञापन के उद्देश्य

विज्ञापन के प्रमुख तीन कार्य महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसमें उत्पाद या वस्तु के बारे में सूचित करना, उसी उत्पाद या वस्तु की व्यापक एवं संक्षिप्त में जानकारी देना, ग्राहकों को वस्तु लेने के लिए बाध्य करने हेतु आकर्षक डिजाइन करना होता है। विज्ञापन मूर्त वस्तुओं (अर्थात् साबुन, वाशिंग पाउडर, टूथपेस्ट, म्यूजिक सिस्टम, रंगीन टी.वी. आदि) अथवा अमूर्त वस्तुओं यानि सेवाओं (जैसे-बैंकिंग, बीमा, पर्यटन, सलाहकार सेवाओं, होटल आदि) अथवा विचारों (जैसे-कारों में पेट्रोल की खपत कम करने आदि) में से किसी एक लक्ष्य से संबद्ध होगा। व्यावसायिक अर्थों में इसका संबंध विज्ञापनकर्ता के अभीष्ट उद्देश्य से है।

उत्पादित वस्तुओं की जानकारी देना

देश में सूक्ष्म एवं बडे-बडे उद्योगों के माध्यम से नयी-नयी वस्तुओं का उत्पादन होता है। इन उत्पादों की जानकारी ग्राहकों तक पहुंचाने का काम विज्ञापन करता है। विज्ञापन का मूल उद्देश्य संभावित ग्राहकों को उत्पाद के बारे सूचित करना है। यह उत्पाद की विशेषताओं, अनुप्रयोगों, लागतों, लाभों, निर्माता के नाम और उपयोग दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इससे उत्पादित कंपनी अथवा विशिष्ट ब्रांड के नाम का पता चलता है। विज्ञापन से ग्राहक को नए वस्तुओं के बारे में पता चलता है। उसके सामने वस्तु खरीदने के लिए विकल्प बनता है। विज्ञापन उपभोक्ता में उत्पादित नई वस्तु के प्रति रुचि पैदा करता है। अतः विज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य संभावित ग्राहकों को नई अवधारणाओं के लिए राजी करना और आकर्षित करना है जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं की बिक्री हो सकती है।

अ) वस्तुओं के उपयोगिता की जानकारी देना

विज्ञापन के माध्यम से नयी वस्तुओं की उपयोगिता एवं गुणों की जानकारी दी जाती है जिससे उपभोक्ताओं का ध्यान उस वस्तु के इस्तेमाल की ओर केन्द्रित होता है। इस तरह उपभोक्ता के पास एक जैसी

वस्तुओं की तुलना, उनके मूल्यों का अन्तर आदि का विकल्प विज्ञापन के माध्यम से उपलब्ध होता है और वह अपनी सुविधा से अपने उपयोग की वस्तु का चयन कर उसे खरीदता है।

ब) उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि करना

विज्ञापन का प्रधान उद्देश्य उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि करना होता हैं। इससे उत्पादन में वृद्धि होती है। अर्थशास्त्र कहता है कि वस्तुओं की मांग बढ़ने पर उसकी लागत में कमी होती है तथा वस्तुएँ कम कीमत में मिलने लगती है। इसलिए कहा जाता है कि विज्ञापन से वस्तुओं की बिक्री बढ़ती है। कंपनी, संस्था, संगठनों और प्रबन्धकों का मूल उद्देश्य उत्पाद वस्तुओं की बिक्री बढाना ही होता है। परिणामत: बिक्री बढ़ने से उत्पादित कंपनियों को अधिक मुनाफा मिलता है।

क) बाजार का निर्माण करना

विज्ञापन बाजार का निर्माण करता है। आज हम देखते है कि कल तक जहाँ पहुँचना दुर्गम माना जाता था; वहाँ भी लोगों की भीड़ पहुँच गई है। लोग अपने रहने के स्थान पर ही बाजार बनाते रहे हैं। पहले लोग किसी विशेष दिन समय निकालकर बाजार जाते थे, अब बाजार स्वयं उनके पास आ गया है। यह सब विज्ञापन के कारण ही संभव हो पाया है।

अतः विज्ञापन का उद्देश्य उपभोक्ता को किसी उत्पाद के बारे में सभी जानकारी देकर उत्पादों, सेवाओं और अवधारणाओं को बढ़ावा देना है।

1.3.4 विज्ञापन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

आर्थिक उदारीकरण तथा बदल रही सामाजिक प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप विज्ञापन तथा प्रचार उद्योग ने तीव्र गति से विकास किया है। विज्ञापन एवं प्रचार जन-संचार का एक माध्यम है। विज्ञापन एवं प्रचार वास्तव में प्रभावी संचार के माध्यम में एक ब्रांड निर्माण प्रक्रिया तथा अनिवार्यतः एक सेवा उद्योग है। यह मांग करने, विपणन प्रणाली को बढ़ावा देने एवं आर्थिक प्रगति को उन्नत करने में सहायता करता है। इस तरह विज्ञापन एवं प्रचार विपणन का आधार बनाते हैं। विज्ञापन एवं प्रचार आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धी विश्व में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विज्ञापन मे करियर अवसरों में विज्ञापन तथा प्रचार एजेंसियों, निजी अथवा सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के विज्ञापन विभाग, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के विज्ञापन अनुभागों, रेडियो तथा दूरदर्शन के व्यावसायिक अनुभाग, बाजार अनुसंधान संगठनों आदि में कार्य-अवसर शामिल हैं, कोई भी व्यक्ति फ्रीलांसिंग भी कर सकता है। विज्ञापन उद्योग विद्यार्थियों के लिए रोजग़ार के अवसरों का खजाना है। इस क्षेत्र में आने के उत्सुक विद्यार्थियों के लिए रोजग़ार के आकर्षक विकल्पों की भरमार है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

अ) विज्ञापनदाता : सभी प्रमुख विज्ञापनदाता जैसे विनिर्माता, वितरण, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां या सरकारी विज्ञापन विभागों में रोजग़ार के अवसर उपलब्ध हैं। विज्ञापन प्रबंधक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी

या विपणन निदेशक या प्रभागीय प्रमुख के प्रति उत्तरदायी होता है। विज्ञापन एजेंसियों या मीडिया से संपर्क की जिम्मेदारी विज्ञापन प्रबंधक की ही होती है। वह प्रचार अभियान की योजना बनाने और मीडिया नियोजन में भी हिस्सा लेता है और विज्ञापन एजेंसी के लेखा कार्यपालक को आवश्यक निर्देश देता है। जहाँ वह विज्ञापन तैयार करने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की खरीद में शामिल रहता है वहीं बिक्री बढ़ाने और विपणन संबंधी गतिविधियों में उसकी भूमिका रहती है। प्रेस के साथ संबंध बनाने और जन संपर्क की जिम्मेदारी भी उसके कंधों पर रहती है। विज्ञापन के बजट की राशि का फैसला भी विज्ञापन प्रबंधक को करना होता है।

ब) विज्ञापन एजेंसियाँ : विज्ञापन एजेंसी विशेषज्ञों की ऐसी टीम है जिसका गठन मीडिया में ग्राहकों के लिए विज्ञापन अभियान की योजना बनाने, विज्ञापन तैयार करने और अभियान चलाने के लिए किया जाता है। भारत में कई बड़ी विज्ञापन कंपनियां कार्य कर रही हैं जैसे ओगिल्वी एंड माथर्स, जेडब्ल्यूटी हिन्दुस्तान थॉम्प्सन एसोसिएट्स, मुद्रा कम्यूनिकेशन्स, रिडिफ्यूजन, डीवाईएंडआर, मैक कैन एरिक्सन, प्रेसमैन एडवर्टाइजिंग, एफसीबी–उल्का, आरके स्वामी बीबीडीओ, त्रिकाया ग्रे, चित्रा लियो बर्नेट आदि। कुछ विज्ञापन एजेंसियां वैश्विक स्तर पर काम करती हैं और कई देशों में उनका कारोबार फैला हुआ है।

क) कॉपीराइटर : कॉपीराइटर या शब्दशिल्पी वे लोग हैं जो विज्ञापन के लिए शब्दों का चयन करते हैं। वे विज्ञापन की 'कॉपी' यानी लिखित विज्ञापन तैयार करते हैं जो किसी नारे के रूप में या मुद्रित विज्ञापन/पर्चे में लिखित विज्ञापन, रेडियो जिंगल में बोले जाने वाले शब्दों या टेलीविजन विज्ञापन की स्क्रिप्ट के रूप में हो सकता है। अगर आप में रचनाशीलता और कल्पनाशीलता है और उत्कृष्ट स्तर की लेखनक्षमता है तो कॉपीराइटर का व्यवसाय आपके लिए बेहतरीन रहेगा। इस तरह कॉपी राइटर अपने लेखन कौशल का उपयोग विज्ञापन के संदेश के प्रचार–प्रसार में करते हैं ताकि लोगों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हो। सफल विज्ञापन अभियान चलाने के लिए कॉपीराइटर के पास कारोबारी सूझबूझ और विज्ञापन एजेंसी के कामकाज के बारे में अच्छी समझ होना जरूरी है।

ड) बाजार अनुसंधान : प्रत्येक अच्छी विज्ञापन योजना अनुसंधान के साथ प्रारंभ होती है। यह ऐसा विभाग है, जो बाजार का सर्वेक्षण करता है, उत्पाद अथवा सेवा के बारे में उपभोक्ता आचरण का विश्लेषण करता है। किसी विज्ञापन एजेंसी में अनुसंधान व्यक्ति उपभोक्ता, बाजार तथा वर्तमान प्रतिस्पर्धा आदि के बारे में डाटा–सूचना एकत्र करते हैं। अनुसंधान अध्ययन, नए उत्पाद की योजना बनाने के लिए विनिर्माता को बुनियादी जानकारी देते हैं। यदि आप डिग्रीधारी हैं तो विज्ञापन एवं प्रचार उद्योग में बाजार अनुसंधान कार्य में जा सकते हैं।

इ) विजुअलाइजर : विजुअलाइजर वह कलाकार है जो कॉपीराइटर के लिखे शब्दों को डिजाइन के जरिए कागज पर उतारता है। ललित कला/वाणिज्यिक कला, ग्राफिक डिजाइनिंग, एनीमेशन में दक्ष विद्यार्थी इस क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं।

ई) क्रिएटिव डायरेक्टर : क्रिएटिव डायरेक्टर कॉपीराइटिंग और डिजाइनिंग के कार्य में तालमेल रखता है। वे किसी विज्ञापन एजेंसी के वरिष्ठ पेशेवर कर्मी होते हैं।

उ) मीडिया प्लानर : वह विज्ञापन के बजट का आबंटन करता है। विज्ञापन अभियान के लिए उपयुक्त माध्यम का चयन भी उसकी जिम्मेदारी है। वही इस बात का फैसला करता है कि कोई विज्ञापन कितनी बार प्रदर्शित होगा, कहां पर लगेगा और उसका आकार क्या होगा। वह पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापन के छपने की तारीखों के बारे में भी फैसला करता है। विज्ञापन के छप जाने के बाद उसे विज्ञापन की मुद्रित प्रतियां प्राप्त होती हैं। मीडिया प्लानर को अपने कार्य में मीडिया रिसर्च से बड़ी मदद मिलती है जिसे वह स्वयं करता है या फिर किसी बाहरी एजेंसी से करवाता है।

अतः विज्ञापन/प्रचार में करियर अत्यधिक आकर्षक है और प्रतिदिन खुल रही एजेंसियों के साथ-साथ चुनौतीपूर्ण भी है। चाहे कोई ब्रांड, कंपनी, प्रसिद्ध हस्ती या स्वयं सेवी अथवा धार्मिक संगठन हो, ये सभी अपने लक्षित श्रोताओं/ग्राहकों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए किसी न किसी विज्ञापन अथवा प्रचार माध्यम का उपयोग करते हैं। विज्ञापन तथा प्रचार क्षेत्र में वेतन-ढांचा अत्यधिक ऊंचा है। यदि आप इसमें दक्ष हैं तो आप शिखर पर पहुंच सकते हैं। यह ऐसे किसी सर्जनशील व्यक्ति के लिए एक आदर्श व्यवसाय है जो कार्य-दबाव सहन करने में सक्षम हों।

निष्कर्षः विज्ञापन क्षेत्र में सफल करियर बनाने के लिए सर्जनशीलता तथा लेखन के प्रति रुचि अथवा विचारों को दृश्य रूप में परिवर्तित करने की क्षमता आदि जैसे मूल गुण होना अपेक्षित है। ऐसे इच्छुक व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक पहलू में व्यक्ति की रुचि की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसमें टीम में मिलकर कार्य करने की क्षमता हो और अत्यधिक तनाव एवं आलोचना के समय सहनशील बने रहने के लिए मानसिक तथा शारीरिक रूप से सक्षम होना चाहिए। वह मिलन-सार तथा शांत-चित्त हो। बाजार तथा मीडिया अनुसंधानकर्ता विश्लेषक एवं तार्किक मस्तिष्क वाला होना चाहिए। रचनात्मक क्षेत्र से जुडे. व्यक्ति जनता के मस्तिष्क तथा हृदय को छूने वाले विज्ञापन बनाने की कलात्मक क्षमता रखते हों।

1.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.4.1 बहुविकल्पी प्रश्न।

1. 'विज्ञापन' का शाब्दिक अर्थ क्या है।

   अ) सार्वजनिक सूचना ब) ध्यानाकर्षण क) निवेदन करना ड) यह सभी

2. 'विज्ञापन' को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है।

   अ) एडवर्टाइजिंग ब) टान्सलेटिंग क) इडिटिंग ड) सरक्यूलर

3. वस्तु की उपयोगिता तथा उसके गुणों की जानकारी देने का कार्य कौन करता है।

   अ) विज्ञापन ब) अनुवाद क) विधा ड) किताब

4. विज्ञापन का सबसे तेजी से बढ़ने वाला माध्यम है।

अ) टेलीविज़न ब) रेडियो क) इंटरनेट ड) समाचार पत्र

5. निम्नलिखित में कौन-सी विज्ञापन की एक विशेषता नहीं है?

अ) भुगतान परक गतिविधि ब) निश्चित प्रायोजक

क) दृश्यमान अथवा मौखिक ड) व्यक्तिगत

6. निम्नलिखित में से विज्ञापन के माध्यम कौनसे हैं?

अ) दृश्य ब) श्रव्य क) दृश्य-श्रव्य ड) यह सभी

1.4.2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. विज्ञापन .... की आत्मा है।

अ) व्यापार ब) पुस्तक क) कम्प्यूटर ड) इनमें से कोई नहीं

2. उत्पादित वस्तुओं की जानकारी ग्राहकों तक पहुंचाने का काम .... करता है।

अ) विज्ञापन ब) समाचार क) आलेख ड) अनुवाद

3. वस्तुओं की बिक्री में .... लाने का काम विज्ञापन करता है।

अ) बढोत्तरी ब) कटौती क) घटौती ड) अवरोह

4. विज्ञापन का मूल उद्देश्य .... है।

अ) जानकारी देना ब) समझाना क) याद दिलाना ड) उपर्युक्त सभी

5. विज्ञापन की भाषा सरल, संक्षिप्त और .... होनी चाहिए।

अ) क्लिष्ट ब) बोधगम्य क) द्वि-अर्थी ड) पारिभाषिक

6. लिखित भाषा की अपेक्षा वास्तविकता के निकट .... होता है।

अ) शीर्षक ब) टैगलाइन क) चित्र ड) प्रारूप

1.5 शब्दार्थ

एआईडीए (अटेन्शन, इंटरेस्ट, डिजायर, एक्शन) - चार चरणीय मार्केटिंग प्रक्रिया जो विज्ञापन के संदेश को विकसित करने में उपयोगी होती है- दर्शकों का ध्यान आकर्षण, उनकी रूचि को विकसित करना, उनकी इच्छाओं को प्रबल करना जिससे वे वस्तुओं को खरीदें व आखिर में क्रियान्वयन।

बैनर- प्रमुख हैडलाइन, जो पृष्ठ के सबसे ऊपर होता है।

बॉक्स– मुद्रित आयातकार, जिसमें टाइप सेट सामग्री हो या कोई इलस्ट्रेशन हो।

ब्राण्ड– कोई ग्राफिक चिह्न या ट्रेडमार्क या दोनों का मिश्रण जो एक वस्तु या सेवा को दूसरी वस्तुओं या सेवाओं से अलग बनाता हो।

कैंपेन– सामान्यतः इसे विज्ञापन में उपयोग किया जाता है, यह एक या एक से अधिक मीडिया पर विज्ञापनों की श्रृंखला को दर्शाता है। किसी कैंपेन को चलाने से पहले बाजार का विश्लेषण व मीडिया की स्थिति आदि को योजनाबद्ध कर सही रणनीति निर्माण हेतु निर्णय लिया जाता है। विज्ञापन में ज्यादा संख्या में विज्ञापन जो एक ही विषय पर लंबे समय के लिए बनाए जाते हैं।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.4.1 बहुविकल्पी प्रश्न - प्रश्न 1 ड) यह सभी, प्रश्न 2 अ) एडवर्टाइजिंग, प्रश्न 3. विज्ञापन, प्रश्न 4 क) इंटरनेट प्रश्न 5 ड) व्यक्तिगत प्रश्न ६ ड) यह सभी

1.4.2 रिक्त स्थानों की पूर्ति - प्रश्न 1 अ) व्यापार, प्रश्न 2 अ) विज्ञापन, प्रश्न 3 अ) बढोत्तरी, प्रश्न 4 ड) उपर्युक्त सभी, प्रश्न 5 ब) बोधगम्य, प्रश्न 6 क) चित्र

1.7 सारांश

- विज्ञापन का शाब्दिक अर्थ सार्वजनिक सूचना या ध्यानाकर्षण। अंग्रेजी में इसे Advertising (एडवर्टाइजिंग) कहते हैं। हिंदी में 'विज्ञापन' शब्द में 'वि' का आशय 'विशिष्ट' तथा 'ज्ञापन' का अर्थ सूचना से है।
- सामान को बेचने और सौदा पक्का करने के लिए दुकानदार और खरीददार को एक मंच पर लाने, दोनों के बीच संवाद को बढ़ावा देने की प्रक्रिया को विज्ञापन कहा जाता है।
- दृश्य अथवा मौखिक संदेश के माध्यम से उत्पाद या सेवाएं खरीदने के लिए आम व्यक्ति को सूचना देने अथवा प्रभावित करने का साधन विज्ञापन है।
- बड़े पैमाने पर दर्शकों तक जल्दी पहुंचने के लिए विज्ञापन एक लागत प्रभावी तरीका है और यह लक्षित दर्शकों के बीच ब्रांड जागरूकता बढाने में मदद कर सकता है।
- विज्ञापन में विभिन्न मीडिया जैसे टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, बिलबोर्ड और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर विज्ञापन बनाना और रखना शामिल है।
- इन विज्ञापनों को उत्पाद की विशिष्ट विशेषताओं और लाभों को प्रदर्शित करने की एक ब्रांड छवि बनाने और दर्शकों के बीज रूचि और जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए डिजाइन किया जा सकता है।
- अन्य प्रचार मिश्रण तत्वों की तुलना में, विज्ञापन अपेक्षाकृत सस्ता हो सकता है। विशेषकर अगर कंपनी ऑनलाइन विज्ञापन या सोशल मीडिया विपणन का उपयोग करती है।

- विज्ञापन क्षेत्र में सफल करियर बनाने के लिए सर्जनशीलता तथा लेखन के प्रति रुचि अथवा विचारों को दृश्य रूप में परिवर्तित करने की क्षमता आदि जैसे मूल गुण होना अपेक्षित है।
- बाजार तथा मीडिया अनुसंधानकर्ता विश्लेषक एवं तार्किक मस्तिष्क वाला होना चाहिए। रचनात्मक क्षेत्र से जुडे. व्यक्ति जनता के मस्तिष्क तथा हृदय को छूने वाले विज्ञापन बनाने की कलात्मक क्षमता रखते हों।

1.8 स्वाध्याय

1.8.1 लघुत्तरी प्रश्न

1. विज्ञापन क्या है?
2. विज्ञापन के प्रमुख लक्षण एवं विशेषताएँ क्या है?
3. विज्ञापन का संक्षिप्त में महत्त्व बताइए।
4. विज्ञापन के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
5. विज्ञापन और रोजगार पर चर्चा करें।

1.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. विज्ञापन के स्वरूप एवं महत्त्व को विशद कीजिए।
2. विज्ञापन के अंगों पर चर्चा कीजिए।
3. विज्ञापन के उद्देश्य बताइए।
4. विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1. कोल्हापुर जिलाधिकारी कार्यालय में जाकर जिले के पर्यटन स्थानों की जानकारी प्राप्त करें और पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विज्ञापन तैयार करें।
2. शिवाजी विश्वविद्यालय के विविध कोर्सेस की जानकारी प्राप्त कर छात्र-छात्रा एवं अभिभावकों को आकर्षित करने हेतु विज्ञापन तैयार करें।
3. कोल्हापुर स्थित दूध संघ (गोकुळ, वारणा, महालक्ष्मी) में जाकर दूध उत्पादनों की जानकारी प्राप्त कर ग्राहकों को आकर्षित करने हेतु विज्ञापन तैयार करें।
4. लैपटाप, मोबाइल, साबुन, बालों का तेल, कलम आदि की बिक्री बढ़ाने हेतु विज्ञापन तैयार करें।
5. होटल, लक्जरी, कार, कोचिंग सेंटर आदि का विज्ञापन तैयार करें।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. पत्रकारिता एवं जनसंचार, वीर बाला अग्रवाल, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, संस्करण 2020।
2. जनसंपर्क प्रबंधन, कुमुद शर्मा, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2010।
3. हिंदी में पत्रकारिता स्वरूप एवं व्याप्ति, डॉ. प्रवीण भाई चौधरी, लता साहित्य सदन, गाजियाबाद, संस्करण 2010
4. प्रयोजनमूलक हिंदी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008.

❑❑❑

इकाई –2 कविताएँ
1-आ : धरती कितना देती है

– सुमित्रानंदन पंत

अनुक्रम –

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय–विवरण
   3.1 सुमित्रानंदन पंत जी का परिचय
   3.2 आ : 'धरती कितना देती है' कविता का परिचय
   3.3 आ : 'धरती कितना देती है' कविता का आशय
4. स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं–अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप –

1) छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ के रूप में ख्याति–प्राप्त कवि सुमित्रानंदन पंत के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित हो जाएँगे।
2) प्रकृति–प्रेमी एवं सौंदर्य के उपासक सुमित्रानंदन पंत जी की काव्य–विशेषताओं को समझ पाएँगे।
3) प्रकृति–सौंदर्य, प्रकृति के प्रति आसक्ति एवं उसकी उपादेयता को प्रस्तुत कविता के माध्यम से समझ सकेंगे।
4) आ : 'धरती कितना देती है' के प्रकृति से जुड़ी मार्मिक एवं आदर्श सोच को आत्मसात कर सकेंगे।
5) 'धरती हमें कितना कुछ देती है, सिर्फ हमें आवश्यकता है तो स्वार्थान्धता और लोभ–लालच को छोड़कर समता, ममता और मानवता के बीज बोने की।' कवि के इस विचार के मर्म को जान सकेंगे।

2. प्रस्तावना –

सुमित्रानंदन पंत जी का छायावादी परंपरा में अन्यतम स्थान है। वे छायावाद के प्रवर्तकों में से एक रहे हैं। पंत जी 'प्रकृति के सुकुमार कवि' के नाते भी परिचित हैं। वे प्रकृति और प्रेम के अनन्य पुजारी रहे। प्रकृति-प्रेमी पंत ने जहाँ एक ओर प्रेम एवं सौंदर्य का सम्मान किया है, वहाँ दूसरी ओर आध्यात्मिक सत्ता को भी कविता में स्पष्ट किया है। उनकी कल्पना अलौकिक एवं नूतन सृष्टि-विधायिणी है। अपनी इसी अप्रतिम कल्पना-शक्ति के द्वारा पंत जी ने प्रकृति के एक-से-एक रमणीय चित्र अंकित किए हैं। कविता में प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रण की अद्भुत एवं नूतन प्रणाली की शुरुआत पंत जी ने की है। साथ ही प्रकृति के प्रति अनन्य प्रेम जागृत किया है। पंत जी की भाषा जादूगर की भाषा है। 'आ: धरती कितना देती है' शीर्षक कविता में कवि ने प्रकृति के मानव पर होनेवाले अनन्यसाधारण उपकार तथा मानव कि मानवता को निभाने की सोच को उजागर किया है।

3. विषय-विवेचन –

सुमित्रानंदन पंत जी का हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। छायावादी काव्यधारा के तो वे प्रमुखतम गायक हैं। पंत जी जहाँ भावनाओं के धनी हैं, वहाँ वे उच्च कोटि के काव्य-शिल्पी भी हैं। कला-पक्ष के सभी अंगों - भाषा, अलंकार, छंद-विधान आदि का सुंदर निर्वाह उनके काव्य में परिलक्षित होता है। भावानुरुप भाषा का प्रयोग करने में वे सिद्धहस्त हैं। संगीतात्मकता एवं कोमलता उनकी भाषा के विशेष गुण हैं। छंदों के क्षेत्र में उन्होंने किसी विशेष पद्धति को नहीं अपनाया। सच्चाई तो यह है कि उनके छंद भावों के अनुरूप चले हैं।

छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ उनके काव्य में उपलब्ध होती हैं। मानवतावादी चेतना के भी दर्शन उनके काव्य में होते हैं। वंचितों के प्रति करुणा भाव, मानवता पर अटूट विश्वास, समकालीन विषयों की सशक्त पहचान, प्रकृति-सौंदर्य के सुंदर चित्र, प्रकृति का मानवीकरण आदि मुख्य विशेषताएँ उनके काव्य में परिलक्षित होती हैं। पंत जी का काव्य सत्य, सुंदर और शिव की अभिव्यक्ति है। इनकी काव्यधारा युगों तक सहृदय-जनों के हृदय को पुलकित करती रहेगी। यहाँ हम पंत जी द्वारा लिखित 'आ: धरती कितना देती है' कविता पर चर्चा करेंगे।

3.1 सुमित्रानंदन पंत जी का परिचय –

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म दि. 20 मई, सन् 1900 ई. में कूर्मांचल प्रदेश (कुमायूँ) के अल्मोडा नगर के लगभग 20 मील दूर 'कसौनी' ग्राम की पर्वतीय शोभा के सुखद अँचल में हुआ। पंत जी की माता का नाम सरस्वती देवी था। इनके जन्म के छ: घण्टे बाद ही इन्हें सरस्वती की साधना के लिए छोडकर स्वर्ग सिधार गई। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। अपने चार भाइयों में पंत सबसे छोटे थे। पंत जी के पिता का दिया हुआ नाम गोसाईदत्त है, किंतु इस नवीनता और सौंदर्य के पुजारी को यह नाम सौंदर्यहीन प्रतीत हुआ। इनके भाई हरदत्त के पास उनके मित्र सुमित्रानंदन सहाय के पत्र आया

करते थे। यह नाम पंत जी को काफी पसंद आया और उन्होंने अपना नाम 'सुमित्रानंदन' रख लिया। सात वर्ष की अवस्था तक तो आप अपनी मातृभूमि से 'प्राकृतिक चित्रों' के सौंदर्य को समझने की शिक्षा पाते रहे। सात वर्ष की आयु में वे कसौनी की पाठशाला में प्रविष्ट हुए। पंत जी की शिक्षा काशी स्थित 'जयनारायण स्कूल' में हुई।

स्कूल लीविंग परीक्षा पास करने के बाद वर्ष 1919 में आप प्रयाग में आकर 'सेंट्रल म्योर कालेज' में एम. ए. की शिक्षा के लिए प्रविष्ट हुए और 'हिंदू बोर्डिंग हाऊस' में रहने लगे, किंतु गांधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर वे स्कूल शिक्षा को छोडकर स्वतंत्र अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए। वे अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत के गंभीर अध्ययन के प्रवर्तक तथा नव-नव समर्थ शब्दों के निर्माता और प्रयोक्ता बने। रवि बाबू से वे प्रभावित थे। वे संगीत के प्रेमी थे। उन्होंने 'रूपाभ' का संपादन किया। वर्ष 1925 में उनके पिताजी की मृत्यु हो गई और आर्थिक संकट, रुग्णता, कुछ पारिवारिक झंझटों ने मिलकर कल्पना के आकाश में उडते कवि को धरती पर उतार लिया और मिट्टी का गायक बनाया।

प्रयाग रेडियो स्टेशन के उच्च पदाधिकारी के रूप में भी उन्होंने विशेष ख्याति प्राप्त की। उन्हें कपड़ों और बाल का बड़ा शौक था। उन पर रवि बाबू के अतिरिक्त पाश्चात्य कवियों - शैली, वर्डस्वर्थ, कीटस् और टेनिसन का गहरा प्रभाव था। संस्कृत कवियों में वे कालिदास से अत्यधिक प्रभावित रहे। विवेकानंद, गांधी, मार्क्स और अरविंद के दर्शन का उनपर गहरा प्रभाव पड़ा। इन्हीं प्रभावों के कारण उनकी काव्य-प्रवृत्ति में परिवर्तन होता रहा। दि. 28 दिसम्बर, सन 1977 ई. को कवि पंत का निधन इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ और हिन्दी-जगत् में शोक की लहर दौड़ पड़ी।

सुमित्रानंदन पंत जी का कृतित्व -

सुमित्रानंदन पंत बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में भावों एवं विचारों की सुमधुर सुगंध को बिखरने का अथक प्रयास किया है। पंत की रचनाएँ इस प्रकार हैं -

काव्य-संग्रह : (वर्ष)

उच्छ्वास (1920), वीणा (1925), पल्लव (1926), गूँजन (1932), युगांत (1936), युगवाणी (1939), ग्राम्या (1940), स्वर्ण-किरण (1947), स्वर्ण-धूलि (1947), युगपथ (1948), उत्तरा (1949), अतिमा (1955), वाणी (1958), कला और बूढा चाँद (1959), पौ फटने से पहले (1968)।

काव्य-रूपक : रजत शिखर (1956), शिल्पी (1952), सौवर्ण (1957)

खंड-काव्य : ग्रंथि (1920)

महाकाव्य : लोकायतन (1964)

अनुवाद : मधुज्वाल (1938)

इनके अतिरिक्त पंत जी की चुनी हुई कविताओं के कुछ संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार – (वर्ष)

1960 ई. में. 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

1961 ई. में. भारत सरकार द्वारा 'चंद्रभूषण' उपाधि से सम्मानित।

1964 ई. में. 'लोकायतन' को उत्तर प्रदेश शासन ने तथा सोवियत सरकार ने पुरस्कार देकर सम्मानित।

1972 ई. में 'चिदंबरा' काव्य संकलन पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से गौरवान्वित।

3.2 'आ: धरती कितना देती है' कविता का परिचय –

प्रस्तुत कविता प्रतीकात्मक है। इसमें कवि ने बचपन की एक घटना का उल्लेख किया है। उन्होंने धरती में पैसे बोए थे। परंतु वे नहीं उगे। पचास वर्ष के बाद उन्होंने सेम के बीज बोए, तो इतने उगे कि उनकी फलियों की कोई थाह नहीं रही। कवि इस कविता के द्वारा संदेश देते हैं कि यदि मनुष्य धरती का सही तरह से उपयोग करे, तो वह बहुत कुछ दे सकती है, मनुष्य को चाहिए कि वह निजी स्वार्थ छोडकर मानवता के हित-चिंतन को उद्देश्य बनाएँ।

3.3 'आ: धरती कितना देती है' कविता का आशय –

अपने बचपन की घटना का उल्लेख करते हुए कवि कहते हैं कि उन्होंने अपने बचपन में अपने घरवालों से छुपकर कुछ पैसे जमीन में बोए थे और यह सोचा था, 'पैसों के पेड उगेंगे, फिर रुपयों की फसल उगेगी। उन फसलों का व्यापार करके मैं बडा सेठ बन जाऊँगा।' किंतु कवि की यह कल्पना साकार नहीं हुई। जब बीज ही गलत बोया जाएगा, तो फसल कैसे उग सकती है। असल में वहाँ पैसे नहीं बल्कि स्वार्थ बोया गया था।

कवि कहते हैं कि बचपन की इस घटना को पचास वर्ष बीत गए। तब से न जाने कितने मौसम बदले। एक दिन कवि ने अनायास ही बिना किसी कामना के यों ही आँगन के एक कोने में जमीन को उँगली से कुरेद कर सेम के बीज मिट्टी में दबा दिए। कवि का सेम के बीज मिट्टी में दबाना मानो पृथ्वी के अँचल में हिरे, जवाहरातों को टाँक देना था। अर्थात पैसे जो सेठ बनने की कल्पना से बोए थे, वे तो उन्हें नहीं मिले, पर सेम के बीज जो केवल मनोरंजन के लिए यों ही बो दिए थे, वे हिरे-जवाहरातों के समान सिद्ध हुए।

कुछ दिनों में वे अपने आँगन में बीज बो देने की बात को बिल्कुल भूल जाते हैं, लेकिन एक दिन संध्या को कवि आँगन में यों ही निरुद्देश्य टहलने चले जाते हैं, तब अचानक कवि देखते हैं की आँगन के कोने में कई नए आए हुए मेहमान छाता-सा लगाए खडे हैं। कवि का मन उन अंकुरों को देखकर इतनी प्रसन्नता से भर जाता है कि, वे उन सेम के अंकुरों को अनेक रूपों में देखते रहते हैं। कभी वे उन्हें छाते के रूप में देखते हैं, तो कभी उनको जीवन की विजय-पताका मानते हैं, तो कभी उनके रूप में नन्हीं हथेलियाँ मानते हैं। तो कभी वे उनको चिडियों के बच्चे दिखाई देते हैं। कवि उन उगते हुए अंकुरों को बडी देर तक

टकटकी लगाएँ देखते रहते हैं। अचानक कवि को बीज बोने की बात याद आ जाती है। उन्हीं बोए हुए बीजों से यह नन्हीं फौज तैयार खडी हो गई थी और सब गर्व से सिर ताने खडे थे। अर्थात् पौधे अबाध गती से आगे बढ रहे थे। कवि अपने आश्चर्य को व्यक्त करके यह सिद्ध करना चाहते हैं कि इस सृष्टि में प्रत्येक वस्तु जो इस संसार में जन्म लेती है, अबाध गति से आगे बढना चाहती है।

कवि को सेम की हरी-भरी बेल पर खिले हुए फूल आकाश-मंडल पर बिखरे हुए चमकते तारों से मालूम पडते हैं। वे ऐसे मालूम पड़ रहे थे, मानों लताओं-रूपी लहरों पर झाग-रूपी छीटें चमक रहे हों। उन हरी-भरी बेलों पर लताएँ, मानों किसी नायिका की लहराती हुई चोटियाँ थीं, जिनमें मोती की झालर लगी हुई हो। कवि उन बेलों को किसी नायिका का बेल-बूटे से कढा हुआ आँचल मानते हैं।

सेम की फलियाँ जो कि कवि के बोए हुए उन पौधों पर असंख्य रूप से उत्पन्न हुई थी। इन असंख्य फलियों में कोई पतली थी, तो कोई चौडी थी। कोई-कोई अंगुलियों की भाँति लम्बी या छोटी थी। यह असंख्य फलियाँ चंद्रमा की कला की भाँति बढ रही थी। कवि आश्चर्य से कहते हैं कि यह कलियाँ इतनी खाई, फिर भी खत्म नहीं हुई। यह फलियाँ सभी जान-पहचान वालों के घर भेजी गईं। जिनका परिचय नहीं था, उनके घर पर भी भेज दी गईं। उन फलियों के सहारे अपरिचितों से नवीन परिचय जोडा गया। भाई-बाँधवों ने, कुटूबिंयो ने, मित्रों ने, अतिथियों ने, माँगने वालों ने यहाँ तक कि मुहल्ले के सभी घरों में उन फलियों का जी भर के साग पकाया। वे फलियाँ इतनी प्यारी और इतनी अधिक थीं कि उनके विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

कवि पृथ्वी माता की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आहा! धरती माता अपनी प्रिय संतान को कितना देती है। उसकी ममता और प्यार का अंदाजा लगाना असभंव है। धरती तो रत्न उगानेवाली माता है, उसमें ममता के दाने बोने हैं। पृथ्वी में जनता-जनार्दन की सहन-शक्ति और सामर्थ्य के दाने बोने हैं। इस पृथ्वी के रत्न-गर्भा आँचल में मानव को प्यार के बीज बोने पड़ेंगे, जिससे यह मिट्टी सुनहली फसलें उत्पन्न कर सके और मनुष्यता के श्रम से फिर यह दिशाएँ हँस सकें। हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे। यदि हम पृथ्वी में अपने अंतस के घृणा, वैमनस्य, द्वेष, अनाचार, अत्याचार बोएँगे, तो हमें इसी की फसल हासिल होगी और अगर हम अपनी इन सर्वनाशी भावनाओं को त्यागकर प्यार, ममता, बराबरी, सहयोग और सहृदयता की खेती करेंगे, तो हमारी धरती माता हमारे श्रम से उर्वरा बनकर, हमें सुनहली फसल प्रदान करेगी, हमारा घर धन-धान्य से भर उठेगा। अगर मानव समता और ममता के मार्ग पर अग्रेसर होगा, तो उसे जीवन में सुख और शांति प्राप्त हो सकती है।

4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न –

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'आ: धरती कितना देती है' इस कविता के कवि कौन हैं?

अ) जयशंकर प्रसाद   ब) सुमित्रानंदन पंत

क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'   ड) महादेवी वर्मा

2. बचपन में कवि ने धरती में क्या बोए थे?

अ) पैसे   ब) खिलौने   क) बीज   ड) बंदूक

3. छाता ताने कौन खड़े थे?

अ) दादी जी   ब) कवि के मित्र   क) सेम के पौधे   ड) ग्राम के लोग

4. पैसे बोकर कवि ने क्या कल्पना की?

अ) नायक बनेगा   अ) शहर घूमने जाएगा

क) वह एक मोटा सेठ बनेगा   ड) वह पढ़ लिखकर आगे बढ़ेगा

5. कवि पैसे के माध्यम से क्या सन्देश देना चाहता है?

अ) लालच-लोभ   ब) प्रेम   क) परोपकार   ड) सहकारिता

6. पंत जी की प्रसिद्ध रचना का नाम क्या है?

अ) यामिनी   ब) युगधारा   क) प्रिय-प्रवास   ड) लोकायतन

7. कवि पंत जी को किस प्रकार का कवि कहा जाता है?

अ) राष्ट्रवादी   ब) प्रगतिशील

क) प्रकृति का सुकुमार कवि   ड) हालावादी

8. 'आ: धरती कितना देती है' कविता में कवि ने क्या सन्देश दिया है ?

अ) हर किसी की भला हो   ब) आपस में एक रहें

क) हम जैसे बोएँगे वैसा ही पाएँगे   ड) और फूल फलकर में मैं मोटा सेठ बनूँगा

9. सुमित्रानंदन पन्त की काव्य-भाषा कैसी है?

अ) पंत जी की काव्य भाषा पर गाँधी, अरविन्द, मार्क्स का प्रभाव है   ब) उपनिषद जैसी

क) वीर रस से ओत-प्रोत   ड) भक्ति रस से युक्त

10. कवि धरती पर किसकी फसल उगाना चाहते हैं?

अ) सद्भावना की   ब) समानता की

क) समता, ममता व भाईचारे की   ड) सच्चाई की

11. 'सुन्दर लगते थे मावस के हँसमुख नभ से' यहाँ 'मावस' का क्या अर्थ है?

अ) पावस   ब) अमावस   क) मधुमास   ड) श्रावणमास

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. पचास साल बाद कवि .... के बीज मिट्टी में बोता है।

   अ) मटर ब) सेम क) सेब ड) निंबू

2. कवि ने सेम की फलियाँ .... को बाँटी।

   अ) परिवार के लोगों को ब) मित्र, अभ्यागत तथा पडोसियों को

   क) गरीबों को ड) कुत्तों को

3. कवि ने .... के वश में आकर पैसे बोए थे।

   अ) क्रोध ब) प्रेम क) ईर्ष्या ड) लोभ

4. सेम का बीज .... का प्रतीक है।

   अ) सहकारिता ब) समानता, ममता व क्षमता

   क) समझदारी ड) ईर्ष्या

5. पंत जी ....धारा के कवि हैं।

   अ) प्रगतिवादी ब) छायावादी क) प्रयोगवादी ड) आधुनिकतावादी

6. कवि .... को देखकर हर्ष–विमूढ़ हो गए।

   अ) बच्चों ब) घर आए मेहमानों

   क) पड़ोसी को ड) आँगन में छोटे–छोटे सेम के नन्हे पौधे

7. रत्न–प्रवासिनी .... को कहा गया है।

   अ) आकाश ब) भाईचारे क) धरती माता ड) नदी

8. कवि ने पाठ में .... ऋतुओं का वर्णन किया है।

   अ) 2 ब) 3 क) 4 ड) 6

9. कवि के कविता लिखते समय भारतमाता की संतानों की संख्या .... करोड थी।

   अ) 20 ब) 30 क) 40 ड) 70

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :–

छुटपन : बचपन

हताश : निराश

कलदार : जिसमें कल लगी हो, पेंचदार, सरकारी रूपया, चाँदी समान सिक्के।

बन्ध्या : बाँझ स्त्री।

अपलक : टकटकी लगाकर।

अपलक पाँवड़ बिछाना (मुहावरा) : किसी की उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा करना।

ऊदी : बैंगनी, जामुनी रंग का।

हहराना : डरना, घबराना।

कजरारे : काले

विमूढ़: मुग्ध, मोहग्रस्त, भ्रम में पड़ा हुआ।

डिम्ब : अंडा।

निर्निमेष : एकटक।

चंदोवा : छोटा शामियाना।

बाड़े की टट्टी : बाँस का बना पल्ला जो परदे का काम करे।

अवाक् : चकित।

श्यामल : साँवला।

फली : लंबोतरे पतले फल जिनमें एक साथ कई दाने या बीज होते हैं, जैसे मटर, सेम आदि।

कचपचिया : छोटे तारों का समूह।

6. स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :-

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. ब) सुमित्रानंदन पंत
2. अ) पैसे
3. क) सेम के पौधे
4. क) वह एक मोटा सेठ बनेगा
5. अ) लालच - लोभ
6. ड) लोकायतन
7. क) प्रकृति का सुकुमार कवि
8. क) हम जैसे बोएँगे वैसा ही पाएँगे
9. अ) पंत जी की काव्य भाषा पर गाँधी, अरविन्द, मार्क्स का प्रभाव है
10. क) समता, ममता व भाईचारे की
11. ब) अमावस

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. ब) सेम
2. ब) मित्र, अभ्यागत तथा पडोसियों को.

3. ड) लोभ

4. ब) समानता, ममता व क्षमता

5. ब) छायावादी

6. ड) आँगन में छोटे-छोटे सेम के नन्हे पौधे

7. क) धरती माता

8. ड) 6

9. क) 40

7. सारांश :-

1. आ: धरती कितना देती है कविता में कविवर पंत ने स्वार्थ तथा भाग्यवाद के प्रति विद्रोह तथा परिश्रम, त्याग, परोपकार तथा मानवता के महत्त्व को दर्शाया है।
2. 'आ: धरती कितना देती है' कवि की मानवतावादी अभिव्यक्ति है। जब मनुष्य स्वार्थ से प्रेरित होकर कोई कार्य करता है, तो उसका प्रतिफल अच्छा नहीं होता, किन्तु जैसे ही वह परोपकार से प्रेरित होकर कार्य संपन्न करता है, तो उसका फल अच्छा हो जाता है।
3. धन के लाभ में पढ़कर मनुष्य ने उच्च मानवीय गुणों को भुला दिया है। बालक कवि भी सामान्य बीजों की तरह पैसों का बीज बोकर यह आशा करता है कि उसमें पैसों के असंख्य फल लगेंगे। बालक ने भले ही अज्ञानता में ऐसा किया हो, परन्तु यह बात वर्तमान युग के सभी लोगों के लिए सत्य सिद्ध होती है। यह सम्पूर्ण युग की अभिलाषा है। इस प्रकार कवि के पैसे बोने की बात से समाज के दृष्टिकोन को प्रस्तुत किया गया है। कवि इस दृष्टिकोन के प्रति चिंता व्यक्त करते हैं और कहते हैं कि पैसा स्वार्थ और लोभ का प्रतीक है। इससे समाज और राष्ट्र का कल्याण सम्भव नहीं है।
4. कुछ समय बाद अपने आँगन में कवि ने सेम के कुछ बीज बोए। कविवर पंत जी ने सेम के बीज के अंकुरित होने से उसमें पत्तियों के लगने तक की अवस्था का बड़ा ही सजीव चित्रण कविता में किया है।
5. धीरे-धीरे सेम की लताएँ बढ़ती हैं। कालांतर में वे लताएँ लहलहाती हुई चारों ओर आँगन में फैल जाती हैं, देखते-देखते आँगन की टाटी का सहारा लेकर वे ऊपर चढ़ जाती हैं। अब वे हरी-भरी लताएँ ऐसी लगती मानों हरे-भरे झरने ऊपर की ओर फूट पड़े हों।
6. उन लताओं को अगणित सेम की फलियाँ लगती हैं। कवि के मित्र, अभ्यागत तथा पड़ोसी उन फलियों को आनंद के साथ खाते हैं।
7. कवि का कहना है कि स्वार्थान्धता एवं लोभ-लालच को छोड़कर समस्त धरती पर प्रेम, त्याग, सज्जनता, उदारता और मानवता का दाना बोया जाए, तो निश्चय ही मनुष्य का श्रम सार्थक होगा और मानवता का विकास होगा।

8. स्वाध्याय :-

8.1 लघुत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. 'कवि पंत जी लोभ-लालच को तजकर समता, ममता एवं मानवता के बीज धरती में बोने की सीख देते हैं।' अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. कविवर पंत जी ने सेम के बीज के अंकुरित होने से उसमें पत्तियों के लगने तक की अवस्था का बड़ा ही सजीव चित्रण किस प्रकार से किया है?
3. पंत जी द्वारा कविता में अभिव्यक्त प्रकृति की अनूठी सुंदरता का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

निम्नलिखित पंक्तियों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल फलकर मै मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी नें न एक भी पैसा उगला!-
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये!

2. यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नही समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को,-
बचपन में छि: स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।

3. रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं;
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव-ममता के दाने बोने हैं, -
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, - जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ -
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए।

1. 'आ: धरती कितना देती है' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. धरती हमें सबकुछ देती है, किंतु 'जैसा बोओगे वैसा पाओगे' की अभिव्यक्ति कवि ने अपनी कविता के माध्यम किस प्रकार से की है?
3. 'आ: धरती कितना देती है' कविता के उद्‌देश्य-पक्ष पर प्रकाश ड़ालिए।
4. 'स्वार्थान्धता एवं लोभ-लालच को छोड़कर समता, ममता एवं मानवता के बीज बोने से धरती द्वारा निश्चय ही मनवांछित फल की परिपूर्ति होती है।' अपने शब्दों में विशद कीजिए।

9. क्षेत्रीय कार्य :–

1. पंत जी की 'मौन-निमंत्रण', 'नौका-विहार', 'हिमाद्रि' और ऐसी ही अन्य रचनाओं को पढ़िए।
2. 'आ: धरती कितना देती है' के समान मराठी की एक कविता को पढ़िए तथा दोनों की तुलना कीजिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए :–

1. 'वीणा' काव्य-संग्रह – सुमित्रानंदन पंत।
2. 'युगांत' काव्य-संग्रह – सुमित्रानंदन पंत।
3. 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य-संग्रह – सुमित्रानंदन पंत।
4. सुमित्रानंदन पंत और तारापथ – डॉ. पारसनाथ तिवारी।
5. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ – दुर्गाशंकर मिश्र।

❑❑❑

2. जीवन का झरना

– आरसी प्रसाद सिंह

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय-विवरण
    3.1 आरसी प्रसाद सिंह जी का परिचय
    3.2 'जीवन का झरना' कविता का परिचय
    3.3 'जीवन का झरना' कविता का आशय
4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य –

इस इकाई को पढने के बाद आप -

1) यौवन के कवि आरसी प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो जाएँगे।
2) आरसी प्रसाद सिंह जी की काव्य-विशेषताओं को समझ पाएँगे।
3) आरसी प्रसाद सिंह जी की कविता 'जीवन का झरना' से आशावादी जीवन जीने की प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे।
4) प्रस्तुत कविता के माध्यम से जीवन में सुख-दु:ख का सामना करते हुए सदैव गतिशील रहने की प्रेरणा ले सकेंगे।
5) साथ ही जीने के वास्तविक मर्म को समझते हुए सकारात्मकता के साथ जीवन-पथ में आने वाली हर बाधाओं का सामना करने की सीख को इस कविता से सीख सकेंगे।

2. प्रस्तावना –

प्रसिद्ध कवि, कथाकार और एकांकीकार आरसी प्रसाद सिंह को जीवन और यौवन का कवि कहा जाता है। आरसी प्रसाद सिंह को बिहार के श्रेष्ठ कवियों में गिना जाता है। सिंह जी हिंदी और मैथिली भाषा के महान कवि हैं। वे छायावादोत्तर हिन्दी कविता की स्वच्छंद धारा के एक महत्त्वपूर्ण कवि थे तथा साथ ही प्रकृति, प्रेम, जीवन और यौवन के महाकवि थे। उनकी रचनाओं में जीवन के प्रति अकूँठ श्रद्धा, उत्साह और सकारात्मकता दिखाई देती है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को बालकाव्य, कथाकाव्य, महाकाव्य, गीतकाव्य, रेडियो-रूपक एवं कहानियों समेत कई रचनाएँ दी हैं। बिहार के चार नक्षत्रों में वियोगी, प्रभात और दिनकर के साथ आरसी प्रसाद सिंह सदैव याद किए जाएँगे। आरसी प्रसाद सिंह हिंदी और मैथिली के महाकवि थे। कवि आरसी प्रसाद सिंह जी ने 'जीवन का झरना' शीर्षक कविता में हमेशा गतिशील रहने का संदेश दिया है। साथ ही प्रस्तुत कविता जीवन में सुख-दुःख का सामना करते हुए भी अनवरत आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है।

3. विषय-विवेचन –

यौवन के महाकवि कहलाए जानेवाले महान कवि आरसी प्रसाद सिंह हिंदी काव्य-जगत् के अन्यतम हस्ताक्षर हैं। कवि आरसी प्रसाद सिंह जी के 'जीवन का झरना' कविता पर हम यहाँ चर्चा करेंगे, जो हमें संघर्ष करते हुए जीवन में सदा आगे बढ़ने की सीख देती है।

3.1 आरसी प्रसाद सिंह जी का जीवन परिचय –

हिंदी साहित्य के अनन्यसाधारण साहित्यकार आरसी प्रसाद सिंह का जन्म बिहार के समस्तीपुर जिले के एरोत गाँव में दि. 19 अगस्त, सन् 1911 ई. में हुआ था। यह गाँव महाकवि आरसी प्रसाद सिंह की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। इसीलिए इसे 'आरसी नगर एरोत' कहा जाता है। आरसी प्रसाद सिंह की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। आर्थिक निर्धनता के कारण वे उच्च शिक्षा से वंचित रह गए। अन्तर स्नातक की परीक्षा के बाद उनका पठन-पाठन बन्द हो गया, लेकिन स्वाध्याय के बल पर उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, दर्शनशास्त्र आदि की विद्वत्ता हासिल की। सामान्य मध्यवर्गीय, पर कुलीन परिवार में जन्में आरसी बाबू का नाम रामचन्द्र प्रसाद सिंह रखा गया था, जो बाद में छोटा होकर आरसी प्रसाद सिंह हो गया। आरसी प्रसाद सिंह के कवित्व रूप के दर्शन स्कूल काल में ही होने लगे थे। 16 वर्ष की उम्र में इनकी एक कविता 'आम का पेड़' दरभंगा के लहेरियासराय से प्रकाशित 'बालक' नामक पत्रिका में छपी और पुरस्कृत हुई। तब से आरम्भ हुई उनकी काव्य-यात्रा अविरल जारी रही, जो वर्ष 1996 में उनकी मृत्यु के बाद ही रुकी। चालीस के दशक में जयपुर नरेश महाकवि आरसी जी को अपने यहाँ राजकवि के रूप में सम्मानित करना चाहते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने काफी आग्रह, अनुनय-विनय किया, परंतु आरसी बाबू ने चारणवृत्ति तथा राजाश्रय को ठुकरा दिया। ऐसी थी महाकवि आरसी की शख्सियत। वर्ष 1938 में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'कलापी' ने इनकी प्रसिद्धि को चार चाँद लगा दिया। रामचन्द्र शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस काव्य-संग्रह का विशेष रूप से उल्लेख किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पाण्डेय बेचन शर्मा

'उग्र', राम कुमार वर्मा, डॉ. धीरेंद्र वर्मा, विष्णु प्रभाकर, शिव मंगल सिंह 'सुमन', बुद्धिनाथ मिश्र और अज्ञेय समेत कई रचनाकारों ने हिंदी और मैथिली साहित्य के इस विभूति को कभी शब्दों से तो कभी सुमनों से सम्मान दिया।

आरसी प्रसाद सिंह के साहित्य लेखन-शैली, रुचि से प्रभावित होकर रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने उनको 'युवक' समाचार पत्र में आने का अवसर दिया। रामवृक्ष बेनीपुरी जी उस वक्त 'युवक' के संपादक थे। इस समाचार-पत्र 'युवक' में उन्होंने बहुत ही क्रांतिकारी शब्दों का प्रयोग किया तथा इसे प्रकाशित भी किया। तभी तत्कालीन अंग्रेजी हुकूमत ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया था।

खगड़िया के कोशी कालेज में वर्ष 1948 में उन्होंने हिन्दी प्राध्यापक की नौकरी की। 1951 में नौकरी छोड़कर वापस गाँव आ गए। गाँव में भी बहुत दिनों तक नहीं रह सके और पटना आकर रहने लगे। वर्ष 1956 में उन्हें इलाहाबाद आकाशवाणी से काम का प्रस्ताव मिला, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। वर्ष 1957 में उनका स्थानांतरण लखनऊ को हो गया, तो वे वहीं चले गए। इन दोनों जगहों पर उन्होंने साहित्य-सृजन को गति प्रदान कीया। वर्ष 1958 में उन्होंने आकाशवाणी की नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद भी वे बहुत दिनों तक लखनऊ में रह कर साहित्य सेवा करते रहे। इसके बाद वे मुजफ्फरपुर आ गए और लम्बे समय तक वहाँ रहे। मुजफ्फरपुर प्रवास के दौरान उनकी अनेक कालजयी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ।

पारिवारिक दायित्व के लिए वर्ष 1965 से 1970 तक उन्हें अपने गाँव एरोत में रहना पड़ा। वर्ष 1970 में आरसी प्रसाद गम्भीर रूप से बीमार पड़े और पुनः उन्हें मुजफ्फरपुर आना पड़ा। लंबे समय तक उपचार के बाद वे गाँव लौटे। किन्तु गाँव में मन न लगने के कारण पटना और गाँव आते-जाते रहे। वर्ष 1975 में वे स्थायी रूप से पटना आकर रहने लगे। पटना में ही दि. 15 नवम्बर, सन् 1996 ई. में कुर्जी अस्पताल में उनका निधन हो गया। सहज प्रवाह और भाव के अनुरूप भाषा के कारण इनकी रचनाओं को पढ़ना हमेशा ही दिलचस्प रहता है। आरसी प्रसाद सिंह के 'जीवन का झरना' कविता उनके जीवन को परिभाषित करती है। यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है। सुख-दुःख के दोनों तीरों से चल रही राह मनमानी है। कवि के जीवन में संघर्ष और सुख-दुःख की मस्तीभरी कहानी चलती रही। अनेक परेशानियों और दिक्कतों के बाद आरसी प्रसाद सिंह जीवन भर जूझते रहे, किन्तु उनकी लेखनी कभी बंद नहीं हुई।

आरसी प्रसाद सिंह जी का कृतित्व –

कविता –

1. आजकल, 2. कलापी 3. संचयिता 4. आरसी 5. जीवन और यौवन 6. नई दिशा 7. पांचजन्य 8. द्वंद समास 9. सोने का झरना 10. कथा माला

प्रबन्ध काव्य –

1. नन्द दास 2. संजीवनी 3. आरण्यक 4. उदय

गीत –

1. प्रेम गीत

कहानी –

1. पंचपल्लव 2. खोटा सिक्का 3. कालरात्रि 4. एक प्याला चाय 5. आंधी के पत्ते 6. ठण्ढी छाया

बाल साहित्य –

1. चंदामामा 2. चित्रों में लोरियाँ 3. ओनामासी 4. रामकथा 5. जादू का वंशी 6. काग़ज़ की नाव 7. बाल–गोपाल 8. हीरा–मोती 9. जगमग 10. क़लम और बंदूक

समीक्षा –

1. कविवर सुमति : युग और साहित्य

मैथिली की प्रकाशित कृतियाँ –

1. माटिक दीप 2. पूजाक फूल 3. मेघदूत 4. सूर्यमुखी (साहित्य अकादमी पुरस्कार)

महाकवि आरसी प्रसाद सिंह जी के कृतित्त्व के बारे में एक बात गौर कहनेलायक यह है कि उनकी जितनी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, उनसे कहीं ज्यादा अप्रकाशित हैं।

पुरस्कार –

आरसी प्रसाद सिंह को सन 1984 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

बिहार सरकार के राजभाषा विभाग ने उन्हें राजेन्द्र शिखर सम्मान से विभूषित किया।

3.2 कविता का परिचय –

'जीवन का झरना' कवि आरसी प्रसाद सिंह जी की बेहद चर्चित काव्य–कृति है। प्रस्तुत कविता जीने के वास्तविक मर्म को समझाते हुए सकारात्मकता के साथ जीवन–पथ में आने वाली हर बाधाओं का सामना करने की सीख देती है। गतिशीलता को अपने जीवन–पथ के ध्येय के रूप में रखती यह कविता जीवन को जड़ता से जीवन्तता की ओर उन्मुख करने के लिए प्रेरित करती है। जीवन झरने के समान है, जो अपने लक्ष्य तक पहुँचने की लगन लिए पथ की बाधाओं से मुठभेड़ करता बढता ही जाता है। गति ही जीवन है और स्थिरता मृत्यु। अत: मनुष्य को भी निर्झर अर्थात् झरने के समान गतिमान रहना चाहिए।

जिस तरह झरना अपने मस्ती-पूर्ण गान, कल-कल निनाद में मदमस्त आगे बढ़ते जाता है, उसी तरह मनुष्य-जीवन का लक्ष्य सतत् क्रियाशीलता के साथ विकास-पथ पर प्रगति करते जाना ही होना चाहिए। यह कविता हमें याद दिलाती है कि जीवन में सुख-दु:ख दोनों को सहज भाव में अपनाते हुए हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। आगे बढ़ने में विघ्न-बाधाएँ यदि आती हैं तो आएँ, उनका जमकर सामना करते हुए अपनी मंजिल की ओर झरने के समान बढ़ते चले जाना। अत: कवि का कहना है कि झरना तथा जीवन दोनों के लिए गतिशीलता अनिवार्य है। जीवन में कर्म की प्रगतिशीलता ही उसे सार्थकता तथा जीवन्तता का आकर्षण प्रदान करती है। ठहराव, झरना तथा जीवन दोनों के लिए समान रूप से अंत या मृत्यु का सूचक होता है, क्योंकि दोनों का समान धर्म आगे बढ़ते रहना है।

3.3 कविता का आशय –

'निर्झर' का अर्थ है 'झरना'। कवि ने जीवन को झरना कहा है, क्योंकि जिस प्रकार झरना बिना रुके अबाध गति से बढ़ता जाता है, उसी प्रकार जीवन भी बिना रुके लक्ष्य की ओर बढ़ता ही रहता है। मनुष्य का जीवन हमेशा एक जैसा नहीं रहता है, सुख और दु:ख का आना-जाना लगा रहता है। जिस प्रकार रात के बाद सुबह होती है, उसी प्रकार दु:ख के बादल छट जाते हैं और सुख के दिन आते हैं। रात दु:ख का प्रतीक है और दिन सुख का। जिस तरह निर्झर दो किनारों के बीच बहते हुए आगे बढ़ता है, उसी तरह जीवन में सुख और दु:ख दो किनारे हैं, जीवन इन्हीं के बीच चलता रहता है। निर्झर पहाड़ों के बीच से फूटकर ऐसे निकलता है, मानो पर्वत का सीना चीरकर बाहर निकल रहा हो, पर्वतों की गोद में खेलते हुए वह घाटी में गिरता है और घाटी से बहकर समतल की ओर चला जाता है, जहाँ वह तालाब, नदी या समुद्र में विलीन हो जाता है।

कवि आरसी प्रसाद सिंह जी ने झरने के बारे में बताया है कि वह अपनी ही गति में मदमस्त होता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ता जाता है, उसमे जीवन होता है। वह अपनी धुन में आगे बढ़ने की इच्छा रखता है। वह रास्ते के पत्थरों को तोड़ता हुआ अपना रास्ता बनाता है। उसके यौवन का जोश उसे जंगल के पेड़ों से राह बनाने में सहायता करता है। कवि आरसी प्रसाद सिंह हमें प्रेरित करते हैं कि बाधा के रूप में हमारे जीवन में आने वाले दु:ख, परेशानियों, कठिनाईयों से हमें ड़रकर, हार मानकर अपने लक्ष्य को नहीं भूलना चाहिए। जिस प्रकार झरना वन के पेड़ों, पत्थरों से टकराता है और आगे बढ़ता है, उसी प्रकार हमें भी उनका सामना करके आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य को कठिन से कठिन समय में भी झरने की तरह हार नहीं माननी चाहिए। यौवन की गति को थामकर सभी बाधाओं का डटकर सामना करते हुए संघर्षरत रहना चाहिए। छोटे स्तर से शुरूवात करके चोटी पर पहुँचना चाहिए। धारा-प्रवाह के अनुसार अपना रास्ता खुद बना लेना चाहिए।

नाविक तेज़ उठती-गिरती लहरों को देखकर घबरा जाता है और अपनी नाव को पानी में नहीं उतारता, जिस कारण वह उस पार नहीं पहुँच पाता है और किनारे पर बैठा पछताता है। कवि ने नाविक को प्रतीक बनाकर उन लोगों की तरफ़ संकेत किया है, जो असफलता और संघर्ष के डर से कोई काम शुरू नहीं करते,

परिणाम-स्वरूप निराशा में डूबे रहते हैं। जो वीर और हिम्मतवाले लोग होते हैं, वे मुसीबतों और बाधाओं से लड़ते हुए अपने लक्ष्य की ओर चलते हैं और सफलता उनके कदम चूमती है। जीवन की गति रुक जाने पर मृत्यु ही पड़ाव स्थल है। परंतु जब मनुष्य संसार में आकर दुःख, मुसीबतों और बुरे समय से गुज़रता है, तो ना चाहते हुए भी उसका जीवन खत्म-सा हो जाता है। जीवन आगे बढ़ने के लिए, गतिमान बनने के लिए मिला है, आनेवाली कठिनायों से घबराकर समय नहीं गवाँना चाहिए।

निर्झर कहता है जब हम थक-हारकर जीवन की परेशानियों से दूर भागते हैं, उनका सामना नहीं कर पाते, अपने-आपको कमजोर समझने लगते हैं, तब हम रुक जाते हैं और यह रुक जाना ही मरने के समान है। जीवन मरने के लिए नहीं, आगे बढ़ने के लिए मिला है। जो बीत गया है, उसे पीछे छोड़ हमें आगे ही बढ़ते जाना चाहिए। यौवन मानव-जाति को यही संदेश देता है कि युवावस्था ही एक ऐसी अवस्था है, जिसमें जोश, उमंग, हर काम को करने का हौसला मनुष्य के अंदर होता है, जो हमें पराजित होने से रोकता है, निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है और असंभव को संभव बनाता है। कवि आरसी प्रसाद सिंह अपने कर्तव्य-पथ पर आगे चलते रहने के लिए कह रहे हैं, क्योंकि मनुष्य के अंदर ही समझदारी, सूझ-बूझ, बुद्धि होती है, जिससे वह बुरे समय में भी सही रास्ता चुन सकता है और जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। रुक जाने को कवि मरने के समान कहते हैं, क्योंकि जब आप मन से हार जाते हैं तो जीवन की चुनौतियों का सामना करने से घबराने लगते हैं, अपने-आप को शक्तिहीन महसूस करने लगते हैं, आगे बढ़ने की इच्छाएँ मर जाती हैं, तब ज़िंदगी रुक जाती है और वह मरने के समान होती है। चलना ही जीवन है तथा रुकना मृत्यु की पहचान है। निर्झर और जीवन दोनों गतिमान हैं, अर्थात् चलते रहते हैं। निर्झर जब रुक जाता है तब वह समाप्त हो जाता है, उसका अस्तित्त्व नहीं रहता है। जीवन भी जब तक गतिशील है, तब तक जीवित है। जब उसकी गति समाप्त हो जाती है, तब उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत कविता हमें आशावादी जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

निर्झर कहता है कि हमें विघ्न और विपत्तियों की चिन्ता न कर निरन्तर आगे बढ़ते जाना चाहिए। मार्ग में आनेवाली बाधाओं को अपनी बहादुरी एवं सूझ-बूझ से दूर हटाकर आगे ही आगे बढ़ते रहना असल जीवन है। पीछे मुड़कर अर्थात् अतीत को नहीं देखना चाहिए, क्योंकि उससे कुछ भी मिलने वाला नहीं है। इंसान को निरन्तर आलस्य को त्यागकर हर क्षण अपने जीवन को गतिमान बनाए रखना होगा, क्योंकि गति ही जीवन है। जिस दिन व्यक्ति निष्क्रिय हो जाएगा, उस दिन निर्जीव व्यक्ति के समान बन जाएगा और यह निष्क्रियता ही मरण का दूसरा नाम है।

4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न –

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. आरसी प्रसाद सिंह किस पुरस्कार से सम्मानित किए गए थे?

अ) ज्ञान पीठ ब) भारत-भारती

क) मैथिलीशरण गुप्त ड) राजेन्द्र शिखर सम्मान

2. आरसी प्रसाद सिंह का जन्म स्थल कहाँ है?

अ) दरभंगा ब) मधुबन क) समस्तीपुर ड) सहरसा

3. आरसी प्रसाद सिंह का जन्म कब हुआ था?

अ) सन् 1917 ई. ब) सन् 1921 ई. क) सन् 1912 ई. ड) सन् 1911 ई.

4. कवि आरसी प्रसाद सिंह ने मर जाना किसे कहा है?

अ) प्राण निकल जाने को ब) अपमानित होने को

क) माँगने को ड) रुक जाने को

5. कवि आरसी प्रसाद के आरंभिक काव्य पर किस छायावादी कवि का विशेष प्रभाव था?

अ) सुमित्रानंदन पंत ब) जयशंकर प्रसाद

क) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ड) महादेवी वर्मा

6. निर्झर और यौवन दोनों में कौन-सी मुख्य समानता है?

अ) तरलता ब) पहाड़ से निकलना

क) आगे बढ़ना ड) किसी वस्तु को बहाना

7. कौन गिरि के अन्तर से फूटा?

अ) हिमालय ब) निर्झर क) प्रखर ड) प्रति

8. निर्झर किसे मर जाने के समान मानता है?

अ) ध्यानमग्न होना ब) रुक जाना क) निःशेष होना ड) व्यग्र होना

9. किसको सिर्फ चलते रहने की धुन है?

अ) चन्द्र-रश्मियों ब) निर्झर क) मानव ड) अंचल

10. आगे चलकर क्या होगा, ऐसा कौन नहीं सोचता?

अ) जीवन ब) यौवन क) हिमालय ड) सचेतन

11. जीवन के दो किनारे कौन-से हैं?

अ) सुख-दुःख ब) आना-जाना क) प्रेम-नफरत ड) सफल-असफल

12. निर्झर तथा जीवन दोनों के लिए क्या अनिवार्य है?

अ) पानी　　ब) गतिशीलता　　क) अग्नि　　ड) सफलता

13. 'आँधी के पत्ते' कहानी-संग्रह किसने लिखा है?

अ) मुंशी प्रेचमंद　　ब) आरसी प्रसाद सिंह　　क) रामनरेश त्रिपाठी　　ड) सुमित्रानंदन पंत

14. आरसी प्रसाद सिंह किसके कवियों में लोकप्रिय हैं?

अ) आशा　　ब) निराशा　　क) बिहार　　ड) मस्ती

15. जीवन उस किसके समान है जो अपने लक्ष्य तक पहुँचने की लगन लिए पथ की बाधाओं से मुठभेड़ करता बढ़ता ही जाता है?

अ) मैदान　　ब) बादल　　क) झरने　　ड) चंचल नदी

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. आरसी प्रसाद सिंह को .... पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अ) ज्ञान पीठ　　ब) भारत-भारती　　क) मैथिलीशरण गुप्त　　ड) राजेन्द्र शिखर सम्मान

2. आरसी प्रसाद सिंह ने .... को मर जाना कहा है।

अ) प्राण निकल जाने को　　ब) अपमानित होने को　　क) माँगने को　　ड) रुक जाने को

3. आरसी प्रसाद सिंह के आरंभिक काव्य पर .... धारा की कविता का प्रभाव था।

अ) छायावादी　　ब) हालावादी　　क) प्रगतिवादी　　ड) प्रयोगवादी

4. जब गति ही जीवन है तो मृत्यु .... है।

अ) संदिग्धता　　ब) वीरता　　क) स्थिरता　　ड) कठोरता

5. प्रस्तुत कविता के अनुसार हमें जीवन में .... रहना चाहिए।

अ) आगे बढ़ते　　ब) ऊपर-नीचे करते　　क) पीछे चलते　　ड) ड़रते-ड़रते

6. मनुष्य को .... के समान सतत् गतिशील रहना चाहिए।

अ) पेड़ों　　ब) निर्झर　　क) मनुष्य　　ड) प्राणियों

7. कवि आरसी प्रसाद के आरंभिक काव्य पर .... छायावादी कवि का विशेष प्रभाव था।

अ) सुमित्रानंदन पंत ब) जयशंकर प्रसाद क) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ड) महादेवी वर्मा

8. निर्झर और यौवन दोनों में .... यह मुख्य समानता है।

अ) तरलता ब) पहाड़ से निकलना क) आगे बढ़ना ड) किसी वस्तु को बहाना

9. 'आँधी के पत्ते' कहानी-संग्रह .... जी की है।

अ) मुंशी प्रेचमंद ब) आरसी प्रसाद सिंह क) रामनरेश त्रिपाठी ड) सुमित्रानंदन पंत

10. आरसी प्रसाद सिंह का प्रथम कविता-संग्रह .... है।

अ) आजकल ब) कलापी क) संचयिता ड) आरसी

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :-

निर्झर - झरना।

मनमानी - मन के मुताबिक बर्ताव।

रोड़ा - टुकड़ा, बाधक वस्तु, बाधक तत्त्व।

यौवन - जवानी।

तट-तीर - किनारा।

मस्ती - आनंद।

मदमाता - मद में चूर।

गिरि - पर्वत।

दुर्दिन - बुरे दिन।

घड़ी - काल का एक प्राचीन मान, जो चौबीस मिनट का होता है।

6. स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :-

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. ड) राजेन्द्र शिखर सम्मान
2. क) समस्तीपुर
3. ड) सन् 1911 ई.
4. ड) रुक जाने को
5. अ) सुमित्रानंदन पंत
6. क) आगे बढ़ना
7. ब) निर्झर
8. ब) रुक जाना

9. ब) निर्झर	10. ब) यौवन
11. अ) सुख-दुःख	12. ब) गतिशीलता
13. ब) आरसी प्रसाद सिंह	14. क) बिहार
15. क) झरने	

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. ड) राजेन्द्र शिखर सम्मान	2. ड) रुक जाने को
3. अ) छायावादी	4. क) स्थिरता
5. अ) आगे बढ़ते	6. ब) निर्झर
7. अ) सुमित्रानंदन पंत	8. क) आगे बढ़ना
9. ब) आरसी प्रसाद सिंह	10. ब) कलापी

7. सारांश :-

1. 'जीवन का झरना' कविता कवि आरसी प्रसाद सिंह की प्रेरणादायी कविता है, जिसमें उन्होंने जीवन की तुलना झरने से करते हुए निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा दी है। कवि के अनुसार गतिशीलता ही झरने का अस्तित्त्व है। जिस दिन उसकी गतिशीलता बाधित होगी, उसी दिन उसका अस्तित्त्व समाप्त हो जाएगा। उसी प्रकार क्रियाशीलता ही मनुष्य का जीवन है।
2. सुख और दुःख-दोनों स्थितियों में ड़टकर बिना रुके मनुष्य को झरने के समान लक्ष्य की ओर बढ़ते ही रहना चाहिए।
3. जिस प्रकार झरना वन के पेड़ों, पत्थरों से टकराता है और आगे बढ़ता है, उसी प्रकार मनुष्य को कठिन से कठिन समय में भी झरने की तरह यौवन की गति को थामकर हर बाधाओं का सामना करते हुए संघर्षरत रहना चाहिए।
4. कवि ने नाविक को प्रतीक बनाकर उन लोगों की तरफ़ संकेत किया है, जो असफलता और संघर्ष के डर से कुछ न करते हुए निराशा में डूबे रहते हैं। जो वीर और हिम्मतवाले लोग होते हैं, वे मुसीबतों और बाधाओं से न घबराकर लड़ते हुए अपने लक्ष्य की ओर चलते हैं और सफलता उनके कदम चूमती है।

5. कवि झरने के माध्यम से समूचे मानव-जाति को सीख देते हैं कि पीछे मुड़कर अर्थात् अतीत को नहीं देखना चाहिए, क्योंकि उससे कुछ भी मिलने वाला नहीं है। इंसान को निरन्तर आलस्य को त्यागकर हर क्षण अपने जीवन को गतिमान बनाए रखना होगा, क्योंकि गति ही जीवन है। जिस दिन व्यक्ति निष्क्रिय हो जाएगा, उस दिन निर्जीव व्यक्ति के समान बन जाएगा और यह निष्क्रियता ही मरण का दूसरा नाम है।

6. 'जीवन का झरना' एक आशावादी कविता है। रुक जाने को कवि मरने के समान कहते हैं, क्योंकि जब आप मन से हार जाते हैं, तो जीवन की चुनौतियों का सामना करने से घबराने लगते हैं, अपने-आप को शक्तिहीन महसूस करने लगते हैं, आगे बढ़ने की इच्छाएँ मर जाती हैं तब ज़िंदगी रुक जाती है और वह मरने के समान होती है। चलना ही जीवन है तथा रुकना मृत्यु की पहचान है। निर्झर और जीवन दोनों गतिमान हैं, अर्थात् चलते रहते हैं।

7. कवि के अनुसार जीवन का मूल धर्म है - कर्तव्यनिष्ठता के साथ प्रगति-पथ पर चलते रहना। यही जीवन की विशेषता है। गतिहीन होने का अर्थ है - मृत्यु को प्राप्त हो जाना। अतः मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए, मानवता के आदर्शों को स्थापित करने के लिए इंसान को सदैव चलते रहना होगा।

8. स्वाध्याय :-

8.1 लघुत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. कवि ने जीवन की समानता, झरने से किन-किन रूपों में की है?
2. कविता में आई पंक्ति 'सुख-दुःख' के दोनों तीरों से' कवि का क्या आशय है? मानव जीवन में इनका महत्त्व क्या है?
3. संपूर्ण कविता में 'झरना' मानव जीवन के विभिन्न भाव-बोधों से जुड़ता है, कैसे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'बाधा के रोड़ों से लड़ता' उक्त पंक्ति का आशय, जीवन को कैसे और कब-कब प्रभावित तथा प्रेरित करता है? अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'जीवन का झरना' कविता में मानव का मृत हो जाना क्यों और कब बताया गया है?
6. कविता की उन पंक्तियों को लिखिए, जो मानव मन को संघर्ष के लिए प्रेरित करती हैं?

निम्नलिखित पंक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी।
   सुख दुःख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी।

कब फूटा गिरी के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।

2. निर्झर में गति हैं, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

3. लहरें उठती है गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति है जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।

4. निर्झर कहता है – बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है – बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।
चलना है – केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए।

1. निर्झर क्या कहना चाहता है और क्यों?
2. ''जीवन का झरना' कविता में कवि ने जीवन की तुलना झरने से करते हुए निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा दी है।' अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
3. 'जीवन का झरना' कविता में कवि झरने के माध्यम से समूचे मानव–जाति को कौन–सी सीख देना चाहते हैं?
4. 'जीवन का झरना' इस कविता के उद्‌देश्य–पक्ष को विशद कीजिए।

9. क्षेत्रीय कार्य :–

1. 'जीवन का झरना' जैसी ही प्रकृति के द्वारा मानव जीवन के विविध भावों को अभिव्यक्त करनेवाली कविताओं को खोज कर पढ़िए और मित्रों से चर्चा कीजिए।
2. 'जीवन का झरना' जैसी ही जीवन में आशावादी भावों का संचार करने वाली अन्य कविताएँ खोजिए और अपने विचार लिखिए।
3. 'जीवन का झरना' के समान मराठी की एक कविता को पढ़िए तथा दोनों की तुलना कीजिए।

4. प्रस्तुत कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए :-

1. साहित्य अकादमी पुरस्कृत मैथिली कृति 'सूर्यमुखी'- आरसी प्रसाद सिंह।
2. 'कलापी' (काव्य-संग्रह) - आरसी प्रसाद सिंह।
3. नन्द दास (प्रबंध-काव्य)- आरसी प्रसाद सिंह।
4. जीवन और यौवन (काव्य-संग्रह) - आरसी प्रसाद सिंह।

❑❑❑

3. पहचान

– डॉ. देवेन्द्र दीपक

अनुक्रम

1. उद्‌देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय–विवरण

    3.1 डॉ. देवेन्द्र दीपक जी का परिचय

    3.2 'पहचान' कविता का परिचय

    3.3 'पहचान' कविता का आशय
4. स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं–अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्‌देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) कवि डॉ. देवेन्द्र दीपक जी के जीवन परिचय एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2) डॉ. देवेन्द्र दीपक जी की काव्य–विशेषताओं को समझ पाएँगे।
3) 'चापलूस' एवं 'वफादार' इन दोनों संकल्पनाओं को गहनता से जान सकेंगे।
4) 'चापलूस' एवं 'वफादार' इन दोनों के बीच के अंतर को जान सकेंगे और अच्छे–बुरे की पहचान से वाकिफ हो सकेंगे।
5) शातीर चापलूसों से घिरे रहना किस कदर नुकसानदेह हो सकता है, इसे भलि–भाँति समझ पाएँगे।

2. प्रस्तावना –

हिंदी के एक वरिष्ठ साहित्यकार, राष्ट्र–चिंतक एवं काव्य–पुरूष के रूप में डॉ. देवेन्द्र दीपक जी को जाना जाता है। इनका नाम समकालीन कवियों में बड़े ही आदर से लिया जाता है। इनका रचना–संसार वैदिक संस्कृति और इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। इनकी रचनाओं में सांस्कृतिक उन्मेष, सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय पर विशेष बल दिखाई देता है। इनकी कविताओं के माध्यम से समाज–जीवन के तत्त्व और उसके मूल्यों की पड़ताल की जा सकती है। प्रस्तुत कविता में चापलूस एवं वफादार की पहचान कर चापलूसों से बचे रहने के बारे में कवि ने सचेत किया है।

3. विषय–विवेचन –

डॉ. देवेन्द्र दीपक हिंदी साहित्य–जगत् के अन्यतम हस्ताक्षर हैं। उनकी कविताएँ समाज को सही जीवन जीने के रास्ते पर चलने के लिए प्रवृत्त करती हैं। जीवन–मूल्यों की ओर इंगित करती हुई उनकी कविताएँ सही–गलत और अच्छे–बुरे की पहचान की दृष्टि से इंसान को आगाह करती हैं। प्रस्तुत कविता भी चापलूस एवं वफादार को सही मायने में पहचानने की कला को वृद्धिंगत करते हुए चापलूसों की धोखाधड़ी से बच कर रहने की दृष्टि से सचेत करती है।

3.1 डॉ. देवेन्द्र दीपक जी का जीवन परिचय –

हिंदी के प्रतिष्ठित कवि देवेन्द्र दीपक जी का पूरा नाम डॉ. देवेन्द्र कुमार मेहता दीपक है। उनके पिताजी का नाम श्री. मूलराज मेहता है। उनका जन्म अपने ननिहाल बरनाला (पंजाब) में दि. 31 जुलाई, सन् 1934 ई. को हुआ। उन्होंने हिंदी तथा अंग्रेजी विषय को लेकर एम. ए. किया है तथा पीएच. डी. की उपाधि भी हासिल की है। साथ ही उन्हें 'साहित्य रत्न' उपाधि से भी नवाजा गया है।

डॉ. देवेन्द्र दीपक जी ने वर्ष 1959 से वर्ष 1979 के बीच म. प्र. शासन में पन्ना, अंबिकापुर, रीवा, सीधी, रतलाम, जगदलपुर के स्नातक–स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में हिन्दी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। साथ ही प्रधानाचार्य के रूप में वर्ष 1979-1993 तक म. प्र. शासन के परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र (अनु. जाति) भोपाल में वे कार्यरत रहे। वर्ष 1991-94 के दरमियान म. प्र. शासन उच्च शिक्षा के म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी में निदेशक के तौर पर वे कार्यरत रहे। दि. 31 जुलाई, सन् 1994 ई. को आयुक्त उच्च शिक्षा कार्यालय से विशेष कर्तव्य अधिकारी के पद से उन्होंने सेवानिवृत्ति ली। साथ ही म. प्र. साहित्य अकादमी (2005 -2010) में निदेशक के रूप में उन्होंने कार्य किया। इसके बाद 'साक्षात्कार' इस हिन्दी की श्रेष्ठ मासिकी में प्रधान सम्पादक के रूप में कार्यभार सँभाला। बाद में निराला 'सृजन पीठ' के निदेशक के रूप में कार्य किया। साथ ही उन्होंने 'सार्थक', 'अत्यल्प', 'छंद–प्रणाम', 'साहित्य–सलिला', 'पथिक', 'भारतवर्ष', 'वन्या', 'चेतना', 'प्रेरणादीप' आदि पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया है।

डॉ. देवेन्द्र दीपक जी का कृतित्व –

1. कविता–संग्रह – 'सूरज बनती किरण', 'मास्टर धरमदास'।

2. आपातकालीन कविताएँ – 'बंद कमरा : खुली कविताएँ'।

3. अन्त्यज कविता – 'हम बौने नहीं', 'मेरी इतनी-सी बात सुनो', 'छद-प्रणाम'।

4. गाय-केंद्रित कविताएँ – 'गौ उवाच'।

5. काव्य-नाटक – 'भूगोल राजा का : खगोल राजा का', 'दबाव', 'काँवर श्रवण कुमार की', 'सुषेण-पर्व'।

6. उपन्यास – 'संत रविदास की राम कहानी'।

7. समीक्षा – 'कुण्डली चक्र पर मेरी वार्ता', 'सृष्टि उनकी : दृष्टि मेरी'।

8. निबंध – 'महक उनकी : चहक मेरी', 'वह सूरज : मैं सूरजमुखी', 'सम्प्रतिः अपने प्रति'।

9. अनुवाद – 'महान शिक्षकों के शिक्षा-सिद्धांत'।

10. लेख – 'डॉ. देवेंद्र दीपक के संपादकीय'।

11. संपादन – 'सार्थक' (कविता-संग्रह), 'अत्यल्प' (निबंध), 'शुक्लोत्तर हिंदी-निबंध'।

12. संत रविदास की आत्मकथा – 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी'।

13. हिंदी-रचना और प्रयोग – 'पुण्यस्मरण शीतलप्रसाद तिवारी ग्रंथ'।

14. पत्रिकाएँ-साहित्य – 'सलिला' (सहारनपुर), 'पथिक' (देहरादून), 'भारतवर्ष' (हापुड़), 'वन्या' (जगदलपुर), 'चेतना' का अंबिकापुर विशेषांक, 'प्रेरणादीप' (भोपाल), प्रधान संपादक – 'साक्षात्कार' (भोपाल)।

15. अन्य – 'मातृभाषा और शिक्षा' (विद्या भारती द्वारा लगभग ६ लाख प्रतियों का वितरण, कन्नड मे अनुवाद), 'स्वामी विवेकानंद और अस्पृश्यता', 'पत्रकारिता के युग-निर्माता कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर''।

विभिन्न विधाओं में लेखन-कार्य करने के साथ -साथ डॉ. देवेन्द्र जी ने युवा कल्याण के लिए भी अनेक कार्य किए हैं। साथ ही शिक्षा क्षेत्र में भी उनका कार्य सराहनीय रहा है। उन्होंने साहित्य के प्रति अपना दायित्व तो निभाया ही है, बल्कि समाज के प्रति भी उन्होंने अनेक संस्थाओं में अपना योगदान देकर दायित्व निभाया है। उनके कृतित्व से प्रभावित होकर सर्वश्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', वृन्दावन लाल वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', डॉ. जगदीश गुप्त, आचार्य विनय मोहन शर्मा आदि विद्वान उनके रचनाकर्म के प्रमुख प्रशंसक रहे हैं।

मान्यता/पुरस्कार/सम्मान –

1. साहित्य शिरोमणि (देहरादून) 1970, 2. साहित्य मनीषी (पटना) 1979, 3. हिंदी-सेवा साहित्यकार सम्मान (ग्वालियर) 1986, 4. शिक्षक साहित्यकार सम्मान (परासिया) 1987, 5. साहित्य वागीश (दिल्ली) 1990, 6. नागरिक सम्मान (भोपाल) 1990, 7. भारत-भारती सम्मान (सूरजपुर) 1991, 8. समन्वय सारस्वत सम्मान (सहारनपुर) 1990, 9. डॉ. अंबेडकर फैलोशिप (दिल्ली) 1994, 10. अभिनव शब्दशिल्पी (भोपाल) 1994, 11. लायंस शिक्षक सम्मान (भोपाल) 1994, 12. डॉ. राहुल सांत्यायन साहित्यमहोपाध्याय (उज्जैन) 1994, 13. दलित विशिष्ट सेवा सम्मान (भोपाल) 1997, 14. कलामंदिर सम्मान (भोपाल) 1999, 15. अखिल भारतीय संत रविदास सम्मेलन में संत रविदास सम्मान (उज्जैन) 2002, 16. डॉ. अंबेडकर आदित्य सम्मान (भोपाल) 2002, 17. तुलसी सम्मान (जबलपुर) 2004, 18. विचित्रकुमार सिन्हा स्मृति सम्मान (भोपाल) 2006, 19. सृजन सम्मान (रायपुर) 2006, 20. करवट कलासाधक सम्मान (भोपाल) 2006, 21. राज्य सरकार का साहित्य शिखर सम्मान (भोपाल) 2006-07, 22. हिंदी परिषद् सम्मान (चित्रकूट) 2008, 23. गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार 2014।

3.2 'पहचान' कविता का परिचय :

डॉ. देवेन्द्र दीपक जी हिंदी के एक वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। सामाजिक मूल्यों को बेहद गहराई के साथ उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज-सम्मुख रखा है। प्रस्तुत कविता डॉ. देवेन्द्र जी के 'बंद कमरा : खुली कविताएँ' कविता-संग्रह से ली गई है। यह कविता कवि ने 11 सितम्बर, 1975 को लिखी थी। इस कविता में कवि ने जीवन-यापन करते समय मनुष्य को खुद के लिए सही-गलत की पहचान करने के बारे में आगाह किया है। कवि जीवन में अपने इर्द-गिर्द रहनेवाले लोगों में चापलूस कौन है और वफादार कौन है, इसकी समय रहते पहचान करने की सलाह देते हैं। अन्यथा अपने इर्द-गिर्द मँडराते चापलूसों से घिरकर मनुष्य अपने जीवन में उनके कारण संकटों में फँस सकता है, जिससे उसकी काफी हानि होने की संभावना है। इसलिए चापलूस के मीठे बोल से अच्छा वफादार के कडवे बोल हैं। इसके साथ ही सही मायने में अपने और अपनेपन का मुखौटा पहने छलावा करनेवालों की सलीके से पहचान कर उनसे बचकर रहने की नसीहत भी कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से देने का प्रयास किया है।

3.3 'पहचान' कविता का आशय –

कवि डॉ. देवेन्द्र जी पाठकों को उद्देशित करते हुए कहते हैं कि आप लोग इस बात को माने या ना माने, लेकिन जीवन की यह सच्चाई है कि जो चापलूस होता है, वह कभी नीम के जैसा कडवा नहीं बन सकता। और जो वफादार होता है, वह सदैव शहद की भाँति मीठा नहीं हो सकता। अर्थात्, चापलूसी करनेवाले मनुष्य की जबान से हमेशा दूसरों को अपने जाल में फाँसने हेतु मीठे-मीठे बोल बोले जाते हैं, जिससे सामनेवाला खुश हो और वह अपने मन मुताबिक फायदे की बात उससे हासिल कर सके। वह कभी

नीम के जैसे कडवे बोल नहीं बोल पाता या कडवी सच्चाई से सामनेवाले को रू-ब-रू नहीं कराता। मन में छुपे निहित स्वार्थ की वजह से वह सामनेवाले की हमेशा खुशामद ही करता रहता है। इससे उल्टा जा आपका वफादार होता है, वह आपकी अच्छाई का गुणगान करेगा ही करेगा, साथ ही आपकी बुराईयों को भी आपके सामने रखेगा। आपकी गलतियों पर फटकार भी लगाएगा। फिर भले ही आपको उसकी टोकनेवाली कडवी बात से बुरा भी लगे, लेकिन आपकी गलतियों के सुधार हेतु कुछ हद तक सख्तीसे भी पेश आएगा। और यही कारण है कि वफादार के बोल सदैव शहद की भाँति मीठे नहीं हो सकते, क्योंकि वह अपका अपना होता है, गलतियों पर भी हमेशा मीठे बोल बोलकर उसे अपने स्वार्थ को हासिल करना नहीं होता है।

कवि कहते हैं कि बोलते समय किन शब्दों का, किस भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए, इसकी बारीकियों से चापलूस व्यक्ति भलि-भाँति वाकिफ होता है। अर्थात् बोलते वक्त चापलूस व्यक्ति हमेशा मीठे से मीठे शब्दों का ही चयन करता रहता है। लेकिन वही जो वफादार होता है, वह व्यक्ति के सामने मुँह पर खड़े बोल सुनाता है। अर्थात् जो सच्चा होता है, उसे मीठे बोल या शब्दों का जान-बूझकर चयन करने की जरूरत ही महसूस नहीं होती। वह सीधे-सीधे जो जैसा है, उसे खड़े शब्दों में सामनेवाले को सुनाता है। चाहे उससे सामनेवाले को अच्छा लगे या बुरा, इसके बारे में वह नहीं सोचता, परंतु वहीं, चापलूस हमेशा अपने फायदे के लिए बोलते समय सोच-समझ कर ही शब्दों का चयन करके मीठे बोल बोलता रहता है।

कवि चापलूसों से घिरे रहने का मतलब समझाते हुए छेदवाली नाव का उदाहरण देते हैं। उनका कथन है कि चापलूसों से घिरे रहने का मतलब छेदवाली नाव में सँवार होना। छेदवाली नाव में सँवार होकर आगे बढ़ने का मतलब है कि कभी-न-कभी डूब जाना। और छेदवाली नाव कभी भी किनारे पर नहीं डूबती, वह तो बीच मजधार में जाकर डूबती है, जहाँ से बचने की कोई उम्मीद नहीं हो। कवि बताना चाहते हैं कि जिस प्रकार नाव में छेद होने से उसमें थोड़ा-थोड़ा पानी भरता जाता है। उसी प्रकार छेदरूपी चापलूस व्यक्ति मीठे बोल बोलकर मनुष्य को कमजोर करता रहता है, जिससे उसकी बुराईयाँ, कमियाँ उसे दिखाई नहीं देती। परिणामवश वह अहंकार में आकर खुद का ही नुकसान कराता है। जैसे छेदवाली नाव अपने ही अंदर स्थित छेद की वजह से बीच मजधार में डूबती है।

कवि ने आगे लिखा है कि आज स्वार्थवश अपने ही लोगों के, जंगलों में ले जाकर उनके कत्ल करवाए जाते हैं। पूरी इंसानियत के लिए यह कितनी घिनौनी बात है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने ही लोगों को जंगलों में ले जाकर उनकी घृणास्पद हत्या करवाना। अपनों के ही द्वारा अपनों पर पीठ पीछे खंजर मारने वाले आसानी से पहचान में नहीं आते, तो उनकी पहचान हमें करनी होगी। इस प्रकार कई महान हस्तियों की अपनों के द्वारा ही धोखे से कत्ल कर दी गई कई वारदातें हमें इतिहास में झाँकने पर मिल जाएँगी। याने आज मनुष्य अपनापन दिखाता तो है, परंतु अपनेपन के पीछे छल, कपट, स्वार्थ छिपा रहता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर केवल अपनेपन के नाते भरोसा करता है, पर समय आने पर वही अपनापन दिखाने वाला व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु उसका, उसके भरोसे को तोड़कर भीषण कत्ल करता है। और

इतिहास गवाह है कि ऐसी दगाबाजी से की जानेवाली हत्याओं की सूची हमें इन चापलूस दगाबाजों की पहचान कर इनसे अपने-आप को बचाने की गुहार लगाती हुई सचेत करती है।

इतिहास में अपनों के ही द्वारा कत्ल कर दिए जाने के उदाहरणों की सूची हमें चापलूस और वफादार के बीच अच्छे-बुरे की पहचान करने की ओर इंगित करती है। कवि यहाँ कहना चाहते हैं कि जो सच में अपने होते हैं और जो सिर्फ अपने होने का दिखावा करते हैं, इन दोनों के बीच के फर्क को हमें पहचानना होगा। इन दो नस्लों के बीच अपनी सद्सद्विवेक बुद्धि से अच्छे-बुरे की पहचान हमें करनी होगी। क्योंकि यह दिखावा करनेवाले देखा जाए तो आस्तीन के अंदर छिपे हुए साँप की तरह होते हैं। जो खुद को ही कब काटेंगे पता भी नहीं चलता। इसलिए ऐसे लोगों से कवि सावधान रहने को कहते हैं। उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं कि हमेशा कमीज पहनते वक्त आस्तीन को देखना चाहिए। अर्थात् आप जिसे अपने आस-पास रखनेवाले हैं, या जिनसे आप घिरे हुए हैं, वे सच में आपका अच्छा चाहनेवाले हैं या बुरा चाहनेवाले, इस बारे में हमें जाँच-पड़ताल करनी चाहिए। धोखाधडी और खुद की हानि से बचने के लिए हमें लोगों को पहचानने की कला को सीखना बेहद आवश्यक है।

इस प्रकार प्रस्तुत कविता 'पहचान' में कवि डॉ. देवेन्द्र दीपक जी ने जीवन-यापन करते समय अपने नजदीक चापलूसों को न रखते हुए, जो सही-गलत की समझ दे सके और जो सही मायने में आपके हों ऐसे वफादार लोगों को रखने की, उनके संगति की सलाह देते हैं। क्योंकि चापलूस कभी-भी किसी के सगे, संगी-साथी नहीं हो सकते। चापलूस और वफादार के बीच अच्छे-बुरे की पहचान कराने के लिए प्रवृत्त कराने का जज्बा, निश्चय ही प्रस्तुत कविता की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न –

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न –

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. कौन नीम के जैसा नहीं हो सकता?

   अ) वफादार ब) चापलूस क) दोस्त ड) इतिहास-पुरूष

2. कौन सदैव शहद की तरह नहीं रहता?

   अ) चापलूस ब) दुश्मन क) इतिहास-पुरूष ड) वफादार

3. किस नाव का देर-सबेर डूबना तय है?

   अ) छेदवाली ब) लंबी क) बड़ी ड) सुंदर

4. कौन खड़े बोल बोलता है?

   अ) चापलूस ब) वफादार क) दुश्मन ड) इतिहास-पुरूष

5. छेदवाली नाव कहाँ पर नहीं डूबती?

अ) किनारे पर ब) बीच में क) मजधार में ड) गहरे पानी में

6. भाषा की बारीकियाँ किसे खूब समझ आती हैं?

अ) दोस्त को ब) वफादार को क) चापलूस को ड) अच्छे इंसान को

7. कवि किसे देखने को कहते हैं?

अ) लोगों की भीड़ को ब) अपनों को क) आस्तीनों को ड) दोस्तों को

8. जंगलों में ले जाकर किसके द्वारा कत्ल किए जाते हैं?

अ) अपनों द्वारा ब) मजदूरों द्वारा क) वफादारों द्वारा ड) जंगली जानवरों द्वारा

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न –

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'पहचान' कविता के रचयिता .... जी हैं।

अ) डॉ. देवेन्द्र दीपक ब) सुमित्रानंदन पंत क) मंगलेश डबराल ड) आरसी प्रसाद सिंह

2. डॉ. देवेन्द्र दीपक जी का जन्म वर्ष .... को हुआ था।

अ) 1933 ब) 1934 क) 1936 ड) 1937

3. 'पहचान' कविता .... काव्य-संग्रह में संकलित है।

अ) सूरज बनती किरण ब) बंद कमरा : खुली कविताएँ

क) मास्टर धरमदास ड) हम बौने नहीं

4. 'पहचान' कविता कवि ने दि. 11 सितम्बर, सन्...................... ई. को लिखी थी।

अ) 1972 ब) 1973 क) 1974 ड) 1975

5. चापलूस कभी .... नहीं हो सकता।

अ) आम ब) नीम क) अमरूद ड) सेब

6. वफादार .... बोली बोलता है।

अ) खड़ी ब) अवधी क) ब्रज ड) देहाती

7. छेदवाली नाव पर सँवार होने का अर्थ है, नाव का ....।

अ) दूसरे तट पर पहुँचना ब) देर-सबेर डूबना

क) किनारे पर ही अड़े रहना क) हमेशा तैरते रहना

8. .... नाव कभी किनारे पर नहीं डूबती।

अ) छेदवाली ब) बड़ी क) सुंदर ड) लंबी

9. वफादार हमेशा .... नहीं हो सकता।

अ) शहद ब) तेज क) कमजोर ड) नीम

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :–

चापलूस - खुशामदी, चाटुकार।

देर–सबेर - कभी ना कभी।

तमीज - अच्छे-बुरे की पहचान, विवेक।

आस्तीन - बाँह, पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढ़ँकता है, बाहीं।

6. स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :–

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. ब) चापलूस
2. ड) वफादार
3. अ) छेदवाली
4. ब) वफादार
5. अ) किनारे पर
6. क) चापलूस को
7. क) आस्तीनों को
8. अ) अपनों द्वारा

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. अ) डॉ. देवेन्द्र दीपक
2. ब) 1934
3. ब) बंद कमरा : खुली कविताएँ
4. ड) 1975
5. ब) नीम
6. अ) खड़ी
7. ब) देर–सबेर डूबना
8. अ) छेदवाली

7. सारांश :–

1. हिंदी के एक वरिष्ठ साहित्यकार, राष्ट्र–चिंतक एवं काव्य–पुरूष के रूप में डॉ. देवेन्द्र दीपक जी को जाना जाता है। समकालीन कवियों में उनका नाम आदर से लिया जाता है।
2. चापलूसी करनेवाला कभी–भी सामने से मुँह पर कड़वी सच्चाई नहीं बोलता, वह सिर्फ और सिर्फ अपना काम निकलवाने के लिए मीठे–मीठे बोल बोलता रहता है। इसलिए वह कभी–भी नीम की तरह कड़वा नहीं होता। नीम कड़वा होता है, पर मनुष्य को बीमारियों से दूर रखता है। कड़वा सच ही अंदर

की गलतियों एवं खामियों को सुधारने एवं जीवन का सही रास्ता दिखलाने में अहम् भूमिका का निर्वाह करता है।

3. वफादार मनुष्य अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहलाने का साहस रखता है। वह अच्छे गुणों को, अच्छाई और सच्चाई देखकर शहद की तरह तारीफ करता है, वहीं गलती होने पर सामने से फटकार भी लगाता है। उसके मन में चापलूसों की तरह कोई स्वार्थ नहीं रहता। वह सच्चा वफादार होता है।

4. चापलूस हमेशा सही वक्त पर सही मीठे शब्दों को चुनकर स्वार्थवश उसका प्रयोग भली-भाँति और सावधानी से सामनेवाले पर करता है। तो वफादार गलती, कमी या अवगुण पर सामने से फटकार लगाने की, खड़े बोल सुनाने की हिम्मत भी रखता है।

5. जिस प्रकार छेदवाली नाव बीच मजधार में साथ छोड़ती है, छेद की वजह से डूबती है। उसी प्रकार चापलूसों के घिरे जाने से मनुष्य को सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही होता है। चापलूसों के संग के कारण ही जीवन की नाव बीच मजधार में डूबने के लिए विवश हो जाती है।

6. जीवन में झूठे-बेईमान नकाब, मुखौटे परिधान किए हुए अनगिनत चापलूस लोग अपने इर्द-गिर्द मँड़राते रहते हैं। इससे उल्टा कुछ ऐसे भी मिल जाते हैं, जो सच्चाई की मूरत होते हैं, सही मायने में वफादार होते हैं। हमें इन चापलूस और वफादार के बीच अपने-पराए एवं अच्छे-बुरे की सही पहचान की कला को हासिल करना होगा। दोस्त के भेस में कौन शत्रु है, कौन सही मायने में अपना है और कौन अपना होने का दिखावा कर रहा है, इसे पहचानना नितांत आवश्यक है। ऐसे चापूलसों से कवि सावधान रहने को कहते हैं। धोखाधडी और खुद की हानि से बचने के लिए हमें लोगों को पहचानने की कला को सीखना बेहद आवश्यक है।

7. जीवन में जाँच-पड़ताल और अच्छे-बुरे की पहचान करते हुए हमेशा वफादारों की संगति की सलाह कविता देती है। क्योंकि चापलूस कभी-भी किसी के सगे, संगी-साथी नहीं हो सकते। चापलूस और वफादार के बीच अच्छे-बुरे की पहचान कराने के लिए प्रवृत्त कराने का जज्बा, निश्चय ही प्रस्तुत कविता की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

8. स्वाध्याय –

8.1 लघुत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. 'पहचान' कविता में कवि ने वफादार का चित्रण किस प्रकार किया है?
2. 'पहचान' कविता के आधार पर चापलूस का चित्रण कीजिए।
3. छेदवाली नाव के जरिए कवि कौन-सा संदेश देना चाहते हैं?
4. 'पहचान' कविता के माध्यम से कवि क्या बताना चाहते हैं?

5. ‘पहचान’ कविता के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित पंक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. ‘‘आप मानिए
   या न मानिए
   लेकिन यह एक सच्चाई है कि
   चापलूस
   कभी नीम नहीं हो सकता,
   और वफादार
   सदा शहद नहीं हो सकता।’’

2. ‘‘चापलूसों से घिरे रहने का अर्थ है
   छेदवाली नाव पर सवार होना
   छेदवाली नाव पर सवार होने का अर्थ है
   नाव का देर-सबेर डूबना
   और छेदवाली नाव
   कभी किनारे पर नहीं डूबती।’’

3. ‘‘इतिहास-पुरुषों की सूचियां कहती हैं -
   इन दो नस्लों के बीच
   पहचान की
   पैदा करो
   तमीज,
   आस्तीनों को देखो
   नही तो कटेगी
   कमीज।’’

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए।

1. ‘पहचान’ कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. ‘पहचान’ कविता के उद्देश्य-पक्ष पर प्रकाश ड़ालिए।
3. ‘पहचान’ कविता के आधार पर चापलूस और वफादार का चित्रण कीजिए।
4. ‘चापलूस और वफादार इन दो नस्लों के बीच पहचान की पैदा करो तमीज’ ऐसा कवि क्यों कहते हैं, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

9. क्षेत्रीय कार्य :–

1. 'पहचान' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।
2. 'पहचान' शीर्षक की अन्य हिंदी कविताओं का अध्ययन कीजिए और उनके अंतर को समझिए।
3. 'पहचान' कविता जैसी अन्य हिंदी और मराठी कविताओं की तुलना करने का प्रयास कीजिए।
4. 'पहचान' इस विषय को लेकर अपनी एक कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए :–

1. 'बंद कमरा : खुली कविताएँ' (काव्य–संग्रह) – डॉ. देवेन्द्र दीपक।
2. 'सूरज बनती किरण' (काव्य–संग्रह) – डॉ. देवेन्द्र दीपक।
3. 'मास्टर धरमदास' (काव्य–संग्रह) – डॉ. देवेन्द्र दीपक।
4. 'भूगोल राजा का : खगोल राजा का' – डॉ. देवेन्द्र दीपक।

❑❑❑

4. यहाँ थी वह नदी

– मंगलेश डबराल

अनुक्रम

1. उद्‌देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय-विवरण

   3.1 मंगलेश डबराल का परिचय

   3.2 'यहाँ थी वह नदी' कविता का परिचय

   3.3 'यहाँ थी वह नदी' कविता का आशय
4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्‌देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) कवि मंगलेश डबराल के जीवन-परिचय एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2) कवि की प्रकृति के प्रति आसक्ति एवं चिंता को जान सकेंगे।
3) प्रकृति और मानव का सहसंबंध एवं विलोप होती जाती प्रकृति की शोचनीय स्थिति को गहनता से समझ सकेंगे।
4) एक नदी का अपना पूरा अस्तित्त्व खोना, मनुष्य जीवन के लिए कितना तकलीफदेह हो सकता है, इसपर विचार कर सकेंगे।
5) प्राकृतिक संसाधनों का मनुष्य द्वारा क्षति होना, मानवी जीवन के भविष्य के लिए एक भयावह चुनौती है, इससे परिचित हो पाएँगे।
6) प्रकृति से जुड़ी मानव की सूक्ष्म-सी-सूक्ष्म संवेदनाओं को महसूस कर सकेंगे।

2. प्रस्तावना –

आधुनिक काल में कविता छायावाद, रहस्यवाद, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, नवगीत, आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक कविता, भूमंडलीकरण की कविता आदि वादों के बीच विकसित हो रही है। मंगलेश डबराल समकालीन हिंदी कवियों में सबसे चर्चित नाम हैं। भारतीय समाज के बदलते स्वरूप के अनुसार कविता के विषय में भी काफी परिवर्तन मिलता हैं। मंगलेश डबराल की कविताओं में विषय–वैविध्य मिलता है। एक समय में सामंती बोध एवं पूँजीवादी छल–कपट पर प्रहार करनेवाले मंगलेश ने भूमंडलीकरण की अर्थवादी व्यवस्था को उघाडकर रख दिया है। अक्सर उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति की आसक्ति दिखाई देती है। प्रस्तुत कविता में भी प्रकृति से जुड़ी उनकी गहन चिंतनशील संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हुई है।

3. विषय–विवेचन –

समकालीन हिंदी कवियों में मंगलेश डबराल का नाम बहुत–ही आदर से लिया जाता है। सामाजिक चेतना के साथ ही उन्होंने प्राकृतिक चेतना को भी अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के साथ ही उसकी होने वाली क्षति के प्रति की चिंता उनकी कविताओं में झलकती है। प्रस्तुत कविता में भी नदी से जुडी समूची सांस्कृतिक संवेदनाओं के खात्मे की शोचनीय चिंता तथा खत्म होते नदी के अस्तित्त्व को लेकर गहन सोच की अभिव्यक्ति हुई है।

3.1 मंगलेश डबराल का जीवन परिचय –

मंगलेश डबराल का जन्म दि. 16 मई, सन् 1948 ई. को टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के काफलपानी गाँव में हुआ। इनकी शिक्षा–दीक्षा देहरादून में हुई। संपन्न परिवार में जन्म लेने वाले कवि मंगलेश के घर में पहले से ही एक सांस्कृतिक वातावरण था। इनके पिताजी मित्रानंद जी ज्योतिषी तथा प्रसिद्ध वैद्य थे। वे गढ़वाली भाषा में कविता लिखते थे। मंगलेश को उच्च शिक्षा के लिए देहरादून आना पडा। जब वे कालेज के तृतीय वर्ष में पढ़ रहे थे, तब पारिवारिक समस्याएँ बढ़ने के कारण उन्हें दिल्ली आना पडा। दिल्ली आकर 'हिंदी पैट्रियट', 'प्रतिपक्ष', 'आसपास' में कार्य करने लगे। कुछ समय तक वे भोपाल में साहित्यिक त्रैमासिक 'पूर्वाग्रह' में सहायक संपादक रहे। छः साल तक इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में संपादक रहे। सन् 1983 ई. से दैनिक 'जनसत्ता' में साहित्य संपादक का पद सँभाला। कुछ समय 'सहारा समय' में संपादक कार्य करने के बाद सन् 2006 ई. से 'नेशनल बुक ट्रस्ट' में सलाहाकार के रूप में सेवारत हैं। समकालीन हिंदी कविता के विकास में मंगलेश डबराल का योगदान महत्त्वपूर्ण है। कविता के अतिरिक्त उन्होंने गद्य साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस् ति आदि विषयों पर नियमित लेखन किया है। ऐसे महान साहित्यकार का देहावसान दि. 9 दिसम्बर, सन् 2020 ई. में हुआ, जिससे हिंदी साहित्य–जगत् की काफी हानि हुई।

मंगलेश डबराल का कृतित्व –

1. **काव्य** – पहाड पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो दखते हैं, आवाज भी एक जगह है, मुझे दिखा एक मनुष्य, नए युग में शत्रु, कवि ने कहा।
2. **गद्य** – लेखक की रोटी, कवि का अकेलापन।
3. **यात्रा–डायरी** – एक बार आयोवा।
4. **पटकथा–लेखन** – नागार्जुन, निर्मल वर्मा, महाश्वेता देवी, यू. आर. अनंतमूर्ति, कुर्रतुल ऐन हैदर तथा गुरुदयाल सिंह पर केंद्रित वृत्त–चित्रों का पटकथा लेखन।
5. **संपादन** – रेतघड़ी एवं कविता उत्तरशती।
6. **अनुवाद –**

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, हांस माग्नुस ऐंत्सेंस्बर्गर (जर्मन), यानिस रित्सोस (यूनानी), ज्वग्नीयेव हेर्बत, तादेऊश रूजेविच (पोलिश), पाब्लो नेरूदा, एर्नेस्तो कार्देनल (स्पानी), डोरा गाबे, स्तांका पेंचेवा (बल्गारी) आदि की कविताओं का हिंदी में अनुवाद।

सम्मान एवं पुरस्कार –

ओमप्रकाश स्मृति सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, शमशेर सम्मान, पहल सम्मान, कुमार विकल स्मृति सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान।

3.2 'यहाँ थी वह नदी' कविता का परिचय :

मंगलेश डबराल की 'यहाँ थी वह नदी' कविता 'नये युग में शत्रु' काव्य–संग्रह में संकलित है। हिंदी कविताओं में प्रकृति अपने सुंदरतम् रूप में चित्रित है। समकालीन कविता में भी पर्यावरण को बचाने की चिंता प्रमुख है। मंगलेश डबराल ने अपनी समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण की चिंता को प्रमुख रूप से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत कविता में एक नदी के सूखकर रेत हो जाने की त्रासदी को मार्मिक ढ़ंग से मंगलेश जी ने प्रस्तुत किया है। उन्होंने पर्यावरण की समस्या को प्रकृति और मनुष्यता के संकट के समकक्ष रखकर समझाया है कि वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण के नाम पर लोक–जीवन और प्राकृतिक जीवन नष्ट होने की कगार पर है। ऐसे में उसे बचाने के लिए कवि अपनी कविता के माध्यम से हमारी लोक–संस्कृति तथा प्राकृतिक जीवन को अपनाते हुए उसकी सुरक्षा की दृष्टि से पहल करने के लिए प्रवृत्त करते हैं।

3.3 'यहाँ थी वह नदी' कविता का आशय –

प्रस्तुत कविता में कवि मंगलेश डबराल अपने बचपन की स्मृतियों में एक नदी की प्रवाहित धारा तथा उसके तट का चित्रण करते हुए कहते हैं कि, नदी की वह धारा बहती हुई उस जगह पर पहुँचना चाहती है, जहाँ पर आदमी उस धारा में नहाने के लिए जा रहा था। उसे नदी तट पर लोगों की चहल–पहल दिखाई देती थी। वह नदी अपनी गति से निरंतर बहती रहती थी। उस नदी की प्रवाह–धारा इतनी विस्तृत और विशाल थी कि उसे पार करने के लिए हमेशा वहाँ पर एक नाव खड़ी रहती थी, जिसे हर पल लोगों का

इंतजार रहता था। साथ ही उस नदी के किनारे पर पंछियों की चहचहाट भी रहती थी। पंछियों के कतार के कतार पानी की खोज में वहाँ आकर नदी में उतरते थे। इससे नदी तट का माहौल हमेशा खुशनुमा रहता था।

कवि कहते हैं कि उस नदी का पानी इतना साफ और निर्मल था कि बचपन में कवि उसके पानी में अपना चेहरा देख पाते थे, लेकिन पानी में उठनेवाली लहरों के कारण उन्हें अपना चेहरा हिलता हुआ नजर आता था। नदी के किनारे ही लोगों ने अपना बसेरा बसाया था, जिसमें से एक घर कवि का भी था। यह नदी अधिकतर अपने उफान में रहती थी। फिर भी वह अपने दोनों किनारों, तटों एवं पत्थरों से तथा आस-पास की प्रकृति से बहुत प्यार करती थी, जिस कारण वह उन्हें कोई चोट नहीं पहुँचाती थी। नदी के किनारे पर बसे हुए लोगों का दिन, इसी नदी को देखकर शुरू होता था। नदी प्रवाह की, लहरों की आवाजें तथा आस-पास का शोर उन सभी घरों तक सुनाई देता था। नदी की लहरें उनकी दरवाजों तक आती थी, मानों वे लहरें उनकी दरवाजों पर थपकियाँ देकर उन्हें बुला रही हो।

कवि आज उसी जगह पर खड़े होकर अपनी स्मृतियों में स्थित उस नदी को याद कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि उन्हें आज भी याद है कि जहाँ पर आज रेत ही रेत फैली हुई है, वहीं पर उस नदी की धारा निरंतर बहा करती थी। जिसके पानी में कवि अपने चेहरे का हिलता हुआ प्रतिबिंब देखा करते थे। इसी नदी के किनारे वह नाव लोगों का इंतजार करती हुई खड़ी रहती थी। आज जहाँ नदियाँ हैं, वहाँ पानी साफ नहीं होता। इंसान ने प्रकृति को इस कदर क्षति पहुँचाई है की जलचर जीव भी खत्म होने के कगार पर हैं। पानी इतना दूषित हो गया है कि पानी में अपना चेहरा देखना भी नामुमकिन-सा हो गया है। कवि की स्मृतियों में पहले नदी के दोनों किनारों पर मानवी जीवन खुशहाली से बसर कर रहा था। अब जब नदी ही नहीं रही, तो वहाँ के इर्द-गिर्द का मानवी जीवन भी नहीं रहा। जो सुनहरा रूप, जो हरियाली कवि ने बचपन में देखा था, आज वहाँ दूर-दूर तक बंजर रेत के अलावा कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। और यह स्थिति निश्चय ही शोचनीय है। इस चिंता को कवि प्रस्तुत कविता के माध्यम से गहनता के साथ प्रकाशित करते हैं।

आज जब फिर उस जगह को कवि देखतें हैं, तो वहाँ वह न पुरानी चहल-पहल है, न लोगों का शोर है और न ही पंछियों के कतार है और न उनकी चहचहाट दिखती है। उन्हें वहाँ अब सिर्फ रेत ही रेत दिखाई दे रही है। अर्थात् आज उस नदी की धारा सूख गई है। वहाँ उसका कोई अस्तित्त्व ही नहीं रहा है। आज वहाँ रात के समय में लोग जब नींद के आगोश में रहते हैं, तो कभी-कभार उन्हें वहाँ फैली हुई रेत से सिर्फ एक आवाज सुनाई देती है। याने कवि बताना चाहते हैं कि मानों इस आवाज के जरिए वह नदी अपने अस्तित्व को तिलमिलाकर ढूँढ़ रही हो।

प्रस्तुत कविता में कवि मंगलेश डबराल आधुनिकता और विकास के नाम पर नदियों की इस दुर्दशा को देखकर अपनी यादों-स्मृतियों में उसका पूर्व-वैभव देखते हैं। निरंतर प्रवाहमान रहनेवाली नदी की धारा आधुनिक जीवन-शैली, वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण की प्रक्रिया, बड़ी-बड़ी कंपनियों के द्वारा किए गए इस्तेमाल के कारण नदी सूखकर रेत में तपदील हुई है, आधुनिकता की चपेट ने उसके अस्तित्त्व को ही खत्म कर दिया है और फिर यह सिर्फ उसके अकेले के अस्तित्त्व के खत्म होने की विवंचना नहीं है, बल्कि उसके

ईर्द-गिर्द के सारे प्राकृतिक माहौल - लोगों की चहल-पहल, शोर, पंछियों की चहचहाट, लहरों की आवाजें, उसके प्राकृतिक सौंदर्य से सजे दोनों किनारे, लोगों के इंतजार में खड़ी नाव आदि सभी के अस्तित्त्व के खत्म होने की बेहद शोचनीय पीड़ा को कवि ने अभिव्यक्ति दी है। इस प्रकार एक नदी के सूखकर रेत हो जाने की बेहद गंभीर समस्या को बहुत-ही मार्मिकता के साथ कवि ने यहाँ चित्रित किया है।

4. स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न -

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :-

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. मंगलेश डबराल का जन्म कब हुआ?
   अ) दि. 16 मार्च, सन् 1945 ई. ब) दि. 16 मार्च, सन् 1948 ई.
   क) दि. 16 मार्च, सन् 1951 ई. ड) दि. 16 मार्च, 1958 ई.
2. मंगलेश डबराल का जन्मस्थल कौन-सा है?
   अ) सारंगपानी ब) लखनऊ क) काफलपानी ड) इलाहाबाद
3. मंगलेश डबराल की शिक्षा-दीक्षा कहाँ से हुई?
   अ) देहरादून ब) दिल्ली क) लखनऊ ड) इलाहाबाद
4. मंगलेश डबराल के पिताजी मित्रानंद जी किस भाषा में कविता लिखते थे?
   अ) ब्रज ब) गढ़वाली क) अवधी ड) मागधी
5. मंगलेश डबराल की मृत्यु कब हुई?
   अ) दि. 9 दिसम्बर, सन् 2021 ई. ब) दि. 9 दिसम्बर, सन् 2020 ई.
   क) दि. 9 दिसम्बर, सन् 2019 ई. ड) दि. 9 दिसम्बर, सन् 2022 ई.
6. नदी जल्दी कहाँ पहुँचना चाहती थी?
   अ) जहाँ पर आदमी नहाने जा रहा था ब) जहाँ दूसरी नदी से उसका संगम होनेवाला था
   क) जहाँ पर वह समंदर से मिलनेवाली थी ड) जहाँ पर बच्चे खेल रहे थे
7. पानी की खोज में कौन आ रहे थे?
   अ) लोगों की भीड़ ब) जानवरों का झुंड क) पंछियों के कतार ड) बच्चे
8. बचपन में कवि नदी में क्या हिलता हुआ देखता था?
   अ) मछली ब) नाव क) चेहरा ड) पत्थर
9. लोगों का दिन किससे शुरू होता था?
   अ) झगड़े से ब) घूमने से क) पेड़ों से ड) नदी से

10. प्रस्तुत कविता में कवि ने किसके प्रति स्नेह और चिंता प्रकट की है?

अ) नदी ब) अंबर क) सागर ड) पेड़

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'यहाँ थी वह नदी' कविता के कवि .... हैं।

   अ) उदय प्रकाश ब) दुष्यंत कुमार क) मंगलेश डबराल ड) सुमित्रानंदन पंत

2. मंगलेश डबराल का जन्म दि. 16 मार्च, इ सन् .... ई. में हुआ।

   अ) 1945 ब) 1948 क) 1951 ड) 1958

3. मंगलेश डबराल का जन्म .... गाँव में हुआ।

   अ) सारंगपानी ब) काफलपानी क) गढ़वाल ड) इलाहाबाद

4. लोगों का इंतजार .... कर रही थी।

   अ) बस ब) रेलगाडी क) नाव ड) घोडा-गाडी

5. पंछियों की कतार .... की खोज में आ रही थी।

   अ) पेड़ों ब) खाने क) जगह ड) पानी

6. ''लहरें .... को थपथपाती थीं,

   बुलाती हुई लगातार।

   अ) घरों ब) खिडकियों क) पेड़ों ड) दरवाजों

7. उफनती नदी .... को प्यार करती थी।

   अ) धरती और आसमान ब) पेड़ और पौधों क) तटों और पत्थरा ड) लोगों

8. कवि का घर बचपन में .... के किनारे था।

   अ) नहर ब) समंदर क) तालाब ड) नदी

9. कवि बचपन में .... में अपना हिलता हुआ चेहरा देखा करते थे।

   अ) तालाब ब) झरने क) नदी ड) समंदर

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :–

इंतजार – राह देखना।

कतार – पँक्ति।

खोज – तलाश, शोध।

तट – किनारा।

उफान – पानी का फेन के साथ ऊपर उठना।

6. स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :–

4.1 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. ब) **16** मार्च, **1948**

2. क) काफलपानी

3. अ) देहरादून

4. ब) गढ़वाली

5. ब) **9** दिसम्बर, **2020**

6. अ) जहाँ पर आदमी नहाने जा रहा था

7. क) पंछियों के कतार

8. क) चेहरा

9. ड) नदी से

10. अ) नदी

4.2 बहुविकल्पी प्रश्न :–

निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए वाक्य फिर से लिखिए।

1. क) मंगलेश डबराल
2. ब) 1948
3. ब) काफलपानी
4. क) नाव
5. ड) पानी
6. ड) दरवाजों
7. क) तटों और पत्थरों
8. ड) नदी
9. ड) नदी में

7. सारांश :–

1. मंगलेश डबराल समकालीन कविता के प्रमुख कवि हैं।
2. समकालीन कविता पर्यावरण की समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए प्रकृति को बचाने का आवाहन करती है।
3. कवि की स्मृतियों में उनके बचपन में एक निरंतर प्रवाहित नदी के इर्द–गिर्द का माहौल हमेशा खुशनुमा रहा करता था।
4. कवि को तब उस नदी के किनारों पर हमेशा लोगों की चहल–पहल, शोर–शराबा, पंछियों की चहचहाट, उफान के समय नदी की लहरों की आवाजें, लोगों की राह देखती नाव आदि बेहद खुशहाल नजारा दिखाई देता था।

5. उफान के समय नदी की लहरें लोगों के दरवाजों तक आती थी, लेकिन नदी अपने तटों या अन्य प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट नहीं करती थी, बल्कि उनसे अपनापन और स्नेह रखती थी।

6. नदी खुद ही प्रकृति का अलौकिक रूप होने के कारण उससे जुड़ी हर कड़ी में सुंदरता के दर्शन को हम पाते हैं।

7. अपने-आप को बेहद विकसित एवं आधुनिक सिद्ध करने में लगातार जुटे मनुष्य ने अपने विकास के नाम पर नदी जैसी प्राकृतिक सुंदरता और उसके अनंत उपकार की तरफ भी अनदेखा करते हुए उसे हानि पहुँचाई है, अपने अतिरिक्त गैर-इस्तेमाल से उसे इस कदर दूषित किया कि अब उसका अस्तित्व ही खो गया है। अब निरंतर बहनेवाली नदी सूखकर रेत में परिवर्तित हो रही है और इस भयावह सत्य का उद्घाटन अपनी कविता के माध्यम से कवि ने बेहद मार्मिक ढ़ंग से किया है।

8. स्वाध्याय –

8.1 लघुत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. कवि मंगलेश डबराल की स्मृतियों में स्थित नदी का वर्णन कीजिए।
2. 'यहाँ थी वह नदी' कविता में कवि द्वारा वर्णित नदी की आज की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।
3. कवि की नदी को लेकर बचपन की स्मृतियों को वर्णित कीजिए।
4. कविता में अभिव्यक्त नदी के प्रति कवि की चिंता को अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'यहाँ थी वह नदी' कविता के शीर्षक सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित पंक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. ''बचपन की उस नदी में
हम अपने चेहरे देखते थे हिलते हुए
उसके किनारे थे हमारे घर
हमेशा उफनती
अपने तटों और पत्थरों से प्यार करती।''

2. ''हमें याद है
यहाँ थी वह नदी इसी रेत में
जहाँ हमारे चेहरे हिलते थे
यहाँ थी वह नाव इंतजार करती हुई।''

3. ''अब वहाँ कुछ नहीं है
सिर्फ रात को जब लोग नींद में होते हैं
कभी-कभी एक आवाज सुनाई देती है रेत से।''

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए।

1. 'यहाँ थी वह नदी' कविता में नदी के प्रति जो स्नेह और चिंता प्रकट की है, उसे विशद कीजिए।
2. 'यहाँ थी वह नदी' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'यहाँ थी वह नदी' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'यहाँ थी वह नदी' कविता पर्यावरण क्षति एवं उसकी चिंता के लिए प्रवृत्त करनेवाला उत्तम उदाहरण है, स्पष्ट कीजिए।

9. क्षेत्रीय कार्य :–

1. नदी पर आधारित कविता लिखने का प्रयास कीजिए।
2. 'यहाँ थी वह नदी' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।
3. नदी से संबंधित अन्य हिंदी कविताओं का अध्ययन कीजिए।
4. 'यहाँ थी वह नदी' कविता जैसी अन्य हिंदी और मराठी कविताओं की तुलना करने का प्रयास कीजिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए :–

1. 'नये युग में शत्रु' (काव्य–संग्रह) – मंगलेश डबराल।
2. 'पहाड़ पर लालटेन' (काव्य–संग्रह) – मंगलेश डबराल।
3. 'हम जो देखते हैं' (काव्य–संग्रह) – मंगलेश डबराल।

❑❑❑

इकाई –1
साक्षात्कार लेखन

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने पर आप –

1. साक्षात्कार का स्वरूप एवं प्रविधि से परिचित होंगे।
2. साक्षात्कार के महत्त्व एवं उद्देश्य से अवगत होंगे।
3. साक्षात्कार लेखन की कला का ज्ञान होगा।
4. साक्षात्कार देने और लेने की क्षमता का विकास कर सकेंगे।
5. साक्षात्कारकर्ता के रूप में विविध क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

आज के युग में साक्षात्कार की भूमिका बढ़ती जा रही है। हिंदी में साक्षात्कार को एक विधा के रूप में ही देखा गया है और इसे साहित्य तक सीमित रखा गया। अब यह साहित्यिक विधा तक सीमित न रहते हुए रोजगार प्राप्ति का जरिया बन गया है। सरकारी, गैर सरकारी और व्यावसायिक क्षेत्रों में साक्षात्कार किसी भी उम्मीदवार का व्यक्तित्व परखने के लिए आवश्यक होता है। अब अनेक कंपनियाँ छात्रों को अध्ययन के दौरान विश्वविद्यालयों में आकर प्रतिभाशाली युवाओं को नौकरियों का चयन कर रही हैं। संचार और मीडिया क्षेत्रों में भी नौकरी की व्यापक संभावनाएँ निर्माण हो रही हैं। इसके अलावा अनुसंधान के क्षेत्र में तथ्यों को प्राप्त करने का माध्यम बन गया है। शिक्षा में साक्षात्कार अनिवार्य बना है। इन व्यापक क्षेत्रों के मद्देनजर साक्षात्कार लेखन विषय को पाठ्यक्रम में शामिल करना अनिवार्य है। अतः इस अध्ययन सामग्री में साक्षात्कार का स्वरूप, प्रविधि को समझने का प्रयास करेंगे, साथ ही साक्षात्कार क्यों महत्त्वपूर्ण है, इसकी विशेषताएं क्या हैं एवं साक्षात्कार के उद्देश्य क्या होने चाहिए। इन बिंदुओं पर क्रमबद्ध रूप से चर्चा करेंगे।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 साक्षात्कार का स्वरूप

'साक्षात्कार' का शाब्दिक अर्थ है–देखना, अनुभव करना। सामने आना, मुलाकात, भेंटवार्ता। साक्षात्कार को मराठी में 'मुलाखत' और अंग्रेजी में 'Interview' कहा जाता है। Inter + view जहां प्रथम शब्द Inter का अर्थ है 'आन्तरिक' तथा द्वितीय शब्द 'View' का अर्थ है 'अवलोकन करना'। सामान्य अर्थ में किसी व्यक्ति से भेंट करना और उससे बातों–बातों में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना साक्षात्कार है। तात्पर्य साक्षात्कार दो या दो से अधिक लोगों के बीच एक औपचारिक बातचीत है, आमतौर पर एक

व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता के साथ, जो जानकारी प्राप्त करने, योग्यता का आकलन करने, या नौकरी, प्रवेश या अन्य उद्देश्यों के लिए उम्मीदवार की उपयुक्तता का मूल्यांकन करने के लिए प्रश्न पूछता है।

अन्य शब्दों में साक्षात्कार का अर्थ नियोजित ढंग से कुछ तथ्यों अथवा घटनाओं की आंतरिक विशेषताओं को ज्ञात कर उनके बीच पाये जाने वाले कार्य-कारण संबंध को ज्ञात करना होता हैं। सूचना प्रदान करने वाले को साक्षात्कार दाता (Interview) एवं सूचना प्राप्त करने वाले को साक्षात्कारकर्ता (Interviewer) कहा जाता है। साक्षात्कारकर्ता को प्रश्नकर्ता।

साक्षात्कार एक आमने-सामने वाली अन्तर्वैयक्तिक भूमिका अर्थात् परिस्थिति है जिसमें एक व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता, दूसरे व्यक्ति, जिसका साक्षात्कार किया जा रहा है उत्तरदाता से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहता हैं। इसका अभिप्राय एक-दूसरे से है।

परिभाषाएँ –

जॉन जी डोले के शब्दों में- साक्षात्कार एक उद्देश्ययुक्त वार्तालाप है।

एच. पी. यंग के अनुसार- ''साक्षात्कार क्षेत्रीय कार्य की एक विशेष तकनीक है, जिसका प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के व्यवहार को देखने, उनके कथनों को लिखने तथा सामाजिक अथवा अन्तः क्रिया के स्पष्ट परिणामों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।''

वी. एम. यामर के अनुसार- ''साक्षात्कार दो व्यक्तियों के मध्य पायी जाने वाली एक विशेष सामाजिक परिस्थिति है जिसमें एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अन्तर्गत दोनों व्यक्ति परस्पर उत्तर प्रति उत्तर करते हैं।'' साक्षात्कार तथ्यों के संकलन की एक ऐसी विशिष्ट संचार प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत दोनों पक्ष एक-दूसरे से प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा सम्बन्धित विषय पर वार्तालाप करते हैं एवं उत्तर प्रति उत्तर देते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं, कि साक्षात्कार एक ऐसी व्यवस्थित पद्धति है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी मुख्य उद्देश्य को सामने रख कर परस्पर आमने-सामने होकर संवाद, वार्तालाप एवं उत्तर-प्रयुत्तर करते हैं।

साक्षात्कार के प्रकार –

अ) चयनात्मक साक्षात्कार : जब साक्षात्कार का प्रयोग किसी भी जीविका में नवीन नियुक्ति हेतु चयन के लिए किया जाता है तो इस प्रकार के साक्षात्कार को चयनात्मक साक्षात्कार कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार में साक्षात्कार प्रदाता से उस जीविका में उपयुक्तता से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। साक्षात्कारकर्ता कुछ ऐसे प्रश्न पूछता है जिसके आधार पर साक्षात्कार प्रदाता की अभिवृत्ति, अभिक्षमता, योग्यताओं, आचरण आदि के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। इस तरह के साक्षात्कार का मूल उद्देश्य यह पता लगाना होता है कि साक्षात्कारदाता कहाँ तक अपनी अभिवृत्ति, अभिक्षमता, योग्यताओं के आधार पर नौकरी के लिए योग्य होगा।

ब) शोध साक्षात्कार : इस प्रकार के साक्षात्कार में किसी विषय पर विभिन्न व्यक्तियों के विचारों को जानने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति की रूचि उन तथ्यों में होती है जो कि साक्षात्कार देने वाले के विचारों में सम्मिलित है। इसके लिए कुछ ही प्रतिनिधि व्यक्तियों को छांटकर केवल उन्हीं का साक्षात्कार किया जाता है। इन प्रतिनिधि व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाओं के आधारपर पूर्ण जनसंख्या के विचारों के बारे में अनुमान लगाया जाता है। इसलिए इसे आदर्श साक्षात्कार भी कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य शोध समस्याओं के प्रस्तावित समाधान के बारे में एक विस्तृत ब्यौरा तैयार करना होता है। इस तरह का शोध अधिकतर उन वैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है जो किसी विशेष समस्या का उत्तर तुरन्त पा लेना चाहते है।

क) निदानात्मक साक्षात्कार : इस प्रकार के साक्षात्कार के माध्यम से साक्षात्कारकर्ता बालक या किसी व्यक्ति की समस्या के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है। किसी विद्यालय में शिक्षक द्वारा छात्रों के किसी विशेष समस्या के विषय में सूचनाएं एकत्र करने के लिये प्रयुक्त साक्षात्कार इस प्रकार के साक्षात्कार का उदाहरण है।

ड) उपचारात्मक साक्षात्कार : जब किसी छात्र की समस्या तथा उसके विषय में सूचनाएँ एकत्र कर ली जाती हैं तो उपचारात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति से इस प्रकार का वार्तालाप किया जाता है कि उसको अपनी चिन्ताओं तथा समस्याओं से मुक्त किया जा सके तथा समायोजन सही तरीके से हो सके।

इ) तथ्य संकलन साक्षात्कार : इस साक्षात्कार में व्यक्ति या व्यक्तियों के समुदाय से मिलकर तथ्य संकलित किए जाते हैं। शिक्षक इसी साक्षात्कार द्वारा छात्रों के सम्बन्ध में तथ्य एकत्रित करते हैं। इसके तीन प्रमुख उद्देश्य हैं– अन्य विधियों द्वारा संग्रहित किये गये तथ्यों में अपूर्णताओं, न्यूनताओं या कमियों को पूर्ति करना। कुछ तथ्य अन्य विधियों द्वारा प्राप्त नहीं हो पाते हैं। साक्षात्कार में उन सूचनाओं को एकत्रित करने का प्रयत्न किया जाता है जो मनोवैज्ञानिक जांचों द्वारा प्राप्त नहीं हो पाती है। पहले से संकलित की गयी सूचनाओं की पुष्टि करने के लिए तथ्य संकलन साक्षात्कार किया जाता है। तथ्य संकलन साक्षात्कार का तीसरा उद्देश्य शारीरिक रूप से अवलोकन करना है। बहुत से छात्रों में अनेक शारीरिक दोष पाये जाते हैं जिनका ज्ञान मनोवैज्ञानिक जांचों से नहीं हो सकता है। इसके साथ ही साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति का बातचीत करने तथा आचरण करने के ढंग का ज्ञान होता है।

1.3.2 साक्षात्कार– प्रविधि

व्यक्ति के अपने कुछ विचार, भावनाएँ और धारणाएँ होती हैं। इनका अध्ययन सिर्फ साक्षात्कार पद्धति के आधार पर ही किया जा सकता है। अनेक बातें गोपनीय व आंतरिक जीवन से सम्बन्धित होती हैं। साक्षात्कार के द्वारा हम इन बातों को आसानी से जान लेते हैं। साक्षात्कार वह पद्धति है जिसके द्वारा साक्षात्कारकर्ता वार्तालाप के द्वारा सूचनादाता के विचारों और भावनाओं में प्रवेश करके तथ्यों का संकलन करता है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत इस विधि का प्रयोग व्यक्ति की मानसिकता की जाँच करने के लिए प्रश्नों के माध्यम से जानने की कोशिश की जाती है।

इस प्रकार का अध्ययन शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण व नगरीय सभी स्तर के लोगों में किया जा सकता है जो सूचनादाता प्रश्नों को नहीं समझते हैं, परीक्षणकर्ता इन प्रश्नों को समझाकर उत्तर प्राप्त कर लेता है। साक्षात्कार प्रविधि एक लचीली प्रणाली है, जिसमें आवश्यकतानुसार विषय-वस्तु एवं साक्षात्कार संचालन में परिवर्तन किया जा सकता है। वास्तव में साक्षात्कार-प्रविधि को सुगमतापूर्वक और नियमानुसार चलाने के लिए उसके कुछ प्रमुख चरण होते हैं। ये प्रमुख चरण निम्नलिखित हो सकते हैं -

1. साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार करने से पूर्व (अर्थात् किसी व्यक्ति या समूह, जिसका अध्ययन किया जा रहा है या जिसे नौकरी पर लेना है) उसकी तैयारी कर लेना, अति-आवश्यक है, क्योंकि बिना प्राथमिक तैयारियों के साक्षात्कार उचित रूप से संचालित नहीं हो पाता। साक्षात्कार की तैयारी में मुख्य रूप से नौकरी दिलाने के लिए कंपनी की मूल आवश्यकता को जानना, वेतन का निर्धारण की आवश्यकता होती है। तथा शोध से जुडे साक्षात्कार में समस्या की पूर्ण जानकारी, साक्षात्कार निर्देशिका, साक्षात्कार देने वालों का चयन कर समय और स्थान निर्धारित करना तथा साक्षात्कार देनेवालों के बारे में अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होता है।

2. साक्षात्कार की संचालन प्रक्रिया

साक्षात्कार की तैयारी करने के उपरान्त मुख्य साक्षात्कार की ओर अग्रसर होना पड़ता है। इस स्तर पर साक्षात्कारदाता और साक्षात्कारकर्ता आमने-सामने होते हैं और उनमें अन्तःक्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित होता है। इसीलिए गुडे एवं हॉट ने लिखा है कि ''वास्तव में मूल रूप से साक्षात्कार सामाजिक अन्तःक्रिया की एक प्रक्रिया है।'' साक्षात्कार में सामाजिक अन्त:क्रिया की प्रथम सीढ़ी सम्पर्क की स्थापना है। सबसे पहले साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कारदाता से उचित अभिवादन के साथ मिलना चाहिए। इस सम्बन्ध में 'एक बात ध्यान रखनी आवश्यक है कि साक्षात्कारदाता से मिलने जाते समय साक्षात्कारकर्ता को सौम्य एवं गम्भीर पोशाक में होना चाहिए। साक्षात्कारदाता से मिलते ही फौरन अपना परिचय-पत्र देना चाहिए, यदि परिचय-पत्र छपा हुआ हो तो और भी अच्छा है क्योंकि इससे साक्षात्कारदाता पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इसके बाद अपना उद्देश्य स्पष्ट कर साक्षात्कार का प्रारम्भ करना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता से पहले प्राथमिक प्रश्न पूछने चाहिए, जैसे आपका नाम क्या है, क्या आप अपने परिवार के सदस्यों की संख्या बताएंगे, आपकी आयु क्या है आदि-आदि। इसके पश्चात् अध्ययन-विषय से सम्बन्धित प्रश्न पूछना चाहिए।

साक्षात्कार लेते समय यह आवश्यक हो जाता है कि साक्षात्कारकर्ता कुछ वाक्यों को बार बार दोहराए ताकि साक्षात्कारदाता का उत्साह बढ़े और वह साक्षात्कार में अधिक रुचि ले। ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए जिससे कि साक्षात्कारदाता क्रोधित हो जाए, क्योंकि ऐसा होने से साक्षात्कार तुरन्त ही समाप्त कर देना पड़ेगा और अध्ययन भी अधूरा रह जाएगा। कभी-कभी ऐसा समय आता है कि साक्षात्कारदाता अपने अनुभवों का वर्णन करते-करते भावनाओं में डुबकी लगाने लगता है और मुख्य विषय से काफी दूर चला जाता है। उस समय साक्षात्कारकर्ता का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह सावधानी से उसको मुख्य विषय की याद दिलाए।

स्मरण कराने में साक्षात्कारकर्ता को अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है जिससे कि साक्षात्कारदाता को यह महसूस हो कि वास्तव में यह बात अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। साक्षात्कार के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण बात सूचना नोट करने की भी है। जब साक्षात्कार स्वतंत्र वर्णन के रूप में होता है, तो सूचना को नोट करना एक और भी कठिन समस्या का रूप धारण कर लेता है क्योंकि बातचीत के समय अत्यधिक लिखते रहने से वार्तालाप का प्रवाह रुक जाता है और साक्षात्कार समाप्त होने का डर रहता है। साक्षात्कार में संकेत–लिपि या संकेत–शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

3. साक्षात्कार की समाप्ति

जब साक्षात्कारदाता सब–कुछ कह चुकता है तथा उसके कहने की गति अति थीमी हो जाती है या वह बीच बीच में रुकने लगता है तो समझना चाहिए कि अब साक्षात्कार समाप्ति की स्थिति में है। कभी–कभी ऐसा होता है कि सारी बात कह चुकने के बाद साक्षात्कारदाता एकाएक भय एवं आत्मग्लानि की भावना से भर जाता है कि व्यर्थ में उसने अपना गुप्त रहस्य एक अपरिचित व्यक्ति को बता दिया। वास्तव में इस प्रकार की भावना साक्षात्कार की सफलता की परिचायक है। हाँ, इस भावना को यथासम्भव दूर अवश्य कर देना चाहिए। अन्त में उसके द्वारा प्रदान की गयी सभी सूचनाओं को गुप्त रखने का आश्वासन दिया जाना चाहिए। तत्पश्चात् 'नमस्कार' कहकर, अथवा 'अच्छा' 'फिर मिलेंगे' कहकर साक्षात्कार को समाप्त कर देना चाहिए।

4. रिपोर्ट लेखन

साक्षात्कार करने के बाद जब साक्षात्कारकर्ता घर लौटता है तो उसका सर्वप्रथम कार्य साक्षात्कार की रिपोर्ट को लिखना होता है। यह भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। किसी भी स्थिति में रिपोर्ट लिखने का कार्य टालना नहीं चाहिए क्योंकि अनुसन्धान के निष्कर्ष इसी रिपोर्ट लिखने पर आधारित होते हैं। अत: प्रत्येक दशा में साक्षात्कारकर्ता को सबसे पहले रिपोर्ट लिखने का कार्य करना चाहिए। रिपोर्ट लिखते समय साक्षात्कार लेते समय लिए गए संक्षिप्त नोटों की सहायता आवश्यक है। इसके अतिरिक्त साक्षात्कारकर्ता को अपनी स्मरणशक्ति पर विश्वास करना पड़ता है। कुछ भी हो, साक्षात्कारकर्तां को रिपोर्ट लिखते समय सदैव यह प्रयत्न करना चाहिए कि रिपोर्ट सत्य एवं अत्यधिक पक्षपातरहित हो।

साक्षात्कार–प्रविधि की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों का निकटतम सम्पर्क एवं वार्तालाप होता है, और यह एक आवश्यक शर्त भी है। दूसरी मुख्य विशेषता 'विशिष्ट उद्देश्य' होता है और अंतिम विशेषता इस प्रविधि द्वारा योग्यता की परख, तथ्यों का संकलन, सामाजिक अनुसंधानों एवं सामाजिक अध्ययन हेतु सामग्री का संकलन किया जाता है।

1.3.3 साक्षात्कार का महत्त्व

जब से मानव–सभ्यता ने विकास के युग में प्रवेश किया है तब से मानवीय संसाधनों के व्यावसायिक उपयोग हेतु व्यक्ति की योग्यता मापने–परखने की नाना विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। इसी शृंखला में

साक्षात्कार चयन का मुख्य आधार है। समय के अनुसार साक्षात्कार का महत्त्व दिनों दिन बढ रहा है। कंपनियों में नोकर भरती हो या पत्रकारिता में विशेषज्ञों द्वारा महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल करना या शोध कार्यों में सामग्री इकट्ठा करना, इसके लिए साक्षात्कार विधि कारगर साबित हो रही है। इसका महत्त्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है–

अ) उचित उम्मीदवार को नौकरी दिलाने हेतु :

निजी कंपनियों तथा सरकारी कार्यालयों में योग्य और उचित उम्मीदवार की नियुक्ति कराने हेतु साक्षात्कार का सहारा लिया जाता है। इस प्रणाली में आवेदक की योग्यता का पता चलता है और साक्षात्कार के दौरान आवेदनकर्ता या उम्मीदवार के विचारों का सही ज्ञान होता है। नौकरी दिलाने के लिए यह प्रणाली अत्यधिक विश्वसनीय है। साक्षात्कार के द्वारा आवेदक को भूतकालीन घटनाओं के बारे में भी पता लगाया जाता है।

ब) पारस्परिक प्रेरणा :

साक्षात्कार के अन्तर्गत दो या दो से अधिक व्यक्ति अध्ययन विषय के बारे में वार्तालाप करते हैं। इस तरह साक्षात्कारकर्त्ता व साक्षात्कारदाता दोनों में विचारों का आदान–प्रदान होता रहता है। ऐसी स्थिति में एक की उपस्थिति से दूसरा उत्साहित व प्रेरित होता है। ज्यों–ज्यों बातचीत का क्रम आगे बढ़ता है त्यों–त्यों सम्बन्धित बातें प्रकट होती रहती हैं। यह सब पारस्परिक प्रेरणा का ही परिणाम है। प्रेरणा साक्षात्कार के बिना सम्भव भी नहीं है।

क) प्रत्येक स्तर के लोगों से सूचना एकत्रित करना :

इस पद्धति का प्रमुख लाभ यह है कि इससे लगभग सभी प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं। यदि शैक्षिक सूचना प्राप्त करनी है तो शिक्षा विभाग के सदस्यों, यदि अपराधियों का अध्ययन करना है तो अपराधियों व जेल अधिकारियों से साक्षात्कार के द्वारा समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस तरह यह पद्धति अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

ड) मनोवैज्ञानिक अध्ययन सम्भव :

साक्षात्कार प्रणाली के द्वारा साक्षात्कार की उपयोगिता इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि इसके द्वारा व्यक्ति के उद्देश्यों, धारणाओं एवं भावनात्मक प्रत्युतरों के बारे में सही सूचना प्राप्त की जा सकती है। साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कारदाताओं के मानसिक भावों के उतार–चढ़ाव का भी अध्ययन करता रहता है। यहाँ तक कि कुशल साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कारदाताओं के दिल की भी बातें जान लेता है। वह धीरे–धीरे इस प्रकार के प्रश्न उत्तरदाताओं से करते चला जाता है जिससे धीरे–धीरे वे अनजाने में अपने दिल की न कहने वाली बात भी कह डालते हैं। इस तरह साक्षात्कार पद्धति द्वारा वैज्ञानिक ढंग से इन सबका अध्ययन आसानी से कर सकते हैं और साथ ही उसमें सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इ) अमूर्त घटनाओं का अध्ययन :

साक्षात्कार एक ऐसी प्रविधि है जिसके द्वारा धारणाओं, भावनाओं, संवेगों, विचारों आदि अनेक अमूर्त एवं अदृश्य घटनाओं का भी अध्ययन सम्भव है। इन घटनाओं का निरीक्षण नहीं किया जा सकता है क्योंकि ये प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर नहीं हैं। इन अमूर्त घटनाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को केवल उत्तरदाता ही जानता है। लेकिन साक्षात्कार के दौरान योग्य एवं कुशल साक्षात्कारकर्त्ता अपने उत्तरदाताओं से इस प्रकार की सभी सूचनाएँ मालूम कर लेता है।

ई) भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन सम्भव :

साक्षात्कार प्रणाली के द्वारा भूतकालीन घटनाओं का भी अध्ययन किया जा सकता है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि साक्षात्कारदाता जो भी पूर्वक घटना के बारे में बतला रहा है, अपने अनुभव का परिचय दे रहा है। उसमें अधिक से अधिक प्रमाणित तथ्य होने की सम्भावना हैं। लेकिन इस प्रकार की परिस्थितियाँ अवलोकन प्रणाली में सम्भव नहीं हैं उसमें केवल उन्हीं घटनाओं का ज्ञान हो सकता है जिनको मानव स्वयं अपनी इंद्रियों से देख रहा है।

उ) प्राप्त उत्तरों का सत्यापन सम्भव :

साक्षात्कार प्रणाली के द्वारा प्राप्त उत्तरों की जाँच सम्भव है। इस सत्यापन का मुख्य कारण साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्त्ता व साक्षात्कारदाता के बीच खुलकर व स्वतन्त्र रूप से विचारों को स्पष्ट करना। इसलिए एक बार कही गईं बात की सत्यता उसके स्पष्टीकरण में प्रकट हो जाती है। साक्षात्कार में केवल किए गए प्रश्नों का उत्तर ही नहीं मिलता बल्कि उसके विस्तार में प्रमाण भी प्राप्त हो जाते हैं। इसलिए प्राप्त सामग्री अधिक उपयुक्त समझी जाती है।

1.3.4 साक्षात्कार का उद्देश्य

साक्षात्कार चाहे आमने-सामने बैठ कर लिया जाए या टेलिफोन या प्रश्नावली भेज कर, उसका मूल उद्देश्य है व्यक्ति विशेष के विचार, उसका दृष्टिकोन, उसकी जीवन शैली, उसकी मान्यताएँ किसी विशेष संदर्भ में इस तरह सामने लाई जा सकें। साक्षात्कार तकनीकी के इन उद्देश्यों को निरन्तर ध्यान में रखके ही साक्षात्कार प्रकिया को सम्पन्न कराती है। अतः साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य हैं-

अ) आवेदक के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना।

आवेदक को संस्था के विषय में जानकारी देना तथा उसे संस्था के मुख्य उद्देश्यों से अवगत कराना। आवेदक को अपनी योग्यताएँ तथा गुण दिखाने का व्यक्तिगत अवसर प्रदान करना। साक्षात्कार विपणन उद्देश्य के लिए बाजार अनुसन्धान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साक्षात्कार के द्वारा कोई भी नवीन जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

ब) प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करके सूचना संकलन करना :

साक्षात्कार, प्रत्यक्ष संपर्क पर आधारित होता है। इस प्रकिया के अन्तर्गत, जो भी सूचनायें प्राप्त की जाती हैं, प्रत्यक्ष संपर्क के आधार पर प्राप्त की जाती है। इसमें, वास्तविक साक्षात्कार के समय, साक्षात्कार देने वाला और साक्षात्कार लेने वाला, एक-दूसरे के आमने-सामने बैठते हैं। साक्षात्कारकर्ता, निर्धारित उद्देश्यों से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्न, साक्षात्कारकर्ता से पूछता है। इनके आधार पर ही उसे, विषयों की रूचियों, योग्यताओं कौशलों, इच्छाओं, आदि से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त होती हैं। इस प्रकार, प्रत्यक्ष संपर्क के आधार पर तथ्यागत सूचनायें प्राप्त करने की दृष्टि से, साक्षात्कार का विशेष महत्त्व है।

क) परिकल्पना के निर्माण में सहायक :

परिकल्पनाओं के लिए, अप्रत्यक्ष रूप में सामग्री का संकलन करना भी साक्षात्कार का एक प्रमुख उद्देश्य है। इस दृष्टि से यह बहुत उपयोगी है। यही नहीं, साक्षात्कार को, परिकल्पना के निर्माण में सहायक होने की दृष्टि से, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अथवा सर्वश्रेष्ठ प्रविधि के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसका कारण यह है कि साक्षात्कार के आधार पर, अनेक नवीन तथ्यों को बोध होता है। ये तथ्य, साक्षात्कारदाता की रूचि, मनोवृत्ति, अभिवृत्ति, योग्यताओं, कौशलों, विभिन्न समस्याओं आदि के आधार पर प्राप्त होते हैं।

ड) गुप्त एवं व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करना :

साक्षात्कार के माध्यम से व्यक्ति के सम्बन्ध में ऐसी अनेक जानकारियां प्राप्त हो जाती हैं जो किसी अन्य प्रविधि के माध्यम से प्राप्त की जानी सम्भव नहीं हैं। इस प्रकार की जानकारियों का उपयोग, अनेक दृष्टियों से किया जा सकता है। न केवल साक्षात्कार दाता, वरन् अन्य व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान करने में भी, ये सूचनायें, महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। जहां तक साक्षात्कार कर्ता का प्रश्न है, उसे निर्देशित करने या उसके सम्बन्ध में भावी-कथन हेतु, अथवा उसकी किसी अन्य समस्या का समाधान करने की दृष्टि से इस प्रकार की गोपनीय सूचनाओं का ही सर्वाधिक महत्त्व होता है।

साक्षात्कार का प्रमुख उद्देश्य तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। इस जानकारी को गोपनीय भी रखा जा सकता है या सार्वजनिक भी रखा जा सकता है। अतीत की घटनाओं का सत्यापन करना तथा गुणात्मक तथ्यों की भी जानकारी प्राप्त करना है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.4.1 बहुविकल्पी प्रश्न।

1. सूचना प्राप्त करने वाले को .... कहा जाता है।

   अ) साक्षात्कारदाता ब) उम्मीदवार क) आवेदक ड) साक्षात्कारकर्ता

2. सूचना प्रदान करने वाले को साक्षात्कार दाता कहा जाता है।

अ) साक्षात्कारदाता ब) आवेदक क) उम्मीदवार ड) यह सभी

3. साक्षात्कार एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति से .... है।

अ) दुराचार ब) वार्तालाप क) द्वंद्व ड) इनमें से कोई नहीं

4. एच. पी. यंग के अनुसार- ''साक्षात्कार .... की विशेष तकनीक है''।

अ) व्यक्तियों के व्यवहार को देखने ब) उनके कथनों को लिखने

क) सामाजिक अथवा अन्तः क्रिया के स्पष्ट परिणामों का अध्ययन करने ड) यह सभी

5. .... साक्षात्कारदाता के भय एवं आत्मग्लानि की भावना निर्माण होती है।

अ) व्यर्थ में गुप्त रहस्य बताने पर ब) तथ्यों को प्रकट करने पर

क) मुख्य विषय से जुडी जानकारी देने पर क) समस्या का समाधान बताने पर

6. साक्षात्कार की रिपोर्ट .... के बाद लिखी जाती है।

अ) साक्षात्कार के पूर्व ब) साक्षात्कार के संचालन के समय

क) साक्षात्कार खत्म होने के बाद ड) इनमें से कोई नहीं

7. साक्षात्कार प्रविधि की मुख्य विशेषता .... है।

अ) योग्यता की परख ब) तथ्यों का संकलन क) सामग्री का संकलन ड) यह सभी

8. साक्षात्कार में धारणाओं, भावनाओं, संवेगों, ... आदि अनेक अमूर्त एवं अदृश्य घटनाओं का अध्ययन सम्भव है।

अ) विचारों ब) निरीक्षणों क) स्व अनुभव ड) इनमें से कोई नहीं

1.4.2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. साक्षात्कार का शाब्दिक अर्थ .... है।
2. साक्षात्कार को अंग्रेजी में .... कहा जाता है।
3. साक्षात्कार में कम से कम .... व्यक्तियों का होना अनिवार्य हैं।
4. साक्षात्कार एक प्रकार की .... प्रश्नावली है।
5. साक्षात्कार में संकेत-लिपि या .... का प्रयोग किया जा सकता है।
6. कर्मचारियों के चयन के लिए .... प्रणाली अत्यधिक विश्वसनीय है।

1.5. शब्दार्थ

साक्षात्कारदाता या उत्तरदाता : उत्तर देनेवाला या सूचना प्रदान करने वाले को

साक्षात्कारकर्ता या प्रश्नकर्ता : प्रश्न पूछनेवाला या सूचना प्राप्त करने वाले को

आवेदक या उम्मीदवार : नौकरी प्राप्ति हेतु साक्षात्कार देनेवाला

सिमसेट : यह टेलीविजन साक्षात्कार की एक शैली है । प्रायः किसी बड़ी घटना के बारे में ज्यादा जानकारी और फूटेज के अभाव में उस इलाके के संवाददाता को कैमरे के सामने लाकर उसके जरिए खबर में जानकारियों के अभाव को खत्म किया जा सकता है।

वॉक द टॉक : यह टीवी साक्षात्कार की एक नई शैली है । इसमें प्रश्न पूछने वाला साक्षात्कार देने वाले के साथ चलते चलते या फिर कोई दूसरा काम करते हुए बातचीत करता है। यह पश्चिम की एक लोकप्रिय साक्षात्कार शैली है।

फोनो : यह टेलीविजन साक्षात्कार की एक शैली है। इसमें संवाददाता या घटना से जुड़े किसी व्यक्ति से फोन या मोबाइल के जरिए बात करके खबरों का खुलासा किया जाता है। फोनो के जरिए दूर-दराज के क्षेत्रों से भी तत्काल समाचार प्राप्त हो सकते हैं।

टिकटैक : यह टेलीविजन साक्षात्कार की एक शैली है जिसमें जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है वह और प्रश्न पूछने वाला दोनों ही फेम में होते हैं और संक्षिप्त बातचीत के जरिए किसी विषय पर पूरी जानकारी लेने का प्रयास किया जाता है।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.4.1 बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर

1. ड) साक्षात्कारकर्ता,
2. ड) यह सभी,
3. ब) वार्तालाप,
4. ड) यह सभी,
5. अ) व्यर्थ में गुप्त रहस्य बताने पर,
6. क) साक्षात्कार खत्म होने के बाद
7. ड) यह सभी
8. अ) विचारों

1.4.2 रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अनुभव करना,
2. इंटरव्यू,
3. दो,
4. मौखिक,
5. संकेत-शब्दों, प्रश्न
6. साक्षात्कार

1.7 सारांश

- साक्षात्कार का शाब्दिक अर्थ है- देखना, अनुभव करना। मराठी भाषा में इसे मुलाखत और अंग्रेजी में 'Interview' कहा जाता है। सामान्य अर्थ में साक्षात्कार से तात्पर्य एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति से वार्तालाप के द्वारा उसकी योग्यता, ज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करना। सामान्यत: दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा किसी विशेष उद्देश्य से आमने-सामने की गयी बातचीत या वार्तालाप को साक्षात्कार कहा जाता है।
- साक्षात्कार प्रविधि एक लचीली प्रणाली है, जिसमें आवश्यकतानुसार विषय-वस्तु एवं साक्षात्कार संचालन में परिवर्तन किया जा सकता है। साक्षात्कार-प्रविधि द्वारा साक्षात्कारदाता के विचारों और भावनाओं में प्रवेश कर योग्यता की परख, तथ्यों का संकलन किया जाता है।
- साक्षात्कार का क्षेत्र बहुत विविधतापूर्ण हो गया है और इसकी सीमाएं बहुत व्यापक हो गई हैं। मोटे तौर पर साक्षात्कार को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। 1. व्यक्ति परक 2. विषय परक
- साक्षात्कार एक प्रकार की मौखिक प्रश्नावली है जिसमें हम किसी भी व्यक्ति के विचारों और प्रतिक्रियाओं को लिखने के बजाय उसके सम्मुख रहकर बातचीत करके प्राप्त करते हैं। साक्षात्कार एक आत्मनिष्ठ विधि है इसके माध्यम से प्राप्त सूचनाओं की सार्थकता एवं वैधता साक्षात्कारकर्ता पर निर्भर करती है।

1.8 स्वाध्याय

1.8.1 लघुत्तरी प्रश्न

1. साक्षात्कार से क्या अभिप्राय है।
2. साक्षात्कार को अपने शब्दों में पारिभाषित कीजिए।
3. साक्षात्कारकर्ता एवं साक्षात्कारदाता के अंतर को स्पष्ट करें।
4. साक्षात्कार प्रविधि से आप क्या समझते हैं।
5. साक्षात्कार संचालन पर आपकी राय दें।
6. साक्षात्कारकर्ता के लिए प्राथमिक तैयारियों पर चर्चा कीजिए।
7. साक्षात्कार की समाप्ति किस तरह से होनी चाहिए। स्पष्ट करें।

1.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. साक्षात्कार के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
2. साक्षात्कार प्रविधि के मुख्य तत्त्वों, विशेषताओं को अधोरेखित कीजिए।

3. साक्षात्कार के महत्त्व को विशद कीजिए।

4. साक्षात्कार के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

5. 'साक्षात्कार लेखन एक कला' इस विषय पर विस्तार से लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1. आपकी व्यक्तिगत तथा शैक्षिक जानकारी के आधार पर आपके साक्षात्कार में कौन-से सवाल पूछे जा सकते है, इसकी प्रश्नावली तैयार कीजिए।

2. अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए आपके शहर में बढते प्रदूषणों के कारणों और उसके निवारण के उपायों पर प्रश्नावली तैयार कीजिए।

3. अपने जिले के किसी एक सम्मानित राजनीतिक व्यक्ति या विधायक का ''जिले के विकास में सरकार की भूमिका'' विषय पर साक्षात्कार लेकर उसकी रिपोर्ट तैयार कीजिए?

4. आपके जिले में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में जाकर वहाँ के राजभाषा अधिकारी, अनुवादक या हिंदी टंकलेखक से कार्यालयीन कामकाज में हिंदी भाषा विषय पर बातचीत करें और उसकी रिपोर्ट तैयार कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. इंटरव्यू में सफल कैसे हों, पी. के. आर्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018

2. समाचार लेखन एवं संपादन, नवीन चंद्र पंत, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2004

3. संवाद, संकलन, विज्ञान, नारायण वी. दामले, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997

4. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीकी, हर्षदेव, वाणी प्रकाशन, 2012

5. साक्षात्कार का स्वरूपः https://www.youtube.com/watch?v=dmnQwO8UgZU

6. साक्षात्कार-प्रविधिः https://www.youtube.com/watch?v=nFTUr4OjIX4

7. साक्षात्कार का महत्त्वः https://www.youtube.com/watch?v=IBQWT9fydt4

❑❑❑

इकाई –2 कहानियाँ
2.1 समय – यशपाल

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

  1.3.1 यशपाल का परिचय

  1.3.2 'समय' कहानी का परिचय

  1.3.3 'समय' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- यशपाल के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'समय' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- यह जान सकेंगे कि, व्यक्ति को समय के साथ चलना चाहिए।

1.2 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधा कहानी है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरम्भ 1900 इसवी के आसपास माना जाता है। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और सम्पन्न परंपरा रही हैं। कहानियों से श्रोताओं को मनोरंजन के साथ–साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता है। प्राय: कहानियों में असत्य पर सत्य, अन्याय पर न्याय और अधर्म पर धर्म की विजय दिखाई गई है।

हिंदी कहानी के विकास का अध्ययन करने के लिए हम कथा सम्राट प्रेमचंद को केंद्र बिंदु मानते हैं। प्रेमचंद के पूर्व की कहानी, प्रेमचंद युगीन कहानी, प्रेमचंदोत्तर कहानी, नई कहानी, सचेतन कहानी, समकालीन कहानी, अकहानी, समानांतर कहानी आदि के रूप में इसके विकास को देखते हैं।

हिन्दी साहित्य के प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार यशपाल है। आज की कहानी के सोच की जो दिशा है, उसमें यशपाल जी की कितनी ही कहानियाँ इस्तेमाल हुई है। साहित्य के माध्यम से उन्होंने वैचारिक क्रान्ति की भूमिका तैयार करने का प्रयास किया। वे अपने दृष्टिकोन के आधार पर सड़ी-गली रूढ़ियों, ह्रासोन्मुखी, प्रवृत्तियों पर जमकर प्रहार करते थे।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 यशपाल का परिचय

प्रेमचंदोत्तर युग के प्रतिष्ठित रचनाकार यशपाल का जन्म दि. 3 दिसंबर सन् 1903 ई. को वर्तमान हमीरपुर ज़िले के भूंपल ग्राम में एक साधारण खत्री परिवार में हुआ था। पिता छोटे-मोटे कारोबारी थे और माता फ़िरोज़पुर छावनी के एक अनाथालय में अध्यापिका थीं। उनकी आरंभिक शिक्षा हरिद्वार के आर्य समाज गुरुकुल में हुई और वहीं उन्हें देशभक्ति का पहला पाठ मिला। उनकी आगे की शिक्षा लाहौर और फिर फ़िरोज़पुर में पूरी हुई और दसवीं की परीक्षा पास कर ली। हाई स्कूल की शिक्षा के दौरान ही महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन के प्रभाव में आ गए थे और गाँव-गाँव घूमकर असहयोग आंदोलन का प्रचार करने लगे थे। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज, लाहौर में दाख़िला लिया।

नेशनल कॉलेज, लाहौर में यशपाल का परिचय भगत सिंह, सुखदेव थापर, भगवतीचरण बोहरा जैसे युवकों से हुआ जो असहयोग आंदोलन के अचानक वापस ले लिए जाने से गाँधी के प्रति मोहभंग का शिकार हुए थे और एक क्रांतिकारी राह की तलाश में थे। वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गए। यहीं वह मार्क्सवाद-समाजवाद के प्रभाव में भी आने लगे थे। दल की क्रांतिकारी गतिविधियों में धीरे-धीरे उनकी संलग्नता बढ़ती गई और इरविन पर हमले में उनकी भी प्रमुख भूमिका रही। भगत सिंह, सुखदेव आदि क्रांतिकारियों की गिरफ़्तारी और पुलिस मुठभेड़ में चंद्रशेखर आज़ाद की मौत के बाद उन्होंने दल की कमान भी संभाल ली थी। उन्हें जनवरी सन् 1932 ई. में गिरफ़्तार कर लिया गया और हत्या के दो प्रयासों के आरोप में 14 वर्ष के सश्रम कारावास की सज़ा दी गई। वह 6 वर्षों तक जेल में रहे, जब तक कि संयुक्त प्रांत में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद अँग्रेज़ सरकार के साथ संपन्न एक समझौते के तहत अन्य बंदियों के साथ उन्हें भी रिहा नहीं कर दिया गया। कारावास की अवधि में ही वर्ष 1936 में प्रकाशवती कपूर से उनका विवाह संपन्न हुआ।

यशपाल जेल में रहते हुए ही कहानियाँ लिखने लगे थे जो इधर-उधर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही थीं। जेल से बाहर आने पर उन्होंने 'पिंजड़े की उड़ान' के रूप में अपने पहले कहानी-संग्रह का प्रकाशन

कराया जिसे ख़ासी सफलता मिली। उन्होंने कुछ समय 'कर्मयोगी' पत्रिका में कार्य किया, फिर 'विप्लव' नाम से स्वयं की पत्रिका निकालने लगे। अँग्रेज़ सरकार के दबाव में यह पत्रिका जल्द ही बंद हो गई और फिर देश की आज़ादी के बाद ही इसका पुनर्प्रकाशन शुरू हो सका। वर्ष 1941 में उन्होंने 'कार्यालय' नामक प्रकाशन संस्था और 'साथी प्रेस' की स्थापना की। अब वह सक्रिय लेखन भी करने लगे थे और इस क्रम में वर्ष 1941 में उनका पहला उपन्यास 'दादा कॉमरेड' और वर्ष 1943 में 'देशद्रोही' प्रकाशित हुआ। वर्ष 1949 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उनकी कम्युनिस्ट गतिविधियों को संदिग्ध मानते हुए उन्हें फिर गिरफ़्तार कर लिया गया लेकिन जन आक्रोश के आगे सरकार को उन्हें छोड़ना पड़ा।

यशपाल प्रगतिशील आंदोलन की उपज थे। वह हिंदी के उस प्रमुख साहित्यिक समूह का प्रतिनिधित्त्व करते थे जो समाजवादी यथार्थवाद और उद्देश्यपरक कला की अवधारणा के प्रति समर्पित थे। उन्होंने भारत की सामाजिक-राजनीतिक अवसंरचना को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के चश्मे से समझने का प्रयास किया था। उनकी रचनाओं में आम आदमी के सरोकार प्रमुखता से अभिव्यक्त हुए हैं और सामाजिक विषमता, राजनीतिक पाखंड और रूढ़ियों से संघर्ष की आवाज़ मुखर हुई है। इस रूप में उन्हें प्रेमचंद की परंपरा का वाहक भी माना जाता है, यद्यपि ग्रामीण और निम्नवर्गीय समाज के बजाय शहरी समाज उनकी रचनाओं के केंद्र में रहा।

यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' को कालजयी कृति माना जाता है। उन्हें वर्ष 1970 में सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया, जबकि मृत्योपरांत 'मेरी तेरी उसकी बात' के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत किया गया। वर्ष 2003-04 में उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर भारत सरकार द्वारा एक डाक टिकट भी ज़ारी किया गया। 26 दिसम्बर 1976 को इनका निधन हुआ।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास : दादा कॉमरेड, देशद्रोही, दिव्या, मनुष्य के रूप, झूठा सच (दो खंडों में), बारह घंटे, अप्सरा का शाप, वे तूफ़ानी दिन, क्यों फँसें, मेरी तेरी उसकी बात।

कहानी संग्रह : पिंजड़े की उड़ान, ज्ञानदान, अभिशप्त, भस्मावृत चिंगारी, वो दुनिया, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, उत्तराधिकारी, चित्र का शीर्षक, तुमने क्यों कहा मैं सुंदर हूँ, उत्तनी की माँ, सच बोलने की भूल, तर्क का तूफ़ान, खच्चर और आदमी, भूख के तीन दिन।

यात्रा-वृतांत : राह बीती, देखा सोचा समझा।

व्यंग्य-संग्रह : चक्कर क्लब, कुत्ते की पूँछ।

संस्मरण : सिंहावलोकन।

वैचारिक गद्य : गाँधीवाद की शवपरीक्षा।

1.3.2 'समय' कहानी का परिचय

'समय' कहानी की कथावस्तु एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो अपनी नौकरी से अवकाश प्राप्त हैं। इनका विचार है कि अवकाश प्राप्त करने के बाद जीवन और आरामदायक होता है क्योंकि कहीं भी आने जाने और किसी से मिलने जुलने का पर्याप्त अवसर रहता है। और आदेश पालन से मुक्ति हो जाती है। उनकी समझ में यह नहीं आता कि सेवा से अवकाश प्राप्त करने से निरुत्साहित क्यों हो जाते हैं। कहानी के नायक पापा को बुढ़ापा और बूढों से विरक्ति है। अतः अपने लिए स्वयं चिंतित रहते हैं कि कोई उनके व्यवहार व वेशभूषा से उन्हें बुढा न समझे। यही कारण था कि वह हमेशा अपनी पत्नी को साथ लेकर बाजार जाते थे। और अपनी पत्नी के साथ न होने पर लड़की को ही लेकर बाजार घूमने निकलते थे। लेकिन वह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही। समय के प्रभाव ने उन्हें वृद्धावस्था स्वीकार के लिए बाध्य कर दिया। जब वह बच्चों के मुख से कुछ सुनते हैं तो उन्हें अचानक अपनी स्थिति का बोध होता है। अब बच्चे समय के साथ- साथ बडे हो गए हैं। अब उन्हें बूढ़े पापा के साथ बाजार जाना अच्छा नहीं लगता है। अंत में पापा समय द्वारा पराजित छड़ी का सहारा लेकर बाजार जाना स्वीकार कर लेते हैं।

1.3.4 'समय' कहानी की समीक्षा

प्रसिद्ध कहानीकार यशपाल की 'समय' कहानी बड़ी रोचक है। एक अधिकारी को रिटायर होने से डेढ़-दो वर्ष पहले से ही लगने लगा कि उसका समय कैसे कटेगा? जब वे नौकरी करते थे तब अवकाश के दिन कितने अच्छे लगते थे। गिन-गिन कर अवकाश के दिनों की प्रतीक्षा करते थे। लेकिन पूर्ण अवकाश होने पर व्यक्ति निरुत्साहित क्यों हो जाता है? उसको इसे श्रम का अर्जित फल मानकर उससे पूरा लाभ उठाना चाहिए और सन्तोष करना चाहिए।

सर्विस के समय गर्मियों में महीने दो महीने हिल स्टेशनों पर रह लेने का पापा को बहुत शौक था। मितव्ययिता के कारण रिटायर होने पर उन्होंने पहाड़ जाना छोड़ दिया है। रिटायर होने पर उन्हें नियम भी बदलने पड़े पहले वे स्वयं पत्नी के साथ बाजार जाने को उत्सुक रहते थे। बच्चों को साथ ले जाते तो बच्चे जो भी चीज माँगते वह दे देते बाजार में पापा बच्चों को डराते-धमकाते नहीं थे। मम्मी-पापा जब बाजार जाने को तैयार होते तो बच्चों को नौकर के साथ उधर टहला देते थे। वे अपने साथ बच्चों को बाजार में ले जाना नहीं चाहते थे समय बीतने पर पापा के स्वभाव और व्यवहार में कुछ परिवर्तन और आया। पहले उन्हें अपनी पोशाक चुस्त-दुरुस्त रखने और व्यक्तिगत उपयोग में बढ़िया चीजों का शौक था। अब पापा अपने शौक और रुचियों को बच्चों द्वारा पूरा होते देखकर सन्तोष पाते है। मानों उन्होंने अपने व्यक्तित्त्व को बच्चों में देख लिया है। धीरे-धीरे समय के गुजरने के साथ-साथ पापा के स्वभाव में पर्याप्त परिवर्तन हो गया। पत्नी अस्वस्थ एवं वृद्ध होने के कारण टहलने में असमर्थ हो गयी। इसलिए पापा हजरतगंज बाजार टहलने जाने के लिए बच्चों को साथ ले जाने लगे। कभी मंटू तो कभी पुष्पा को और कभी किसी एक बच्चे को साथ ले जाते टहलने के बाद पापा स्वयं ही प्रस्ताव कर देते कहो क्या पसन्द है? कॉफी या आइसक्रीम।

बच्चों को साथ ले जाने के दो ही प्रयोजन होते थे। एक तो उन्हें बूढ़ों या बुजुर्गों की अपेक्षा नवयुवकों की संगति अधिक पसंद हैं और दूसरा कारण सूर्यास्त के पश्चात यदि सडक पर प्रकाश कम हो तो ठोकर खा जाते है। और प्रकाश अधिक होने पर चमक से परेशानी अनुभव करते है। इसलिए जब वे सन्ध्या समय बाहर जाते है तो किसी न किसी को साथ ले जाते थे।

पापा की बाहर जाने की तैयारी अनेक घोषणाओं और पुकारों के साथ होती जिससे सब जान जाएँ कि वे बाहर जा रहे हैं और कोई उनके साथ हो ले। एक बार उन्होंने हमेशा की तरह आवाज दी। लेकिन मंटू ने उत्तर दिया जाने में बोर होते है। पापा ने इस बात को सुन लिया और चिन्ता में डूब जाते है। पापा ने माँ से अपनी छड़ी मांगी और टहलने चल दिये। सम्भवत उन्होंने भी स्वीकार कर लिया कि समय के साथ चलना चाहिए।

इस कहानी के माध्यम से एक ऐसे मध्यमवर्गीय परिवार का चित्र खींचा गया है, जिसका मुखिया उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी है। अपनी नौकरी के समय में कार्यालय से घर वापस आने पर इनको अधिकांश समय चाहे वह बाजार जाने का हो या टहलने का, पत्नी के साथ ही व्यतीत होता था। इसमें बच्चों की सहभागिता न्यूनतम होती थी। अवकाश-प्राप्ति के बाद लखनऊ में स्थापित होने पर इन्हें बच्चों के साहचर्य की आवश्यकता महसूस होने लगी। पहले तो ये पत्नी के साथ ही घूमने चले जाया करते थे लेकिन पत्नी के असमर्थ होने और कुछ अपनी भी कमजोरियों के कारण अब वे अपने युवा बच्चों को साथ लेने लगे। लेकिन युवा मानसिकता की अपनी रुचि, अपनी व्यस्तता होती है। एक दिन मण्टू ने तो स्पष्ट रूप से कह दिया कि बुढों के साथ जाने में बोरियत होती है। पापा ने यह सब कुछ सुना, समझा और छड़ी उठाकर अकेले ही टहलने के लिए चल दिये। सम्भवतः उन्होंने भी अन्तर्मन से इस सत्य को स्वीकार कर लिया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कहानी का कथानक संगठित है। लेखक ने यथार्थ मध्यमवर्गीय तथाकथित शिक्षित परिवार की वास्तविक तसवीर प्रस्तुत की है। कथानक में संक्षिप्तता, सजीवता, रोचकता, कुतूहल आदि गुण विद्यमान हैं। कहानी मर्मस्पर्शी है, साथ ही विचारों को आन्दोलित करती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने समय का महत्त्व समझाया है और समय के परिवर्तन के साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने में भी परिवर्तन ले आना चाहिए। यह सत्य है कि अधिक उम्र का व्यक्ति युवा के साथ रहकर स्वयं को भी युवावत अनुभव करता होगा। लेखक यशपाल यह सन्देश देना चाहते हैं कि जब बच्चे युवा हो जाएँ अपना हित-अहित सोचने में सक्षम हो जाएँ, औचित्य-अनौचित्य का निर्णय करने में समर्थ हो जाएँ तो बुजुर्गों को उनके व्यक्तिगत कार्यों या व्यस्तताओं में न तो हस्तक्षेप करना चाहिए, न ही उसे अपने अनुसार परिवर्तित करना चाहिए और न ही उनमें स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसी स्थिति अनावश्यक रूप से कटुता को जन्म देती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को समय के अनुसार अपने आचार-विचार, व्यवहार में परिवर्तन लाना चाहिए। यहीं विचार सुखी जीवन की आधारशिला है।

प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'समय' एक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। सम्पूर्ण कहानी में 'समय' की ही प्रमुखता को दर्शाया गया है। अपने जीवन के शीर्ष समय में शीर्ष पर स्थित व्यक्ति समय बदल जाने

अर्थात् नौकरी से अवकाश प्राप्त कर लेने अथवा बुजुर्ग हो जाने पर कितना बदल जाता है उसके आस-पास की स्थितियों में कितना परिवर्तन हो जाता है उसे अच्छी तरह से दर्शाया गया है। शीर्षक में प्रतीकात्मकता है कौतुहल, सरलता और सजीवता है। समय सम्पूर्ण कहानी के कथानक का प्राण है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. यशपाल का जन्म .... ई. में हुआ।

   अ) सन् 1850 ब) सन् 1903 क) सन् 1860 ड) सन् 1961

2. यशपाल की मृत्यु.................... ई. में हुई।

   अ) सन् 1926 ब) सन् 1990 क) सन् 1920 ड) सन् 1976

3. यशपाल के उपन्यास........... को कालजयी कृति माना जाता है।

   अ) ताराानी ब) झूठा-सच क) संसार ड) समय

4. यशपाल का जन्म..........में हुआ था?

   अ) फिरोजपुर ब) सुल्तानपुर क) दमोह ड) झांसी

5. समय कहानी के प्रमुख पात्र का नाम...........है?

   अ) पापा ब) मामा क) बाबा ड) चच्चा

6. पापा के एक बेटे का नाम...........था।

   अ) मंटू ब) पिंटू क) चिंटू ड) किटू

7. पापा...........इलाके में घुमने जाते थे।

   अ) जयपुर ब) हसरतगंज क) सोलारगंज ड) दरियागंज

8. पापा..............उठाकर अकेले ही घुमने जाते है।

   अ) चप्पल ब) थैली क) छड़ी ड) बटवा

9. 'समय' कहानी के लेखक.............थे।

   अ) प्रेमचन्द ब) प्रसाद क)यशपाल ड) मंटो

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

जमींदार- भू-स्वामी, अनाथ- लावारिस, असहाय, पतोहू- बहू, मृतप्राय- जो मरे हुए के समान हो, प्रयत्न- कोशिश, अदालत- न्यायालय, स्मरण- याद करना, पश्चाताप- पछतावा

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1 - ब, 2 - ड, 3 - ब, 4 - अ, 5 - अ

6 - अ, 7 - ब, 8 - क, 9 - क

1.7 सारांश

1. सम्पूर्ण कहानी में 'समय' की ही प्रमुखता को दर्शाया गया है। अपने जीवन के शीर्ष समय में शीर्ष पर स्थित व्यक्ति समय बदल जाने अर्थात् नौकरी से अवकाश प्राप्त कर लेने अथवा बुजुर्ग हो जाने पर कितना बदल जाता है। उसके आस-पास की स्थितियों में कितना परिवर्तन हो जाता है।
2. लेखक ने यथार्थ मध्यमवर्गीय तथाकथित शिक्षित परिवार की वास्तविक तसवीर प्रस्तुत की है। कथानक में संक्षिप्तता, सजीवता, रोचकता, कुतूहल आदि गुण विद्यमान हैं।
3. कहानी मर्मस्पर्शी है, साथ ही विचारों को आन्दोलित करती है।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) 'वो छोटी बच्ची जो कभी बचपन में मम्मी के साथ लिपट कर घूमने जाने की ज़िद करती थी, उससे कहने पर दीदी को उसने जवाब दिया, 'तुम भी क्या दीदी..बोर बुड्ढों के साथ कौन बोर हो!'

2) 'पापा ने छड़ी की मूठ पर हाथ फेरते हुए कहा और छड़ी टेकते हुए किसी की ओर देखे बिना घूमने के लिए चले गए, मानों हाथ की छड़ी को टेक कर उन्होंने समय को स्वीकार कर लिया।''

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'समय' कहानी के माध्यम से लेखक क्या सन्देश देना चाहते है?

2) 'समय' कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

अपने नजदीक के वृद्धाश्रम को भेंट दीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी को पढ़िए।

❑❑❑

इकाई–2

2.2 सुख – काशीनाथ सिंह

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 काशीनाथ सिंह का परिचय

1.3.2 'सुख' कहानी का परिचय

1.3.3 'सुख' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- काशीनाथ सिंह के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'सुख' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- काशीनाथ सिंह कहानी 'सुख' में यह दिखाना चाहते है कि, मनुष्य के अन्य संबंधों के साथ–साथ प्रकृति संबंध भी विच्छेद हो रहा है।

1.2 प्रस्तावना

नई कहानी के बाद कहानी जगत में अनेक कहानी आन्दोलन उभरे। जिनमें प्रमुख अकहानी, सचेतन कहानी, सहज कहानी, समानांतर कहानी, जनवादी कहानी, सक्रीय कहानी आदि इन कहानी आंदोलनों को समवेत रूप से साठोत्तरी कहानी कहा जाता है। इस कहानी आंदोलन से जुड़े कहानीकारों ने हिन्दी कहानी

को नया आयाम दिया। आज कहानी का यथार्थ अत्यंत विस्तृत और विविधवर्णी हैं। इन रचनाकारों की दृष्टि से जीवन का कोई क्षेत्र और समस्या नही छुटी है।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 काशीनाथ सिंह का परिचय

काशीनाथ सिंह का जन्म वाराणसी (अब चंदौली) के जीयनपुर गाँव में 1 जनवरी, सन् 1937 ई. को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पैत्रिक गाँव जीयनपुर के पास के विद्यालयों में ही हुई। सन् 1953 ई. में हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। हालाँकि गणित विषय में वे कमजोर थे। उच्च शिक्षा के लिए काशीनाथ सिंह बनारस चले आये जहाँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक, परास्नातक वर्ष (1959) और पीएच.डी. सन् (1963) ई. की उपाधियाँ प्राप्त कीं है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ही पहले वे हिंदी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण कार्यालय में सन् 1962-64 ई. तक शोध सहायक रहे। फिर सन् 1965 ई. में वहीं उन्होंने अध्यापन कार्य शुरू किया और हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए सन् 1997 ई. में सेवानिवृत्त हुए। हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह, काशीनाथ सिंह के बड़े भाई हैं।

कहानी संग्रह : (वर्ष)

1. लोग बिस्तरों पर 1968
2. सुबह का डर 1975
3. आदमीनामा 1978
4. नयी तारीख 1979
5. कल की फटेहाल कहानियाँ 1980
6. कविता की नयी तारीख 2010
7. खरोंच 2014 (साहित्य भंडार, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से)

उपन्यास : (वर्ष)

1. अपना मोर्चा – 1972
2. काशी का अस्सी – 2002
3. रेहन पर रग्घू – 2008
4. महुआ चरित – 2012
5. उपसंहार – 2014

संस्मरण : (वर्ष)

1. याद हो कि न याद हो –1992
2. आछे दिन पाछे गए – 2004
3. घर का जोगी जोगड़ा –2006

शोध–आलोचना : (वर्ष)

1. हिंदी में संयुक्त क्रियाएं 1976
2. आलोचना भी रचना है 1996
3. लेखक की छेड़छाड़ 2013

साक्षात्कार :

1. गपोड़ी से गपशप 2013 (संपादक– पल्लव)

सम्मान :

1. कथा सम्मान
2. समुच्चय सम्मान
3. शरद जोशी सम्मान
4. साहित्य भूषण सम्मान
5. भारत भारती पुरस्कार
6. साहित्य अकादमी पुरस्कार

1.3.2 'सुख' कहानी का परिचय

काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे अपने जीवन में दुख मिला, लेकिन कहानी का नाम 'सुख' पड़ा। क्योंकि इस कहानी का मुख्य पात्र भोला बाबू है जो कहानी के शुरू में तो सुखी होते है किंतु कहानी के अंत तक जाते–जाते वह पूर्ण रूप से दुखी दिखाई देते हैं।

काशीनाथ सिंह कहानी 'सुख' में यह दिखाना चाहते है कि, मनुष्य के अन्य संबंधों के साथ–साथ प्रकृति संबंध भी विच्छेद हो रहा है। संबंध विच्छेद के कारण प्रकृति और मनुष्य दोनों अलग–अलग पड़ गए हैं। इस अकेलेपन के कारण जहां भोले का जीवन दुखों से भर गया है; तो वहीं अन्य लोग जिन्हें अकेलापन महसूस नहीं होता उनका जीवन सुखमय है। शायद यही कारण है कि कहानीकार ने कहानी का नाम ही सुख रख दिया है। दरअसल बात यह है कि भोला बाबू अकेले ऐसे व्यक्ति है जो अत्यंत व्यस्तता के बाद रिटायर हो जाने के कारण खाली हो गए हैं। अब उनके पास समय ही समय है जबकि अन्य लोग अभी भी व्यस्त

हैं। जिस कारण उन्हें जो अनुभूति होती है वह अन्यों को नहीं और यही कारण है कि उनका सुखमय जीवन अचानक दुखमय हो जाता है जो की भोला की समझ से बाहर है।

1.3.3 'सुख' कहानी की समीक्षा

भोला बाबू ने आवकाश ग्रहण किया। श्याम को उन्होंने अस्त होते हुए सूरज को देखा। उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि दुनिया में अच्छी-अच्छी सुंदर चीजें भी है। सबसे पहले उन्होंने अपने खुशी की बात अपनी पत्नी से कही। लेकिन उसने उत्तर दिया ऐसा सूरज तो वह जिंदगी भर देख रही है। भोला बाबू को झुंजलाहट हुई।

उन्होनें खेलते हुए नीलू को पुकारा। उसे अपना अनुभव बताया कि वह सबको बुलाकर ले आए। प्रत्यक्ष कोई बच्चा खेल छोड़कर उनके पास नहीं आया। फिर उन्होंने ऊँट पर सवार होने वाले से कहा कि वह ताडो के बीच से देख ले... आसमान में क्या दिखाई देता है? ऊँट वाला आकाश की तरफ देखता हुआ चला गया। भोलाबाबू का संयम टूटने लगा फिर उन्होंने सोचा कि अनपढ़ लोगों तक उनकी बात पहुँचती नहीं। अतः माधव के पास चले गए। वह मुख्तार था। वहाँ उनकी मुलाखात जिलेदार साहब से हो जाती है। भोलाबाबू सूर्यास्त का जिक्र तुरंत नहीं करना चाहते। वे उनसे मछली पकड़ने की बात करते हैं। जिलेदार साहब सूर्यास्त का संबंध मौसम के साथ जोड़ देते हैं। उन्हें एहसास हुआ कि जिलेदार साहब पढ़े-लिखे हैं। लेकिन पढ़ाई और समझ दो अलग-अलग चीज़े हैं। अब वे सोहन से पूछते है कि क्या उसने कभी ढलते हुए सूरज को देखा है? सोहन इतना भोला-भाला और अनपढ़ है कि उसे लगता है कि वे गांव के सूरजा की बात कर रहे हैं। भोला बाबू का धैर्य समाप्त होता है। अवकाश ग्रहण करने के बाद उन्होनें पहली बार ढलते हुए सूरज को देखा। पहाड़ों पर, पेड़ों पर छाई हुए लालिमा, गोल होते हुए सूरज का बिंब और पीछे छोड़ दी गई मुलायम लाल किरण... भोला बाबू प्रकृति के सौंदर्य और जीवन की सच्चाई पहली बार देख रहे थे। वे उसकी अभिव्यक्ति कर रहे थे। लेकिन घरवाले और गांववाले उन तक पहुँच नहीं सके। भोला बाबू की दृष्टि उन सबके पास नहीं थी। भोला बाबू को रोना आ गया तब उनकी पत्नी भी रोने लगी उसे देखकर बच्चे भी रोने लगे। भोलाबाबू का दुख वे नहीं समझ सके। लेकिन रोने में मात्र शामिल हो गए। भोलाबाबू की दृष्टि से एक सुख की बूंद भी पर्याप्त है।

काशीनाथ सिंह साठोत्तरी पीढ़ी के ऐसे सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिक जीवन की पीडाओं में जूझ रहे मनुष्य के यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। इन्होंने अपने रचनाकाल की शुरुआत 'अपना मोर्चा' जैसे चर्चित उपन्यास से की। लेकिन उनका मूल लेखक रूप कहानी का ही बना रहा। और उनके इस रूप को सबसे अधिक प्रसिद्धी भी मिली। सुख कहानी काशीनाथ के पहले कहानी संग्रह 'लोग बिस्तरों पर' की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है, जिसमें कहानीकार मनुष्य के अपने परिवेश और प्रकृति से उसके विच्छेद होते हुए संबंधों को प्रकट करता है। स्वयं काशीनाथ सिंह अपनी कहानी सुख का उल्लेख करते हुए लिखते हैं सुख प्रकृति से विचलित होते जा रहे मनुष्य की कहानी है। मनुष्य से मनुष्य के, पिता से पुत्र के, पत्नी से पति के, मन से बेटे के संबंध के टूटने के, बिखरने की कहानी तो लिखने वाले

और भी थे लेकिन सुख की थीम अलग थी। उनसे कहीं व्यापक और सामाजिक अपने ही परिवार और समाज में अकेले पड़ते जा रहे मनुष्य की कहानी।

स्वाधीनता ने नई कहानी में जो आशाएं-आकांक्षाएं और सपने जगे थे उन्हें भारत-चीन युद्ध में समाप्त कर दिया। विकास की सारी योजनाएं भ्रष्टाचार की शिकार साबित हो गई थी। देश ऐसा ही हो गया था और हमारा राष्ट्रीय नायक खुद को अकेला और नीरा महसूस करने लगा था।

उनकी कहानियों में उनके समय का यथार्थ पूर्ण रूप से झलकता है। जिसका एक सशक्त उदाहरण इनकी कहानी 'सुख' है। काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे अपने जीवन में दुख मिला लेकिन कहानी का नाम सुख पड़ा क्योंकि इस कहानी का मुख्य पात्र भोला बाबू है जो कहानी के शुरू में तो सुखी होते हैं किंतु कहानी के अंत तक जाते-जाते वह पूर्ण रूप से दुखी दिखाई देते हैं।

'सुख' कहानी के प्रारंभ में ही लेखक ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया है, जो कुछ दिनों पहले ही रिटायर होकर अपने घर लौटता है और शाम के समय अपने घर की खिड़की से सूरज को देखकर रोमांचित होता है। वे कमरे में पड़े अखबार पढ़ रहे थे एक शाम खिड़की से कोई किरण आई और उनके गंजे सिर पर पड़ रही थी। भोला बाबू कहानी में अन्य लोगों जैसे नीलू, जिलेदार साहब, ऊंट वाला या सोहन आदि सभी के मुंह से सूरज के सौंदर्य आभा को सुनने के लिए आतुर दिखाई देते हैं; परंतु ऐसा होता नहीं और इस कारण यह सभी लोग भोला बाबू के दुखों का कारण बन जाते हैं।

सुख कहानी की कथावस्तु मुख्य रूप से प्रकृति और मनुष्य के मध्य बनने वाले रिश्ते को उजागर करती है। सन् 1964 ई. में कल्पना पत्रिका में काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' प्रकाशित हुई थी जो कि उस समय की एक अलग किस्म की पहली कहानी है, जो मुख्यतः प्रकृति और मनुष्य के बीच बनने वाले रिश्ते को लेकर लिखी गई है। यह कहानी दर्शाती है कि रिश्ते में विद्यमान ऊष्मा कैसे खत्म हो रही है क्योंकि वह दौर मुख्यतः संबंधों के विघटन का दौर था। इसीलिए काशीनाथ सिंह कहते है कि, यह कहानी एक महत्त्वपूर्ण कहानी बनकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुई, जिसमें प्रकृति व मनुष्य के मध्य रिश्तों को गहरी पड़ताल की थी। उसी समय एक ऐसा मध्यवर्ग विकसित होना शुरू हुआ था जो की सदैव रूपए पैसे की चिंता और फिक्र में रहता था। तथा इस स्थिति ने अलगाव-अकेलापन लोगों में आया। इसके साथ ही इस अकेलेपन का एक सामाजिक संदर्भ यह भी है कि सन् 1962 ई. के चीन युद्ध में हम हार चुके थे तथा इसके साथ ही आजादी के बाद के सारे सपने, सारी उम्मीदों से लोगों का मुंह बंद हो चुका था। शहर लगातार बढ़ रहे थे क्योंकि लोग नौकरी की चाह में गांव से पलायन कर रहे थे वह एक प्रकार से शहर में नए माहौल में थे और अपने को शहरी माहौल में ढल नहीं पा रहे थे। जिससे वह ना तो पूरे शहर के रहे और नहीं गांव के। इन हालातो में संवेदनाएं तेजी से क्षीन हो रही थी। काशीनाथ सिंह इस दौर में प्रमुख जनवादी संदर्भों को अपनी कहानियों में जगह दे रहे थे। लेकिन फिर भी एक प्रकार का अलगावबोध आम लोगों में तेजी से बढ़ रहा था। और उनके लिए प्रकृति का संपूर्ण सौंदर्य बहुत व्यर्थ था। इसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य के साथ ही जगत का सारा सौंदर्य एक रूटीन की तरह हो गया, जिसमें कुछ भी नहीं बचा।

कहानी के प्रमुख पात्र भोला बाबू वाली जो बात हो जाती है जिसमें कोई चीज हमें अच्छी लगती है लेकिन दूसरे को नहीं। इसमें भोला बाबू का दुख ही एक प्रकार का सुख बन जाता है।

यद्यपि आरंभ में भोला बाबू उनको सुर्यास्त कितना अच्छा लगता है, इसे बताने की कोशिश करते हैं लेकिन उनकी कोई भी सुनना नहीं चाहता क्योंकि हर आदमी अपने काम-धंधे में इतना व्यस्त है कि उनके लिए सूरज का डूबना एक रूटीन बन चुका है। यद्यपि सूर्यास्त रोज की एक सामान्य घटना है तथापि इसमें खास बात यह है कि प्यार एक आवश्यकता है तो हम प्रकृति को भी इसलिए ही प्यार करते हैं क्योंकि वह हमारी जरूरत है। अधिकांश लोग अपनी-अपनी दुनिया में इस प्रकार से व्यस्त है कि एक दूसरे से बात करना तो दूर उन्हें एक दूसरे को देखने तक का समय नहीं। कोई किसी को ना पहचानता है, ना जानता है। यहां पर अजनबीपन का एक प्रकार भीषण रेगिस्तान बनता जा रहा है और भोला बाबू भी शायद इसीलिए अपनी पत्नी से कहते हैं देखो, यह बेटा है, यह बेटी है, यह मकान है, यह जायदाद है, यह दोस्त है, यह नातेदार है लेकिन सच पूछो तो कोई किसी का नहीं। मेरा कोई नहीं। भोला बाबू घूमते रहे पर उनकी बात किसी ने नहीं सुनी। उनकी झल्लाहट में जो दर्द है वह उनकी जुबान पर आ जाता है आखिर लोग क्या होते जा रहे हैं। दुनिया कितनी बदल गई है। इसलिए भोला बाबू ठीक कहते हैं जब कोई मेरा दुख नहीं समझ सकता तो कैसी बीवी और कैसा बेटा उन्हें दुख है कि सूर्यास्त के सौंदर्य को किसी ने नहीं समझा। कितने लोग हैं जो कल भी इसे समझ सकेंगे?

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. काशीनाथ सिंह का जन्म .... ई. में हुआ।

   अ) सन् 1950 ब) सन् 1937 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. काशीनाथ सिंह के बड़े भाई का नाम................है।

   अ) नामवर सिंह ब) विजय सिंह क) कुंवर सिंह ड) राजेन्द्र सिंह

3. नामवर सिंह का जन्म.............में हुआ?

   अ) लमही ब) दिल्ली क) वाराणसी ड) झांसी

4. 'सुख' कहानी के प्रमुख पात्र.........है।

   अ) भोलाबाबू ब) माधवराव क) नीलू ड) बिट्टो

5. भोलाबाबू शाम के समय अपने घर की खिड़की से सूरज को देखकर.......होते है।

   अ) भयभीत ब) रोमांचित क) शर्मसार ड) दुखी

6. सन्........ ई. में काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' प्रकाशित हुई थी।

   अ) 1900 ब) 1980 क) 1969 ड) 1964

7. ....पत्रिका में काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' प्रकाशित हुई थी।

अ) कल्पना ब) सारिका क) हंस ड) भाषा

8. सूरज की बात भोला बाबु ने सबसे पहले किसे कही?

अ) पत्नी ब) बच्चे क) जिलेदार ड) माधव

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

रोमांचित होना- आनंदित होना, मांड- लापसी, खच्चर- गधे और घोड़े के संयोग से उत्पन्न एक पशु, मडई- झोंपड़ी, कुहासे- ओस, कोहरा

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- ब, 2- अ, 3- क, 4- अ, 5- ब

6- ड, 7- अ, 8- अ

1.7 सारांश

1. प्रस्तुत कहानी मुख्यतः प्रकृति और मनुष्य के बीच बनने वाले रिश्ते को लेकर लिखी गई है। यह कहानी दर्शाती है कि रिश्ते में विद्यमान ऊष्मा कैसे खत्म हो रही है क्योंकि वह दौर मुख्यतः संबंधों के विघटन का दौर था।

2. 'सुख' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे अपने जीवन में दुख मिला लेकिन कहानी का नाम सुख पड़ा क्योंकि इस कहानी का मुख्य पात्र भोला बाबू है जो कहानी के शुरू में तो सुखी होते हैं किंतु कहानी के अंत तक जाते-जाते वह पूर्ण रूप से दुखी दिखाई देते हैं।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) ''भोला बाबू सूरज को देखते रहे, कभी इधर से, कभी उधर से, कभी, उठकर, कभी झुककर। उन्होंने खुश होकर तालियाँ बजाईं। उन्हें लगा गोले का ऊपरी सिरा, जिसके एक किनारे काले बादल की पतली लकीर है, डूब रहा है। सूरज की किरणें अब उधर नहीं हैं, न मैदानों में, न हरें खेतों में, न झोपडियों पर, वे बादलों के पीछे से ऊपर आकाश की ओर जा रही हैं, प्रकाश की कई धाराओं में, कई रंगों में।''

2) ''यह ऐसी बात नहीं, जिसे सब समझ लें।'' इस विचार से उन्हें और पीड़ा होने लगी। लेकिन पढ़ाई से क्या होता है? वास्तव में देखा जाए तो पढ़ाई और समझ दो चीज़ें हैं।....और ख़ास तौर से ऐसी बातों के लिए उम्र और तजुर्बा चाहिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'सुख' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

2) 'सुख' कहानी की कथावस्तू अपने शब्दों में लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

हिन्दी में अन्य कहानीकारों द्वारा लिखित 'सुख' शीर्षक की कहानियों को पढ़िए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

काशीनाथ सिंह के 'कासी का अस्सी' उपन्यास का अध्ययन कीजिए।

❑❑❑

इकाई–2

2.3 छोटा किसान – जयनंदन

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 जयनंदन का परिचय

1.3.2 'छोटा किसान' कहानी का परिचय

1.3.3 'छोटा किसान' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- जयनंदन के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'छोटा किसान' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- किसानों की समस्याओं को सूक्ष्मता से जान सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कहानी का आविर्भाव आधुनिक काल में ही हुआ था। तब तक कहानी अपनी शैशवावस्था में थी। उसे प्रौढावस्था तक ले जाने का कार्य भारतेंदु हरिश्चंद्र, राधाचरण गोस्वामी, रामचंद्र शुक्ल आदि ने किया। यह आम जनता की कहानी है इसमें व्यक्ति वैचित्र्य का अंकन की अपेक्षा जनसामान्य की परिवेश, वातावरण एवं उनकी समस्याओं को उभारने की विशेष कोशिश की गई हैं। विविध विमर्श, विविध प्रश्न, विविध समस्याएं, विविध विषय समकालीन कहानी के केन्द्र में आ गए हैं, इनमें कुछ नया एवं

गतिशील विषय है किसान का। भारत एक कृषि प्रधान देश होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल आधार है किसान।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 जयनंदन का परिचय

हिंदी के वरिष्ठ लेखक जयनंदन का जन्म दि. 26 फरवरी, सन् 1956 नवादा (बिहार) के मिलकी गाँव में हुआ है। उन्होंने टाटा स्टील में मजदूर के रूप में नौकरी की शुरुआत की थी। इसके बावजूद इन्होंने हिन्दी में एम्.ए. किया और हिन्दी की अविरत सेवा कर रहे है। कथा साहित्य में जयनंदन का देश–विदेश में बड़ा नाम है।

प्रकाशित कृतियाँ –

उपन्यास– 'श्रम एवं जयते', 'ऐसी नगरिया में केहि विधि रहना', 'सल्तनत को सुनो गाँववालो।

कहानी संग्रह– 'सन्नाटा भंग', 'विश्व बाजार का ऊँट', 'एक अकेले गान्ही जी', 'कस्तूरी पहचानो वत्स', 'दाल नहीं गलेगी अब', 'घर फूंक तमाशा', 'सूखते स्रोत', 'गुहार' गाँव की सिसकियाँ, भितरघात, मेरी प्रिय कथाएँ, मेरी प्रिय कहानियाँ, सेराज बैंड बाजा।

नाटक– नेपथ्य का मदारी, हमला तथा हुक्मउदूली।

वैचारिक लेखों का संग्रह– मंथन के चौराहे

जीवनी– राष्ट्र निर्माण के तीन टाटा सपूत

देश की प्राय: सभी श्रेष्ठ और चर्चित पत्रिकाओं में लगभग सौ कहानियाँ प्रकाशित। कुछ कहानियों का फ्रेंच, स्पैनिश, अंग्रेजी, जर्मन, तेलुगु, मलयालम, गुजराती, उर्दू, नेपाली आदि भाषाओं में अनुवाद। कुछ कहानियों के टीवी रूपांतरण टेलीविजन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित। नाटकों का आकाशवाणी से प्रसारण और विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न शहरों में मंचन।

पुरस्कार एवं सम्मान –(वर्ष)

1984 में डॉ शिवकुमार नारायण स्मृति पुरस्कार।

1990 में बिहार सरकार राजभाषा विभाग द्वारा नवलेखन पुरस्कार।

1991 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा युवा पीढ़ी प्रकाशन योजना के तहत सर्वश्रेष्ठ चयन के आधार पर उपन्यास 'श्रम एव जयते' का चयन और प्रकाशन।

1993 में सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्मान।

1995 में जगतबंधु सेवा सदन पुस्तकालय सम्मान।

2001 में पूर्णिया पाठक मंच सम्मान।

2002 में 21वां राधाकृष्ण पुरस्कार। (रांची एक्सप्रेस द्वारा)।

2005 का विजय वर्मा कथा सम्मान (मुंबई)।

2009 में बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान (आरा)

2010 में झारखंड साहित्य सेवी सम्मान (झारखंड सरकार, राँची)

2010 स्वदेश स्मृति सम्मान (तुलसी भवन, जमशेदपुर)

2013 आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान (लखनऊ)

कार्य –

टाटा स्टील की गृह पत्रिकाओं 'खास बात', 'तालमेल' एवं 'टाटा स्टील समाचार' का संपादन।

सम्प्रति –

टाटा स्टील से सेवानिवृत्त होने के पश्चात जमशेदपुर में निवास करते हुए अपनी साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी साहित्य संपदा के भंडार को समृद्ध करने में संलग्न हैं।

1.3.2 'छोटा किसान' कहानी का परिचय

किसान को अलग अलग शब्दों में परिभाषित किया गया है– किसान वह व्यक्ति है जो कृषि या खेती करता है। वह खेती बारी का काम करता है। खेतों को जोतने, उनमें बीज बोने, होने वाली फसल आदि का काम करते है। इस तरह देखे तो समकालीन कहानी में मुख्य रूप से किसान जीवन की अनुभूति दिखाई पड़ती है क्योंकि आज के समय की सबसे बडी त्रासदी किसान लोग ही झेल रहे हैं।

भारतीय संस्कृति का पहचान है कृषि, जो हमारे आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम रही है। जब से मानव ने अपने जीवनयापन के लिए खेती का आरंभ किया है, तब से किसान लोग अपने खाद्य क्षेत्र का प्रमुख आधार बन गए। इसलिए महात्मा गांधी ने किसानों को 'भारत की आत्मा' माना था। लेकिन वर्ष 1990 के बाद देखें तो पता चलता है कि भूमंडलीकरण के प्रभाव ने किसान एवं कृषि का ढांचा बदल दिया। परंपरागत कृषि रीति बदलने से कृषि का नियंत्रण किसान नहीं, अन्य लोग कर रहे हैं। साथ ही बीज, कीटनाशक, खाद आदि का मूल्य बढ़ने से किसान धीरे-धीरे अपनी जमीन से बेदखल कर दिया गया और उसकी हालत और भी बिगड़ने लगी। अपनी ओर होनेवाले अन्याय एवं अत्याचार को किसान आज भी विरोध नहीं कर पा रहे हैं।

अन्न किसानों की बड़ी तपस्या एवं परिश्रम का फल है जिसके प्रत्येक कण में उसकी शक्ति और स्वेद बूँदें समाहित रहती है। लेकिन किसानों को जितना महत्त्व मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पा रहा है। इनको हमेशा बीज के लिए, उर्वरक के लिए, जुताई के लिए, बिक्री के लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है।

प्रस्तुत कहानी 'छोटा किसान' में लेखक ने इस तरह के किसान जीवन यथार्थ को आधार बनाया हैं। लेखक ने भारतीय संस्कृति को अच्छी तरह से। पहचान लिया है अस्तु उनके रचनाओं में भारतीय जनजीवन का समग्र चित्रण मिलता है।

1.3.4 'छोटा किसान' कहानी की समीक्षा –

जयनंदन द्वारा लिखित कहानी 'छोटा किसान' (दि. 13 सितंबर सन् 2000 ई.) जो छोटा किसान कहानी संग्रह में संकलित हैं। इस कहानी का मूल पात्र है 'दाहू महतो' जो अपने गांव में खेती करके जीवनयापन करते हैं। अपनी मिट्टी एवं खेत से उसे इतना लगाव है जितना गांव में किसी अन्य किसानों को नहीं। रचनाकार ने यहां दाहू महतो को छोटा किसान के रूप में चित्रित किया है क्योंकि सामाजिक व्यवस्था के अनुसार हमें किसानों का तीन रुप मिलता है– धनिक किसान, मध्यम किसान, और छोटा किसान। छोटा किसान वह है जिसके पास कम भूमि होती है, छोटी उपकरणों से तन तोड मेहनत करता है, खेती उसका मुख्य आय होता है और उनके खेतों में उत्पादित उत्पन्न भी कम होता है। यहाँ छोटा किसान के रूप में चित्रित दाहू भी भावात्मक रूप से खेती से जुड़े हुए हैं और इसमें उसका अत्यधिक ध्यान होता है।

भारत में कृषि संबंधित अनेक सुविधाएं हैं लेकिन कृषि उत्पादन बढ़ाना सिर्फ एक भ्रम है, इससे सिर्फ बडे जोत वाले किसान को ही लाभ मिलता है। कम भूमि वाला किसान भूमि का उत्पादन बढ़ाने पर भी उसे अधिक आय नहीं मिलती और परिवार का भरण–पोषण भी अधूरा हो जाता हैं। इसलिए कृषि कार्य के साथ किसी अन्य काम करने के लिए वे मजबूर हो जाते हैं। आज के किसान अपने मूल खेती, किसानी, कृषक धर्मों को छोड़कर पलायन करने में विवश हैं। कठिन श्रम करने पर भी वे अपने परिवार वालों के उदर पूर्ति भी सही ढंग से नहीं कर पाते। प्रस्तुत कहानी में दाहू का बेटा उससे कहता है कि, ''अब खेती–बाड़ी में हम छोटे किसानों के लिए कुछ नहीं रखा है बाऊ.. घर–खेत बेचकर हमें शहर जाना ही होगा। सोचने–विचारने में हम बहुत टाइम बर्बाद कर दिया।''

आधुनिक युग टेक्नोलॉजी या विकास का युग है इसलिए मनुष्य यंत्रों के बीच रहकर यंत्र सा जीवन बिता रहे हैं। संबंधों में संवेदन शून्यता भर गई हैं यह संवेदन शून्यता कृषक परिवार में भी देखी जा सकती है। कहानी में आने वाले अन्य पात्र हैं दाहू का बड़ा भाई लाछो महतो जो गांजा–भांग और ताड़ी के लत के पीछे पडे है। उन्होंने अबोध अवस्था में अपने भाई बेला बाबू को सारी खेत भेजते हैं और बेला अपनी जमीन को बड़ा करके चले जाते हैं। लाछो अपने भाईयों की परवरिश के लिए खुद शादी तक नहीं करता उसे यह विश्वास था कि बेला बाबू पढ़ लिखकर काबिल आदमी बन जाए तो उसे सहायता मिलेगी। लेकिन बेला अपनी शादी के बाद कमाई अपने ही बाल बच्चों तक सीमित रखना चाहते है। आधुनिक युग का स्वार्थ मनोभाव उसमें देख सकता है। अपनी खेत में ट्यूबवेल होते हुए भी भाई दाहू के खेतों के लिए पानी देने में वह तैयार नहीं होते। जब लाछो नशे में अबोध होकर रास्ते में पड़ा था तब बेला घृणा की दृष्टि से उसे देखकर चले जाते हैं। यहां अपनों को भी नज़रंदाज़ करके स्वार्थ जीवन बिताने वाले को देख सकते है।

नई तकनीक कृषि विकास के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराती है लेकिन इसकी सुविधा सिर्फ बडे-बडे किसानों को ही मिलती हैं। छोटे किसान तक कोई सुविधाएं पहुंचती भी नहीं और उसकी खेती में कोई सुधार भी नहीं है। इसमें पहले आते हैं सिंचाई की समस्या। प्राकृतिक रूप से सिंचाई करने के लिए कुएं, तालाब आदि है और पानी के लिए उसे वर्षा पर भी निर्भर करना पड़ता हैं। लेकिन अब सभी ओर ट्यूबवेल दिखाई पडते हैं वह सिर्फ बड़े जोत वाले किसानों के खेतों में ही दिखाई पड़ते हैं। लेकिन वे लोग इससे दूसरों को सहायता पहुंचाना नहीं चाहते, उसे दूसरों के प्रति ही नहीं अपनों के प्रति भी कोई संवेदना नहीं है। कहानी का एक अंश है जहां दाहू बताते हैं कि, ''गांव में सात किसान है पंपवाले, जिन्हें वर्षा होने की कोई खास परवाह नहीं। इनके पास ट्यूबवेल का पानी है, परंतु आंखों में पानी नहीं हैं।''

आजादी के बाद लगभग सभी सरकारों ने औपनिवेशिक कानून का लाभ लेते हुए बांध, फैक्ट्री, इमारतें आदि के नामों पर किसानों से अपनी जमीन हड़प लीहैं। किसानों को गरीबी और भूखमरी में जीने के लिए मजबूर कर दिया है। भूमंडलीकरण किसानों के जीवन में नकारात्मक एवं असंतुलित परिवर्तन ले आया हैं और धीरे-धीरे उनके अस्तित्त्व को समाप्त करना चाहता हैं इसके विरोध में दाहू कहते हैं कि, ''जब पैदावार नहीं होगी तो ऐश-मौज क्या लोग खाक करेंगे। अन्न बदले क्या सिमेंट, लोहे, कपडे और प्लास्टिक खाएंगे?'' भारतीय किसान आर्थिक संकट में जूझ रहे हैं अपने गांव को छोड़कर दूसरे देश में जाने के लिए वह तैयार हो जाते है।

किसानों की दुर्दशा का प्रमुख कारण है बढ़ता कर्ज। सदियों से हम देखते आ रहे है कि किसान पर यह कर्ज हमेशा बोझ सा बना हुआ है। एक बार इसमें फँस जाता तो बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। प्रेमचंद के पूर्व की कहानियों से लेकर आज तक यह स्थिति हमारी आँखों के सामने ही मौजूद है। इसलिए हम कह सकते हैं कि एक किसान का जन्म कर्ज में ही होता है वह कर्ज पर ही जीता है और कर्ज में उसका अंत भी हो जाता है यह चक्र की भांति चलता रहता है। 'छोटा किसान' कहानी में भी देख सकते है कि किसान अपनी ज़मीन को रेहन करके पूंजीपतियों से कर्ज़ लेते हैं। किसानों के लिए ज़मीन उसकी आत्मा है, अन्न है, आश्रय है वह कभी भी उसे खोना नहीं चाहते हैं। इसलिए रेहन करने का मतलब यह निकलता है कि अपनी मिट्टी के साथ वह भी खत्म हो रहा है। कई अवसर ऐसे आते है कि उसके पास बेचने के लिए कुछ भी नहीं है उस वक्त निस्सहायता से वह खेत को बेचते हैं। कहानी के अंत तक आने से हम देख सकते हैं कि लाछो अपनी मिट्टी बेचकर पैसा लेते है क्योंकि उसे दाहू को थाने से छुड़वाना था।

कृषि भारतीय संस्कृति का आधार बिंदु है और किसान भारत की रीढ की हड्डी। जिसे दूसरा ईश्वर या दूसरा जीवन दाता कहा जा सकता है। जो अपने कठोर परिश्रम से अन्न का उत्पादन करते हैं और पूरी मानवता को खिलाते हैं। उसी किसान को अब विस्थापन का शिकार होना पड़ता हैं। परिस्थिति वश वे विस्थापित हो जाते हैं। छोटा किसान कहानी में दाहू भी विस्थापन का शिकार बना है। उनकी हालत देखकर गाँववाले कहते हैं कि, ''जिस आदमी को एक दूर ज़मीन बेचने में भी खून सूखने लगता था, आज वह अपनी पूरी घर-ज़मीन बेचने का ऐलान कर रहे हैं।''

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कहानीकार ने किसान जीवन के यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। स्व. लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' नारा दिया यह एकदम सार्थक है क्योंकि जवान लोग सीमा पर रहते हुए हमारी रक्षा करते हैं और किसान खेत पर मेहनत करके हमारी भूख मिटाते हैं। सीमा पर जवान है तो सीवान पर किसान। किसानों की इतनी महानता होते हुए भी उनकी हालत बद से बदतर हुए हैं। हमें पता है कि भोजन के बिना जीवित रहना हमारे लिए असंभव सी नहीं नामुमकिन है लेकिन 'छोटा किसान' कहानी से हमें यह जानकारी मिलती है कि, किसान लोग अपनी मजबूरी के कारण गांव छोड़ कर चले जाते हैं। उनके जाने से खेती भी समाप्त हो जाती है और खाने की सामग्री भी। बिना किसान वाला देश हमारी भोजन व्यवस्था में व्यवधान उत्पन करने का कारण बन जाता है। इसलिए किसानों के बारे में सोचना अनिवार्य है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. जयनंदन का जन्म ....ई. में हुआ।

   अ) सन् 1956 ब) सन् 1937 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. दाहू महतो के बड़े भाई का नाम................है।

   अ) रणछोड़ महतो ब) लाछो महतो क) कुंवर महतो ड) राणाजी

3. जयनंदन का जन्म.............में हुआ?

   अ) कश्मीर ब) दिल्ली क) वाराणसी ड) झांसी

4. 'छोटा किसान' कहानी के प्रमुख पात्र.........है।

   अ) लाछो महतो ब) माधवराव क) दाहू महतो ड) राणाजी

5. 'छोटा किसान' कहानी..........कहानीसंग्रह से ली गई है।

   अ) किसान ब) बड़ा किसान क) छोटा किसान ड) मझला किसान

6. सन्........ई. में जयनंदन की कहानी 'छोटा किसान' प्रकाशित हुई थी।

   अ) 1900 ब) 2000 क) 2009 ड) 2004

7. दाहू महतो को आठ साल से.........की बीमारी है।

   अ) बुखार ब) हैजा क) नींद ड) बवासीर

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

बयार- हवा, टेम- समय, भादो- भाद्रपद, मवेशी- गाय, बैल आदि, बडकू- बड़ा भाई, छोटकू- छोटा भाई, खुशगवार- सुखी, सन्न रहना- डर से चुप, सहोदर- अपना और सगा।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- अ, 2- ब, 3- क, 4- क, 5- क, 6- ब, 7- ड

1.7 सारांश

1. 'छोटा किसान' एक प्रभावी कहानी है, जिसमें किसानों की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।
2. कहानीकार ने किसान जीवन के यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।
3. 'छोटा किसान' कहानी से हमें यह जानकारी मिलती है कि, किसान लोग अपनी मजबूरी के कारण गांव छोड़ कर चले जाते हैं। उसके जाने से खेती भी समाप्त हो जाती है और खाने की सामग्री भी । बिना किसान वाला देश हमारी भोजन व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न करने का कारण बन जाता है। इसलिए किसानों के बारे में सोचना अनिवार्य है।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) ''अब खेती-बाड़ी में हम छोटे किसानों के लिए कुछ नहीं रखा है बाऊ.....घर-खेत बेचकर हमें शहर जाना ही होगा। सोचने-विचारने में हमने बहुत टैम बर्बाद कर दिया।''

2) ''हद हो गयी......सबक लें हम उनसे? इस्क्रीम और फुचका ही तो बेचते हैं तीनों भाई.....कोई बहुत बड़ी साहूकारी तो नहीं करते।''

3) ''देख बड़कू ! हमें यह नहीं देखना है कि इस गाँव में हमसे कितने लोग सुखी-संपन्न हैं। हमें अगर देखना ही है तो यह देखना है कि हमसे भी लुटे-पिटे बहुत सारे लोग हैं यहाँ। हमारे पास तो फिर भी खरची चलाने के लिए चार-पाँच महीने का अन्न हो जाता है, लेकिन उन्हें भी तो देखो जो एकदम भूमिहीन हैं।''

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'छोटा किसान' कहानी के माध्यम से लेखक क्या सन्देश देना चाहते है?

2) 'छोटा किसान' कहानी के आधारपर किसान जीवन पर प्रकाश डालिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

अपने आस-पास के किसानों की समस्याओं को जानने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

मधु कांकरिया द्वारा लिखित 'किसान के घर से' इस यात्रावृत्त को पढ़िए।

❑❑❑

इकाई–2

2.4 चुभता हुआ घोंसला – दामोदर खडसे

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 दामोदर खडसे का परिचय

1.3.2 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी का परिचय

1.3.4 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- दामोदर खडसे के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- आदमी- आदमी के बीच अविश्वास की खाई कैसे बढ़ रही है, यह समझ सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

समकालीन कहानियों में जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। समकालीन कहानी जीवन के हर पहलू को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करती है। देश में बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने अनेक जीवन मूल्यों

में परिवर्तन किया है। यही परिवर्तन मूल्य दृष्टि समकालीन कहानी में अभिव्यक्त हो रही है। समकालीन कहानीकार अपने जीवन के अनुभव कहानी में लाकर उन्हें काल और परिवेश के प्रश्नों के साथ जोड़ रहे है।

दामोदर खडसे की कहानियां पढ़ते हुए लगता है कि इनके जैसा रचनाकर्मी अपने समाज, परिवेश और जीवन से उदासीन नहीं है। वह स्थितियों का विश्लेषण कर उन वजहों की खोज करता है, जिनके कारण समाज में विषमताएं बढ़ रही हैं। मानवीय मूल्यों का विघटन आखिर क्यों हो रहा है, आदमी-आदमी के बीच अविश्वास की खाई क्यों चौड़ी हो रही है, दामोदर की कहानियां ऐसे ही सवालों का जवाब तलाशते हुए जीवन के प्रति पाठक को सकारात्मक दष्टिकोन सौंपती हैं।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 दामोदर खडसे का परिचय

दामोदर खडसे का जन्म दि. 11 नवम्बर, सन् 1948 ई. में हुआ था। इन्होंने हिंदी के माध्यम से कंप्यूटर एवं बैंकिंग के प्रशिक्षण को सुगम बनाने के लिए भारत की राजभाषा हिंदी को एक व्यापकता प्रदान की है। हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अखिल भारतीय स्तर पर डॉ. दामोदर खडसे ने जहाँ बैंकिंग एवं तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया, वहीं सृजनात्मक स्तर पर इन्होंने उपन्यास लेखन और साहित्य अकादमी के लिए मराठी से हिंदी में महत्त्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद भी किया। वे महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष भी हैं।

इनके द्वारा लिखे गये लेख, कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास तथा अनूदित रचनाएँ विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इन्होंने सरकारी क्षेत्र के बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित संचालन भी किया है।

कविता संग्रह: अब वहाँ घोंसले है, सन्नाटे में रोशनी, तुम लिखो कविता, अतीत नहीं होती नदी, रात, नदी कभी नहीं सूखती, लौटती आवाजें।

कथा-संग्रह: 'भटकते कोलंबस', 'इस जंगल में', 'गौरेया को तो गुस्सा नहीं आता', 'सम्पूर्ण कहानियाँ'।

उपन्यास: 'काला सूरज', 'भगदड़', 'बादल-राग', 'खिड़कियाँ'।

पुरस्कार एवं सम्मान: केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली द्वारा 'बारोमस' के लिए अकादमी पुरस्कार (अनुवाद)-2015, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी-2016, साथ ही केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ सहित अनेक सम्मान प्राप्त। दामोदर खडसे को अखिल भारतीय स्तर पर सृजनात्मक लेखन और अनुवाद के लिए भारत सरकार एवं विभिन्न राज्यों की साहित्य अकादमियों एवं स्वायत्त संस्थाओं द्वारा विविध सम्मान एवं पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। डॉ. दामोदर खडसे को 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए 'केंद्रीय हिंदी संस्थान' ने स्वयं को हर्षित महसूस किया है।

1.3.2 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी का परिचय

'चुभता हुआ घोंसला' एक ऐसे परिवार की कहानी है, जिसमें बाप-बेटे के बीच की दूरियाँ स्थितियों ने बहुत बढ़ा दी है। आपसी संवादों के अभाव में सौहार्द समाप्त होता जा रहा है। एक खुशहाल जिन्दगी के लिए परिवारजनों पर विश्वास होना बेहद जरुरी है। विश्वास के अभाव में नई पीढी और पुरानी पीढी के बीच का अंतर बढ़ रहा है।

दामोदर खडसे की कहानियों में घर-परिवार के लोग हैं। समाज है, देश-काल है। समकालीन भारत का परिवेश है। इनके पात्र ऐसे हैं, जो हमसे खुद ही बोलने-बतियाने लगते हैं। किसी लेखक के लिए यह गर्व करने की बात होती है कि उसके पात्र अपना स्वतंत्र व्यक्तित्त्व हासिल कर लें।

1.3.4 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी की समीक्षा

प्रस्तुत कहानी बाप-बेटे के रिश्ते की कहानी है, जिसमें पिता रामेश्वर की नौकरी छुट चुकी है। इसकी वजह से बेटे दिनेश को भी अपनी पढाई बीच में छोडकर काम करना पड़ता है। प्रस्तुत कहानी का परिवेश नागपुर महानगर है।

दिनेश परिवार को सम्भालने के लिए सब्जी बेचने का काम करने लगता है। बरसात का मौसम उसे बहुत पसंद है; क्योंकि, बरसाती सुबह में उसकी सब्जी खूब बिकती है। बजाजनगर, जहां वह अक्सर अपनी ठेली लिये जाता है, अधिकांश लोग वहां ऑफिसवाले हैं। सुबह की बारिश देखकर सब चाय की चुस्कियां लेते रहते हैं और अखबार के पन्नों के विज्ञापन तक चाट जाते हैं। भीगने की जोखिम कोई नहीं उठाता। बस, यहीं उसकी बिक्री बढ़ जाती है और वह थोड़ा- बहुत भाव भी बढ़ा देता है, जिससे उसकी आमदनी बढ़ जाती है। दिनेश ने अपनी कर्मभूमि के लिए बजाजनगर का चुनाव बहुत सोच-समझकर किया था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि बजाजनगर उसके घर से काफी दूरी पर था, जिससे उसके पास-पड़ोसवालों को यह पता चलने की सम्भावना बहुत कम रहती कि वह सब्जी बेचने जैसे कामों तक में उतर सकता है। नागपुर में रहने का यही तो एक फायदा था।

आज सुबह से ही बारिश बहुत तेज थी। वह हमेशा से कुछ पहले ही अपनी ठेली पर कई प्रकार की हरी सब्जियां और दूसरी सब्जियां रखकर बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था। सब्जी की थोक दुकान, फुले मार्केट से सब्जी लेकर बजाजनगर पहुंचने में उसे करीबन आधे घंटे से ऊपर लगता है। उसने अपनी पैंट की मोहरी घुटनों तक मोड़ ली है। स्लीपर, जो पैरों में थी, बहुत काट रही थी। उन्हें उतारकर उसने झोलीनुमा बोरी में रख दिया। पीठ तक का हिस्सा उसने ठेली की टप में घुसेड़ दिया। वह ठेली ढकेलते हुए आगे बढ़ने लगा कितना बुरा लगा था पिताजी को, जब उन्हें पता चला कि उनका दीनू सब्जी बेचने का काम करता है! पहली बार उन्हें सस्पेंड होने का घातक अहसास हुआ था। वैसे कई असहनीय झमेले उन्होंने झेले थे, पर यह बात वे न सह सके। बहुत डांटा था उन्होंने, ''मेरी इच्चत का तनिक भी खयाल नहीं! सारे लोग कहेंगे, बड़े बाबू का लड़का अब सब्जी बेचने का काम करता है!'' बाद में कमायी के तीन-चार रुपये घर की

बोझिलता को कम करने लगे। पिताजी की मजबूरी और क्रोध को वे रुपये धीरे-धीरे सहलाने लगे आज उसकी काफी बिक्री हुई और रकम भी अच्छी बनी। उसने देखा, ठेली में अब कोई खास सब्जी नहीं बची।

महीने के उसके इस रोड- व्यापार की जिंदगी में सबसे अधिक कमाई! पर शाम को शायद कुछ भी न मिले! वह सोच ही रहा था कि ऊपर से आवाज आयी, 'अरे... पालक है क्या?' किसी महिला ने पूछा पहले उसने अपनी ठेली में देखा। थोड़ा पालक बचा था। फिर ऊपर देखकर 'हां' कह दी। महिला ऊपर से नीचे आ रही थी। जिस बिल्डिंग के सामने वह खड़ा था, वहां डिस्पेंसरी थी. डॉ. बी. एस. भागवत, एम.बी.बी.एस. और पास ही उसी आकार की डॉ. श्रीमती सुशीला भागवत की तख्ती सटकर लगी थी। वह, जो सब्जी लेने आ रही है, डॉक्टर ही होगी। नीचे डिस्पेंसरी है और ऊपर शायद वे रहते हैं। उस महिला के जाने के बाद उसने सोचा, यदि पिताजी की नौकरी न छुटी होती तो वह भी इस वर्ष बी.एस-सी. के दूसरे वर्ष में होता, और ऐसी ही डिस्पेंसरी होती और ऐसी ही... बहुत देर तक उसने अपने - आपको सोचने की इजाजत नहीं दी।

ऐसी जीवनस्थितियों में जी रहे दिनेश का एक जिगरी दोस्त रामू है। वह भी सब्जी बेचने का काम करता है। और रोज दोनों मिलते है। आज भी रामू, दिनेश से मिलता है और बाहर खाना खाने की जिद करता है। वह कहता है, ''यार, इतनी बरसात में भीगकर कमाओ! घर जाते ही दिमाग की किरकिरी हो जाती है। खाना खाने बैठो, थाली में दाल है तो चावल नहीं सब्जी में ठीक से तेल नहीं। बस, मुंह लटकाकर थाली पर झुके रहो। कैसे भी खाओ और थोड़ी देर में वापस जुत जाओ...'' रामू कह रहा था और दिनेश सुन रहा था। पर उसे लगा कि वह उसकी ही बात बयान कर रहा है। दिनेश रामू के जीवन-दर्शन से प्रभावित होता है और उसके साथ खाना खाने के लिए तैयार होता है।

रामू की जम गयी। वह तो इसी इंतजार में था। दोनों स्टेशन के पास, 'शेरे -पंजाब' होटल में घुसे। दोनों की ठेली होटल के सामने खड़ी थी। साढ़े - बारह बजे के करीब दोनों बाहर आये। पैसे दिनेश ने ही दिए थे। बाहर आते ही हिसाब हो गया। रामू हिसाब के बारे में बड़ा साफ था। हिसाब होते ही उसने पांच रूपये अस्सी पैसे दिनेश को दिए।

रामू के पास दस का नोट देखकर दिनेश बोला, ''तू ऐसा कर, यह दस रुपये का नोट मुझे दे दे! मैं तुझे चार रुपये बीस पैसे लौटा देता हूं हिसाब बराबर।'' रामू दस रूपये का नोट पिताजी को देना चाहता था। रामू ने दस का नोट दिनेश को दे दिया और बाकी पैसे वापस ले लिये। इसके बाद रामू फिर से श्याम में मिलने की बात करता है। चहककर कहता है, ''मौसम बड़ा मजेदार रहेगा आज शाम को। आज जहां मटन खाया था न, वहां केबिन में बीयर और शराब भी मिलती है। चलेगा शाम को? आज तो भाई अपना मन बहक रहा है और लगाम अपने पास है नहीं। कोई साथ हो तो मजा डबल, नहीं तो अकेले राम!'' लेकिन दिनेश उसे साफ़ मना कर देता है। ''बेटा, अभी तो एक -दो बार चखी ही है... पीना शुरू कर दे, उसके बगैर मजा नहीं आयेगा; और आज तो उसकी अगली गली का भी प्रोग्राम है।'' ऐसा कहकर रामू ने अपनी

एक आंख मारकर शरारतपूर्ण इशारा किया और आंखें गड़ाकर दिनेश के चेहरे की प्रतिक्रिया पढ़ने में लगा। लेकिन दिनेश नहीं माना।

इसके बाद वह दोपहर से इधर-उधर भटकता रहा। पार्क में, चौक की रेलिंग पर सिनेमा के पोस्टर्स आदि देखता- सोचता वह भटकता रहा। रात हो चली थी घर जाना जरूरी था, पर वह घर जाना नहीं चाहता था। उसे घर खाने को दौड़ता था। पिताजी अब चिड़चिड़े हो गये थे। घर की हालत निरंतर गिरती जा रही थी। उसकी ठेले पर सब्जी बेचने की बात पिताजी को पता चलती है, तो वे उसपर हाथ उठाते है। सौतेली माँ बीच में पडकर कहती है, ''यह कोई मारने की उम्र है! सब- कुछ कैसे बिगड़ता जा रहा है! क्या होगा अब इस घर का!'' दीनू की मां की बातें सुनते ही रामेश्वर के हाथ रुक गये थे। मुंह भी बंद हो गया था। वे भी शायद चाहते ही थे कि ऐसी ही कोई बात हो, जिससे गुस्से में दरार पड़े और वे उसमें से बाहर भाग निकलें थे। क्योंकि हाथ गुस्से में उठ गया था। और प्रतिष्ठा का प्रश्न जबरन गुस्सा बनाये रखना चाहता था। इन्हीं सब बातों को याद करते हुए वह घर की ओर निकलता है।

रास्ते में ही तेज बारीश शुरू होती है, दिनेश भीगता हुआ घर के दरवाजे तक पहुंचता है। दरवाजे की सांकल बजाने ही वाला था कि, उसके हाथ रुक गए। अंदर माँ-पिता की बातें हो रही थी। और बाहर दिनेश चुपचाप खड़ा सुन रहा था। रामेश्वर रुक-रूककर बोल रहे थे, ''दीनू को अब पंख उन आये हैं, उसकी चिंता कम किया करो, अपनी सोचो। इतनी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। जहां उसे गरम भोजन मिलेगा वहां कर लेगा वह।'' कहते-कहते वे रुक गए। ''आज ही मैंने उसे होटल से निकलते हुए देखा, पान-वान चबाकर साहबजादे सिगरेट से अपने - आपको खूब गरमाते हुए चल रहे थे। उसके साथ एक लड़का भी था। सही कह रहा हूं मैंने अपनी आंखों से देखा है। थोड़ा कमाता है, बहुत उड़ाता है। आजकल के लड़के हैं, कौन किसकी चिंता करता है! तुम हो, जो मुफ्त में अपना जी ठंडा कर रही हो। बस, बचे-खुचे चिल्लर पैसे वह हमारी मजबूरी के माथे मारकर मजा करता है। उसके लिए कोई चिंता करने की जरुरत नहीं।''

दिनेश को यह सब सुनने के बाद लगा कि यह अधमरा मवेशी है, जिस पर चील-गिद्ध हमले कर रहे हैं। उसके शरीर से जिंदा लोथड़े नोच रहे हैं और वह कुछ नहीं कर पा रहा है। दिनेश के नथुने गुस्से से फूल रहे थे। उसकी एक मुट्ठी दूसरी हथेली पर ठोंक रही थी। भीतर-बाहर अंधेरा-ही-अंधेरा था। ऐसी गहरी बारिश में उसे फिर रामू याद आ गया। और उसके पैर रामू को ढूंढने निकल पड़े।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में घर-परिवार के बिखरते सम्बन्धों की चर्चा हुई है। संवादों के अभाव में नई पीढी और पुरानी पीढी के बीच का अंतर बढ़ रहा है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. दामोदर खडसे का जन्म ....ई. में हुआ।

   अ) सन् 1850 ब) सन् 1971 क) सन् 1948 ड) सन् 1961

2. दामोदर खडसे को ....रचना के लिए साहित्य अकादमी प्राप्त है।

अ) अब वहाँ घोंसले है ब) सन्नाटे में रोशनी क) बारोमास ड) तुम लिखो कविता

3. दिनेश अपना ठेला अक्सर...........इलाके में लेकर जाता है।

अ) बजाज नगर ब) शिवाजी नगर क) अहमदनगर ड) प्रतिभा नगर

4. दिनेश के पिता का नाम..........है।

अ) लखन ब) सुनील क) रामेश्वर ड) रामू

5. दिनेश के दोस्त का नाम..........है।

अ) लखन ब) सुनील क) रामेश्वर ड) रामू

6. पहली बार दिनेश के आधे दिन की कमाई...........रूपये थी

अ) सोलह ब) पांच क) सात ड) आठ

7. दिनेश अपने दोस्त के साथ ....होटल में खाना खाने गया था।

अ) शेरे-पंजाब ब) खाना-पीना क) परख ड) ढाबा-ए-पंजाब

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

ठेला- माल ढोने की गाडी(ट्राली), जी ठंडा होना - संतुष्ट होना, चुस्की- घूंट, कर्मभूमि- कम करने की जगह

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- क, 2- ब, 3- अ, 4- क, 5- ड, 6- अ, 7- अ,

1.7 सारांश

1. दामोदर खड़से की कहानियां जटिलता से मुक्त ऐसी कहानियां हैं, जिनका शिल्प सहज है और भाषा सरल, जिसके जरिये वे छोटी-छोटी कहानियों से बड़ी-बड़ी बातें कह जाते हैं।

2. दामोदर खड़से की कहानियां पढ़कर लगता है कि कथा लेखन में जैसी सिद्धि इन्होंने हासिल की, कम ही कथाकार कर पाते हैं। इनकी कहानियां पढ़ते हुए लगता है कि इनके जैसा रचनाकर्मी अपने समाज, परिवेश और जीवन से उदासीन नहीं है। वह स्थितियों का विश्लेषण कर उन वजहों की खोज करता है, जिनके कारण समाज में विषमताएं बढ़ रही हैं।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1. ''आजकल के लड़के हैं, कौन किसकी चिंता करता है! तुम हो, जो मुफ्त में अपना जी ठंडा कर रही हो। बस, बचे-खुचे चिल्लर पैसे वह हमारी मजबूरी के माथे मारकर मजा करता है। उसके लिए कोई चिंता करने की जरूरत नहीं।''
2. ''देखो, इसे पैसे बिलकुल मत देना। रामेश्वर की जब से नौकरी फूटी है, उसका यह बड़ा लड़का एकदम आवारा हो गया है। बाप के नाम पर पैसे मांगता फिरता है।''
3. ''मेरी इच्चत का तनिक भी खयाल नहीं! सारे लोग कहेंगे, बड़े बाबू का लड़का अब सब्जी बेचने का काम करता है! ।''

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'चुभता हुआ घोंसला' कहानी के माध्यम से लेखक क्या सन्देश देना चाहते है?
2. इस कहानी का शीर्षक 'चुभता हुआ घोंसला' क्यों रखा गया है?

1.9 क्षेत्रीय कार्य

दामोदर खडसे द्वारा लिखित अन्य कहानियों को पढ़िए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

हिन्दी में लिखित विविध विधाओं के प्रथम साहित्यकारों की सूची तैयार कीजिए।

❑❑❑